04 - शांति की नई इबारत और पुर्नवास का संकल्प

05 - 'काका' की बादशाहत के गिरने की वो दास्तां

A Daily News Magazine
इंदौर
मंगलवार, 30 दिसंबर, 2025

06 - एनएचएआई ने कलेक्टर को पत्र लिखकर मांगा सहयोग, सड़क...

07 - विधायक डॉ चौधरी ने गैरतगंज में 110.02 लाख रू लागत से बनने वाले...

इंदौर एवं भोपाल से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 11 अंक 92, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

subahsaverenews@gmail.com
facebook.com/subahsaverenews
www.subahsavere.news
twitter.com/subahsaverenews

शरद की सुबह

कितना बहुत है
परंतु अतिरिक्त एक भी नहीं
एक पेड़ में कितनी सारी पत्तियाँ
अतिरिक्त एक पत्ती नहीं
एक कोंपल नहीं अतिरिक्त
एक नक्षत्र अनगिनत होने के बाद।
अतिरिक्त नहीं है गंगा अकेली एक होने के बाद—
न उसका एक कलश गंगाजल
बाढ़ से भरी एक ब्रह्मपुत्र
न उसका एक अंजुलि जल
और इतना सारा एक आकाश
न उसकी एक छोटी अंतहीन झलक
कितनी कमी है
तुम ही नहीं हो केवल बंधु
सब ही
परंतु अतिरिक्त एक बंधु नहीं।

– विनोद कुमार शुक्ल

प्रसंगवश

बांग्लादेश: पहले तारिक रहमान को अपनी छवि सुधारनी होगी

दीप हलदर

बांग्लादेश की बेचैनी भरी सर्दियों में, बांग्लादेश नेशनलिस्ट पार्टी (बीएनपी) के नेता तारीक रहमान क्रिसमस की सुबह जैसी मिठास भरे वादों और अपनापन लेकर अपने लोगों के बीच लौटे। 'मेरे पास एक योजना है' उन्होंने 25 दिसंबर को ढाका के पूर्वांचल में 300 फीट रोड पर उनका स्वागत करने आए जोशीले समर्थकों से कहा। बाहें फैलाए हुए उन्हें देखकर कई न्यूज़ पोर्टलों ने उनके भाषण की तुलना मार्टिन लूथर किंग जूनियर के मशहूर भाषण 'आई हैव ए ड्रीम' से कर दी।

बीएनपी के कार्यकारी अध्यक्ष और देश की सबसे बड़ी राजनीतिक पार्टी के नेता, तारिक रहमान 17 साल के ब्रिटेन निर्वासन के बाद स्वदेश लौटे हैं। शेख हसीना की आवामी लीग की राजनीतिक गतिविधियों पर प्रतिबंध के चलते फिलहाल बीएनपी प्रमुख भूमिका में है।

उनकी वापसी पर हज़ारों समर्थक और पार्टी कार्यकर्ता ढाका की सड़कों पर उमड़ पड़े। तारिक रहमान ने अपना भाषण 'प्रिय बांग्लादेश' शब्दों से शुरू किया। उन्होंने समावेशी बांग्लादेश की बात की, अर्थव्यवस्था सुधारने की ज़रूरत बताई और देश में शांति, व्यवस्था और स्थिरता लाने का वादा किया, जो इस समय क़ानूनहीनता और सांप्रदायिक हिंसा की चपेट में है।

तारिक रहमान का भाषण बांग्लादेश के कई वर्गों में तुरंत लोकप्रिय हो गया। ढाका विश्वविद्यालय के राजनीति विज्ञान के प्रोफेसर सब्बीर अहमद ने इसे 'प्रेरणादायक और उम्मीद जगाने वाला' बताया, लेकिन इससे पहले कि हम तारिक रहमान को बांग्लादेश की टूटी-बिखरी राजनीति का अगला बड़ा चेहरा मान लें, ज़रूरी है कि 60-वर्षीय यह नेता पहले अपनी पार्टी को संभाले। साथ ही, बांग्लादेश की राजनीति में अपने ही अतीत की लंबी और विवादित छाया से खुद को अलग भी करे।

तारिक रहमान की बीएनपी में सब कुछ ठीक नहीं है। इस साल अक्टूबर में बांग्लादेशी प्रेस ने रिपोर्ट किया था कि पार्टी का शीर्ष नेतृत्व देश भर में 'बेलगाम' नेताओं और कार्यकर्ताओं के खिलाफ लगे कई आरोपों से निपट रहा है।

आज बीएनपी के सामने एक और बड़ी चुनौती उसके पूर्व सहयोगी बांग्लादेश जमात-ए-इस्लामी का उभार है। जमात और बीएनपी ने 2001 में मिलकर सरकार बनाई थी और शेख हसीना की आवामी लीग के सत्ता में रहने के दौरान उसके खिलाफ भी साथ मिलकर चुनाव लड़े थे। इस बार फरवरी 2026 के चुनावों में बांग्लादेश की सबसे बड़ी इस्लामवादी राजनीतिक पार्टी और तारिक रहमान की पार्टी आमने-सामने हैं। हालांकि, जमात की राजनीतिक ताकत को बीएनपी के मुकाबले काफी कम माना जाता है और यह उम्मीद की जा रही थी कि अगला चुनाव बीएनपी ही जीतेगी, लेकिन विश्वविद्यालयों के अहम छात्रसंघ चुनावों में जमात की छात्र शाखा की चौंकाने वाली जीत और बीएनपी की हार ने ढाका के राजनीतिक विश्लेषकों के मन में वाजिब शंकाएं पैदा कर दी हैं।

बीएनपी के एक उपाध्यक्ष ने प्रेस को बताया कि राष्ट्रीय चुनाव से पहले पार्टी ने अपनी सभी इकाइयों और सहयोगी संगठनों में नई कमेटियों के गठन पर रोक लगाने का फैसला किया है, सिवाय उन इलाकों के जहां अभी कोई कमेटी मौजूद नहीं है। अब रहमान का मानना है कि पार्टी को पूरी तरह राष्ट्रीय चुनाव पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए और अपनी लोकप्रियता बनाए रखने के लिए देश भर में जनता से संपर्क मज़बूत करना चाहिए। देश के 40 प्रतिशत मतदाता युवा हैं, ऐसे में जमात और नेशनल सिटिज़न पार्टी (एनसीपी)- जिसका नेतृत्व जुलाई 2024 के आंदोलन में अहम भूमिका निभाने वाले छात्र कर रहे हैं - दोनों ही युवा उम्मीदवारों को प्राथमिकता दे रहे हैं। सूत्र के अनुसार इसके उलट बीएनपी में ज़मीनी स्तर पर असंतोष बढ़ रहा है, जहां टिकट उम्रदराज़ पार्टी नेताओं को दिए गए हैं। जो उम्मीदवार इस पीढ़ी से सीधे तौर पर जुड़े नहीं हैं या ग्राउंड पर सक्रिय नहीं हैं, उनके लिए युवा मतदाताओं को आकर्षित करना मुश्किल हो सकता है।

'ढाका के पत्रकार मारुफ हसन के अनुसार, तारिक लंबे समय तक लंदन से ही पार्टी चला रहे थे। लेकिन उनकी वापसी से पार्टी के नेताओं और कार्यकर्ताओं में नया उत्साह पैदा हुआ है, जो आने वाले चुनावों में एक बड़ा कारक साबित हो सकता है।'

हसीना के बांग्लादेश में तारिक रहमान को भगोड़ा घोषित किया गया था। उनके खिलाफ एक दर्जन से ज्यादा मामले थे, जिनमें भ्रष्टाचार और हत्या के प्रयास जैसे आरोप शामिल थे। 21 अगस्त 2004 को ढाका के बंगबंधु एवेन्यू पर अवामी लीग द्वारा आयोजित एक आतंकवाद विरोधी रैली में 13 ग्रेनेड फेंके गए थे। इस हमले में मौके पर ही 18 लोगों की मौत हो गई थी, जो बाद में बढ़कर 24 हो गई। 500 से ज्यादा लोग घायल हुए थे, जिनमें शेख हसीना भी शामिल थीं।

इस हमले के मामले में तारिक रहमान को आजीवन कारावास की सज़ा दी गई थी। उस समय उनकी मां खालिदा जिया बांग्लादेश की प्रधानमंत्री थीं। 4 सितंबर 2025 को, हसीना के बांग्लादेश छोड़ने के एक महीने बाद, बांग्लादेश के सुप्रीम कोर्ट ने 21 अगस्त ग्रेनेड हमला मामले में रहमान और सभी अन्य आरोपियों को बरी कर दिया।

इसके अलावा भी अन्य आरोप रहे हैं। भारत की रक्षा खुफिया एजेंसी के पूर्व उप महानिदेशक मेजर जनरल गगनजीत सिंह (सेवानिवृत्त) ने कहा था कि अप्रैल 2004 में बांग्लादेश के चटगांव में हथियारों की एक बड़ी खेप- 10 ट्रक हथियार, जब्त की गई थी। उनके अनुसार, यह खेप यूनाइटेड लिबरेशन फ्रंट ऑफ असम (उल्फा) और भारत के पूर्वोत्तर के अन्य उग्रवादी समूहों के लिए थी, ताकि क्षेत्र को अस्थिर किया जा सके। सिंह ने आरोप लगाया कि हथियारों की यह सप्लाई बीएनपी और जमात के गठबंधन के जरिए की गई थी। उन्होंने कहा कि उल्फा प्रमुख परेश बरुआ, जो 'साजिश का मास्टरमाइंड' था, बांग्लादेश की खुफिया एजेंसियों के करीबी संपर्क में था, जिनके तार उनके मुताबिक तारिक रहमान से जुड़े थे। उन पर 2001-06 के दौर के दौरान रिश्वतखोरी और वित्तीय अनियमितताओं को संरक्षण देने के भी आरोप लगे, जब उनकी मां खालिदा जिया बांग्लादेश की प्रधानमंत्री थीं। इन्हीं आरोपों के चलते तारिक रहमान को बांग्लादेशी राजनीति का 'डार्क प्रिंस' कहा जाने लगा।

'बांग्लादेशी पत्रकार साहिदुल हसन खोकोन के अनुसार बीएनपी के कार्यकारी अध्यक्ष का राजनीतिक उभार उनकी मां खालिदा जिया के प्रधानमंत्री बनने के बाद शुरू हुआ। किसी संवैधानिक पद पर न रहते हुए भी उन्होंने पार्टी के भीतर अपना प्रभाव बढ़ाया और शासन पर अनौपचारिक नियंत्रण व्यवस्था तथा कारोबार और सरकारी ठेकों पर राजनीतिक सिंडिकेट के नियंत्रण के आरोप सामने आए।' अब देखना यह है कि क्या रहमान अपने पार्टी कैडर को सक्रिय कर और अपने अतीत से रिश्ते तोड़कर एक नए बांग्लादेश की तस्वीर गढ़ पाते हैं या नहीं।

(दि प्रिंट हिंदी में प्रकाशित लेख के संपादित अंश)

अपने ही आदेश पर सुप्रीम कोर्ट ने लगाई रोक

● नई समिति का होगा गठन, 21 जनवरी को होगी अगली सुनवाई

नई दिल्ली (एजेंसी)। अरावली पर्वत श्रृंखला की परिभाषा तय करने वाले आदेश पर सुप्रीम कोर्ट ने रोक लगा दिया है। इस मामले में अगली सुनवाई 21 जनवरी को होगी। सुप्रीम कोर्ट ने कहा है कि 20 नवंबर को सुनाया गया फैसला अगली सुनवाई तक लागू नहीं होगा। कोर्ट ने केंद्र और राज्य सरकारों को नोटिस जारी करते हुए जवाब मांगा है। सीजेआई सूर्यकांत की अध्यक्षता वाली तीन जजों की बेंच मामले की सुनवाई कर रही थी। सीजेआई ने कहा कि अरावली पहाड़ियों के अध्ययन और सर्वे के लिए एक नई समिति बनाई जाएगी। सीजेआई ने कहा कि इस पर पुनः विचार किया जाना है कि क्या 100 मीटर से ऊंची पहाड़ियों को ही अरावली का हिस्सा मानने से अवैध खनन तो नहीं शुरू हो जाएगा। कोर्ट ने कहा कि उस इलाके की पहचान करने के लिए परिभाषा तय करनी है जो कि अरावली का हिस्सा नहीं हैं। बता दें कि 20 नवंबर को सुप्रीम कोर्ट ने अरावली पहाड़ियों और पर्वतमालाओं की एक जैसी परिभाषा को स्वीकार करते हुए मुहर लगा दी थी। कोर्ट ने दिल्ली, हरियाणा, राजस्थान और गुजरात तक फैली इस पर्वत श्रृंखला में विशेषज्ञों की रिपोर्ट आने तक खनन पट्टों पर रोक लगा दी थी। अरावली को लेकर सबसे बड़ा विवाद इसकी भौगोलिक सीमा और परिभाषा को लेकर है। पहाड़ियों की स्पष्ट परिभाषा न होने के कारण कई बार निर्माण कार्यों और खनन को लेकर नियमों का उल्लंघन होता है। इससे पहले, न्यायालय ने अरावली में खनन पर पूर्ण प्रतिबंध लगाने के खिलाफ निर्णय लिया था। न्यायालय का मानना था कि इस तरह का निषेध अवैध खनन गतिविधियों को जन्म दे सकता है। अदालत ने पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय की एक समिति की सिफारिशों को स्वीकार किया था। समिति के अनुसार, ''अरावली पहाड़ी'' को उन चिह्नित अरावली जिलों में मौजूद किसी भी भू-आकृति के रूप में परिभाषित किया जाएगा, जिसकी ऊंचाई स्थानीय निचले बिंदु से 100 मीटर या उससे अधिक हो। वहीं, ''अरावली पर्वतमाला'' एक-दूसरे से 500 मीटर के भीतर दो या अधिक ऐसी पहाड़ियों का समूह होगा।

आरएसएस का लक्ष्य हिंदू समाज को एकजुट करना : भागवत

हैदराबाद (एजेंसी)। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रमुख मोहन भागवत ने कहा है कि भारत को एक बार फिर 'विश्वगुरु' बनने की दिशा में आगे बढ़ना चाहिए। उन्होंने कहा कि यह कोई बड़ी महत्वाकांक्षा नहीं है, बल्कि पूरी दुनिया की जरूरत है। हैदराबाद में एक कार्यक्रम को संबोधित करते हुए मोहन भागवत ने कहा कि अब सनातन धर्म को फिर से जिंदा करने का समय आ गया है। उन्होंने बताया कि करीब 100 साल पहले योगी अरविंद ने कहा था कि सनातन धर्म को फिर से जिंदा करना भगवान की मर्जी है और हिंदू राष्ट्र का उदय सनातन धर्म को फिर से जिंदा करने के लिए है। भागवत ने कहा कि भारत में संघ और विदेशों में हिंदू स्वयंसेवक संघ एक जैसा काम कर रहे हैं और दोनों का लक्ष्य हिंदू समाज को एकजुट करना है। उन्होंने कहा कि भारत, हिंदू राष्ट्र, सनातन धर्म और हिंदुत्व एक ही विचारधारा के अलग-अलग रूप हैं। यह प्रक्रिया पहले ही शुरू हो चुकी है और अब इसे लगातार आगे बढ़ाने की जरूरत है। 'विश्वगुरु' बनने के लिए लगातार मेहनत करनी होगी। यह काम अपने आप नहीं होता। संघ भी इसी दिशा में काम कर रहा है और अलग-अलग तरीकों से समाज में सकारात्मक बदलाव लाने की कोशिश कर रहा है। संघ लोगों के पर्सनैलिटी डेवलपमेंट मजबूत बनाने पर काम करता है और उन्हें समाज के अलग-अलग क्षेत्रों में सेवा के लिए भेजता है। आज संघ के स्वयंसेवकों के काम की हर जगह सराहना होती है और समाज उन पर भरोसा करता है। सोशल मीडिया और आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस जैसी तकनीकें आगे बढ़ेंगी, लेकिन इंसान को इनका मालिक बने रहना चाहिए। टेक्नोलॉजी इंसान पर हावी नहीं होनी चाहिए। इसका इस्तेमाल मानवता और दुनिया की भलाई के लिए होना चाहिए। इंसानी समझ टेक्नोलॉजी के इस्तेमाल को दुनिया की भलाई की तरफ ले जाएगी। यह शैतानी टेंडेंसी की तरफ नहीं जाएगी। यह दैवीय टेंडेंसी की तरफ जाएगी। यह कैसे होगा। हम यह कैसे करेंगे। हमें अपने कामों से यह दिखाना होगा। हमें इसे जीकर दिखाना होगा।

सरकार, प्रशासन और समाज मिलकर बनाएंगे सिंहस्थ को भव्य, दिव्य और ऐतिहासिक आयोजन

उज्जैन आने वाले श्रद्धालु सिर्फ मेहमान नहीं, महाकाल के अतिथि हैं, उनके सत्कार में संवेदना भी हो: मुख्यमंत्री

भोपाल। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि बाबा महाकाल के दर्शन के लिए उज्जैन आने वाले सभी श्रद्धालुओं का स्वागत है, अभिनंदन है। बीते तीन-चार दिनों के अंदर ही 5 लाख से अधिक श्रद्धालुओं ने बाबा महाकाल के दर्शन किए। उज्जैन आने वाले सभी श्रद्धालु सिर्फ हमारे मेहमान नहीं, स्वयं बाबा महाकाल द्वारा आमंत्रित अतिथि हैं। महाकाल ने उन्हें दर्शन देने के लिए बुलाया है। इसलिए सभी श्रद्धालुओं के सत्कार से जुड़ी हर व्यवस्था में संवेदना और आत्मीयता भी होनी चाहिए। मुख्यमंत्री ने कहा कि बाबा महाकाल की कृपा से ही उज्जैन नगरी सिर्फ भारत नहीं, सम्पूर्ण विश्व की आध्यात्मिक चेतना का केंद्र बनी हुई है। उज्जैन के नागरिकों का सहयोग ही बाबा महाकाल की सच्ची सेवा है। सरकार, प्रशासन और समाज मिलकर सिंहस्थ-2028 को सबसे भव्य, दिव्य और अनुशासित के साथ एक सुरक्षित, सुव्यवस्थित और ऐतिहासिक आयोजन बनाएंगे।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव सोमवार को उज्जैन के नानाखेड़ा स्टेडियम में विभिन्न विकास कार्यों के लोकार्पण एवं भूमिपूजन समारोह को संबोधित कर रहे थे। मुख्यमंत्री ने यहां लगभग 129 करोड़ रुपए की लागत के 12 विकास कार्यों का लोकार्पण और भूमिपूजन किया। मुख्यमंत्री ने उज्जैन में युवाओं को केंद्र में रखकर तैयार की गई तीन महत्वपूर्ण पहलों का एक साथ लोकार्पण एवं शुभारंभ किया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने प्रोजेक्ट स्वाध्याय का शुभारंभ किया। इस प्रोजेक्ट के जरिए विद्यार्थियों को कम उम्र से ही कोडिंग और डिजिटल सोच से जोड़ा जा रहा है। मुख्यमंत्री ने UtkarshUjjain.com वेब पोर्टल का भी शुभारंभ किया। यह पोर्टल युवाओं के लिए सीखने, मार्गदर्शन और अवसरों का एकीकृत डिजिटल प्लेटफॉर्म बनेगा। साथ ही कौशल सेतु इंडस्ट्री-लीड स्किल डेवलपमेंट प्रोग्राम का भी आगाज किया। कौशल सेतु शिक्षा और उद्योग के बीच की दूरी को पाटते हुए युवाओं को वास्तविक इंडस्ट्री की जरूरतों के अनुरूप तैयार करेगा। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि यह तीनों पहले उज्जैन के युवाओं को केवल डिग्री तक ही सीमित नहीं रखेंगी, बल्कि उन्हें जॉब-रेडी, स्टार्टअप-रेडी और फ्यूचर-रेडी बनाने का आधार तैयार करेंगी।

मोदी ने दिए बिहार बीजेपी चीफ सरावगी को टिप्स

गिफ्ट में मिला 'पुनौरा धाम' की तस्वीर वाला मोमेंटो

पटना (एजेंसी)। बिहार भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) की जिम्मेदारी संभालने के बाद संजय सरावगी ने दिल्ली प्रवास के दौरान सोमवार को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से शिष्टाचार मुलाकात कर उनका आशीर्वाद लिया। इस दौरान दोनों के बीच बिहार के विकास को लेकर सार्थक चर्चा हुई। बिहार भाजपा अध्यक्ष संजय सरावगी ने प्रधानमंत्री मोदी को उपहार स्वरूप मां जानकी की जन्मस्थली पुनौरा धाम की तस्वीर वाला मोमेंटो और मधुबनी पेंटिंग बनी शॉल भेंट की। विशेष धातु से बने इस मोमेंटो में भगवान राम, लक्ष्मण और माता जानकी की तस्वीर सुंदर तरीके से उकेरी गई है। इस मुलाकात के दौरान दोनों नेताओं के बीच बिहार के विकास को लेकर लंबी बातचीत हुई। इस कड़ी में पीएम मोदी ने बिहार की विशिष्ट पहचान मखाना को लेकर भी चर्चा की। प्रधानमंत्री मोदी ने मखाना उत्पादन से जुड़े किसानों की स्थिति, उनके हित, रोजगार की संभावनाओं और मूल्य संवर्धन पर गहन विमर्श किया तथा मखाना किसानों के कल्याण के लिए केंद्र सरकार की प्रतिबद्धता को दोहराया। इसके अलावा, मिथिला और बिहार के सर्वांगीण विकास को लेकर भी संवाद किया और मार्गदर्शन दिया। इस दौरान पीएम मोदी ने प्रदेश में कल्याणकारी विषयों और मिथिला पेंटिंग को लेकर भी विस्तृत बातचीत की। प्रधानमंत्री मोदी ने प्रदेश अध्यक्ष सरावगी से बिहार में संगठनात्मक मजबूती तथा बिहार के समग्र विकास से जुड़े महत्वपूर्ण विषयों पर संवाद किया और मार्गदर्शन दिया। इस मुलाकात को लेकर सरावगी ने कहा, पीएम मोदी से भेंट के दौरान संगठनात्मक विषयों पर विस्तृत चर्चा हुई, जिसमें प्रधानमंत्री ने प्रदेश में संगठन को और अधिक सशक्त, सक्रिय एवं जनोन्मुखी बनाने हेतु मार्गदर्शन प्रदान किया। यह भेंट बिहार के समग्र विकास, किसानों के सशक्तिकरण और संगठन की मजबूती की दिशा में एक महत्वपूर्ण एवं प्रेरणादायक रही। इससे पहले बिहार भाजपा अध्यक्ष संजय सरावगी भाजपा अध्यक्ष जेपी नड्डा,अमित शाह से भी मुलाकात कर चुके हैं।

भोपाल का तापमान

अधिकतम 25 °c | न्यूनतम 22°c

सुबह सवेरे

इंदौर ■ मंगलवार, 30 दिसंबर 2025

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

न्यू इयर पर प्रदेश भर में पुलिस एक्स्ट्रा अलर्ट

डीजीपी के गश्त और चेकिंग बढ़ाने के निर्देश, फील्ड अफसर सड़कों पर सुरक्षा व्यवस्था को लीड करें

भोपाल (नप्र)। नए साल के मद्देनजर प्रदेश में कानून-व्यवस्था और सांप्रदायिक सौहार्द्र पर पुलिस को एक्स्ट्रा अलर्ट रहना होगा। पुलिस महानिदेशक कैलाश मकवाणा ने सभी पुलिस अधीक्षकों को पूरे प्रदेश में आज रात से 1 जनवरी की रात तक सघन चेकिंग और गश्त बढ़ाने के निर्देश दिए हैं।

डीजीपी ने पहलगाम घटना तथा ऑपरेशन 'सिंदूर' के मद्देनजर मॉल, बाजार, होटल, रिसॉर्ट, पिकनिक स्पॉट (नदी, बांध, झील) और मंदिरों में भारी भीड़ की संभावना को देखते हुए अतिरिक्त बल तैनात करने के लिए कहा है।

पुलिस महानिदेशक कैलाश मकवाणा ने सभी अधिकारियों को निर्देश दिए हैं कि सभी रैंक के फील्ड अधिकारी स्वयं सड़कों पर उतरकर सुरक्षा व्यवस्था को लीड करेंगे। प्रमुख चौराहों और संवेदनशील स्थानों पर पुलिस बल की अधिक तैनाती रहनी चाहिए।

शराब पीकर वाहन चलाने ,तेज रफ्तार ड्राइविंग, छेड़खानी और महिलाओं के साथ होने वाली अभद्रता को रोकने के लिए पुलिस द्वारा जीरो टॉलरेंस की नीति अपनाई जाएगी।

सूचीबद्ध गुंडा-बदमाशों और अशांति फैलाने वाले तत्वों की गतिविधियों पर कड़ी निगरानी रखी जाए। किसी भी अप्रिय स्थिति

उत्पन्न होने से पहले ही नियंत्रित करने की रणनीति पर काम किया जाए। उन्होंने वीवीआईपी, वीआईपी सुरक्षा सहित सभी मोर्चों पर सुरक्षा व्यवस्था के प्रति पूर्ण सतर्कता बरतने के निर्देश दिए हैं।

डीजीपी मकवाणा ने जिलों में होने वाली किसी भी महत्वपूर्ण घटना की जानकारी तत्काल पुलिस मुख्यालय को साझा करने के निर्देश दिए। साथ ही विशेष शाखा द्वारा जारी निर्देशों का कड़ाई से पालन करने के निर्देश भी दिए ।

गत वर्ष पुलिस अधिकारियों एवं मैदानी बल की सक्रियता से असामाजिक एवं उपद्रवी तत्वों पर अभूतपूर्व नियंत्रण रहा था। इसी क्रम को जारी रखते हुए डीजीपी ने तय किया है कि इस वर्ष भी प्रदेश में कानून-व्यवस्था, आमजन की सुरक्षा और सांप्रदायिक सौहार्द्र बनाए रखने के लिए पुलिस पूर्ण मुस्तैदी के साथ तैनात रहेगी।

मध्यप्रदेश पुलिस सभी नागरिकों से अपील करती है कि नववर्ष सुरक्षित एवं शांतिपूर्ण ढंग से मनाएं। भीड़भाड़ वाले स्थानों पर सतर्कता बनाए रखें, और जागरुक रहकर दूसरों को भी जागरुक करें। किसी भी संदिग्ध गतिविधि या अप्रिय घटना की सूचना तुरंत नजदीकी पुलिस थाने या डायल-112 पर दें।

मुख्य सचिव करेंगे कलेक्टर-कमिश्नर कॉन्फ्रेंस का रिव्यू

एफआईआर दर्ज करने में देरी और अस्पतालों का निरीक्षण क्यों नहीं हुआ...बताएंगे एसपी-कलेक्टर

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव की प्राथमिकताओं पर फोकस रही कलेक्टर-कमिश्नर कॉन्फ्रेंस में दिए गए निर्देशों की दूसरी समीक्षा मुख्य सचिव अनुराग जैन 31 दिसंबर को करेंगे। मुख्य सचिव जैन वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से कमिश्नर-कलेक्टर कॉन्फ्रेंस की कार्यवाही विवरण की समीक्षा करेंगे।

यह समीक्षा बैठक बुधवार सुबह 11 बजे से शुरू होगी, जिसमें पिछली बैठक में दिए गए निर्देशों पर हुए अमल की जानकारी भी ली जाएगी। मुख्य सचिव अनुराग जैन ने एक महीने पहले 7 और 8 अक्टूबर को हुई कलेक्टर-कमिश्नर कॉन्फ्रेंस की समीक्षा करते हुए निर्देश दिए थे कि थानों में आने वाले लोगों की एफआईआर दर्ज न होने की शिकायतें नहीं मिलनी चाहिए। कानून-व्यवस्था के मामलों में पुलिस अधीक्षकों की जिम्मेदारी तय की गई थी और यह भी कहा गया था कि हर महत्वपूर्ण जानकारी मीडिया तक पहुंचे।

डीजीपी मकवाना भी रहेंगे मौजूद- साथ ही जिलों में हेलमेट पहनना अनिवार्य करने के निर्देश दिए गए थे, ताकि सड़क दुर्घटनाओं में कमी लाई जा सके। इन निर्देशों पर कितना अमल हुआ है, इसकी जानकारी पुलिस अधीक्षक बुधवार को होने वाली बैठक में देंगे। बैठक में डीजीपी कैलाश मकवाना भी मौजूद रहेंगे।

मुख्य सचिव जैन ने कहा था कि सबसे ज्यादा सड़क हादसे दोपहिया वाहन चालकों के होते हैं और अधिकतर मौतें भी इसी वजह से होती हैं। इसलिए हेलमेट पहनने को लेकर अभियान चलाने से दुर्घटनाओं और मौतों की संख्या में कमी लाई जा सकती है।

जिला चिकित्सालय सहित अन्य शासकीय अस्पतालों का निरीक्षण कर रोगी कल्याण सुविधाओं के लिए क्या कदम उठाए गए। प्रदेश के प्रत्येक स्कूल में एक कक्षा को स्मार्ट क्लास बनाने के लिए क्या कार्रवाई की गई।

उन्नाव रेप केस

कुलदीप सेंगर को लगा 'सुप्रीम' झटका

● हाईकोर्ट के आदेश पर लगा दिया ब्रेक

नई दिल्ली (एजेंसी)। सीजेआई सूर्यकांत की अध्यक्षता वाली सुप्रीम कोर्ट की तीन जजों वाली बेंच ने उन्नाव रेप केस में दिल्ली हाई कोर्ट के फैसले पर रोक लगा दी है। सुप्रीम कोर्ट ने कुलदीप सेंगर को नोटिस भी जारी किया है। उन्नाव रेप केस में पूर्व विधायक कुलदीप सिंह सेंगर की आजीवन कारावास की सजा को दिल्ली हाई कोर्ट ने निलंबित कर दिया था और उन्हें जमानत पर रिहा करने का आदेश दे दिया था। सीजेआई ने कहा कि हाई कोर्ट के जिस जज ने फैसला सुनाया है वह बहुत अच्छे जज हैं। हालांकि गलती किसी से भी हो सकती है। पॉक्सो के तहत अगर कॉन्स्टेबल लोक सेवक हो सकता है तो विधायक को अलग क्यों रखा गया, यह चिंता का विषय है। बता दें कि सीबीआई ने हाई कोर्ट के फैसले को कानून के खिलाफ, गलत और समाज के लिए गंभीर खतरा बताते हुए सुप्रीम कोर्ट में याचिका फाइल की। सीबीआई ने अपनी याचिका में कहा था कि दिल्ली हाई कोर्ट ने सेंगर की सजा को सस्पेंड करके पॉक्सो ऐक्ट के लक्ष्य को ही नजरअंदाज कर दिया है। सुप्रीम कोर्ट में मामले की सुनवाई से पहले पीड़िती का तबीयत बिगड़ गई थी। इसके बाद उन्हें अस्पताल ले जाया गया था। हालांकि सुनवाई के दौरान सुप्रीम कोर्ट में पीड़िता भी मौजूद थी। एजेंसी का कहना है कि हाई कोर्ट यह समझ ही नहीं पाया कि सेंगर विधायक थे और वह जनता के विश्वास के पद पर थे। ऐसे में उनकी जिम्मेदारी आम नागरिक से कहीं ज्यादा बनती है। ऐसे में उनका दोषी पाया जाना भी बहुत बड़ी बात है। सीबीआई की ओर से तुषार मेहता पेश हुए।

घुसपैठियों के खिलाफ

देश भर में लागू होगा असम मॉडल

● अमित शाह बोले- असम जैसे अब पूरे देश से घुसपैठिए भगाएंगे ● स्वतंत्रता सेनानी गोपीनाथ ने किया था बड़ा काम

गुवाहाटी (एजेंसी)। असम के नौगांव में सोमवार को केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने बटाद्रवा पुनर्विकास परियोजना का उद्घाटन किया। कार्यक्रम में शाह ने कहा- हिमंत बिस्वा सरमा ने बांग्लादेशी घुसपैठियों से एक लाख जमीन बीघा जमीन मुक्त करवा दी है। इसी तरह पूरे देश से हम घुसपैठियों को भगाएंगे। उन्होंने आगे कहा कि आज मैं गोपीनाथ बोरदोलोई जी को याद करना चाहता हूं। अगर वे नहीं होते, तो आज असम और पूरा नॉर्थ ईस्ट भारत का हिस्सा नहीं होता। शाह ने कहा कि गोपीनाथ ने ही जवाहरलाल नेहरू को असम को भारत में बनाए रखने के लिए मजबूर किया था। केंद्र सरकार ने उग्रवादी संगठनों के साथ शांति समझौते किए हैं, जिनमें से 92 फीसदी शर्तें पूरी की जा चुकी हैं। असम में शांति और विकास की स्थिति मजबूत हुई है। बटाद्रवा थान को नव-वैष्णव धर्म का केंद्र है।

यह जगह असम की सांस्कृतिक एकता और आध्यात्मिक विरासत का प्रतीक है। परियोजना से पर्यटन और संस्कृति को बढ़ावा मिलेगा। असम में केंद्र सरकार के प्रयासों से शांति, विकास और सांस्कृतिक संरक्षण हो रहा है। गुवाहाटी में नई सुरक्षा व्यवस्था से शहर सुरक्षित बनेगा। एक बार

असम को भारत में बनाए रखने के लिए नेहरू को किया था मजबूर

फिर असम की जनता भाजपा को अपना समर्थन दे। हम पूरे असम को घुसपैठियों से मुक्त करेंगे। जो लोग घुसपैठियों को वोट बैंक मानते हैं, वे ऐसा कभी नहीं कर सकते। असम ने डॉ. मनमोहन सिंह जी को राज्यसभा भेजा, लेकिन वे केवल 7 बार ही असम आए, जिनमें से 2 बार तो केवल राज्यसभा का नामांकन पत्र दाखिल करने के लिए आए थे। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने बटाद्रवा थान में 227 करोड़ रुपए की लागत से पुनर्विकसित श्रीमंत शंकरदेव आविर्भाव क्षेत्र का उद्घाटन किया। यह स्थान असम के महान वैष्णव संत श्रीमंत शंकरदेव की जन्मभूमि है। अमित शाह का पारंपरिक सत्रिया नृत्य और संगीत के साथ स्वागत किया गया। उन्होंने गुरु आसन (पूजनीय गद्दी) वाले मुख्य भवन में जाकर दर्शन भी किए। श्रीमंत शंकरदेव आविर्भाव क्षेत्र को 2021-22 के राज्य बजट में पुनर्विकास के लिए स्वीकृति दी गई थी। परियोजना का उद्देश्य शंकरदेव से जुड़े आदर्शों, जीवन-दर्शन और कलात्मक योगदान को नई पीढ़ी तक पहुंचाना है। मुख्यमंत्री हिमंत बिस्वा सरमा ने कहा- यह परियोजना श्रीमंत शंकरदेव की विरासत के सम्मान व असम के नामघर, सत्र और सांस्कृतिक धरोहर को संरक्षित करने की हमारी प्रतिबद्धता को और मजबूत करती है।

चिनाब पर हाईड्रोपॉवर प्रोजेक्ट-2 मंजूरी से पाक बौखलाया

● फैसले से बौखलाया पाकिस्तान, लगाई न्याय की गुहार

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत सरकार के पर्यावरण विभाग की एक समिति ने चिनाब नदी पर दुलहस्ती हाइड्रोपावर प्रोजेक्ट के दूसरे चरण पर काम करने की

मंजूरी दी है। इस प्रोजेक्ट को लेकर 27 तारीख को ही मंजूरी मिली है और उधर पाकिस्तान को इससे मिर्ची लग गई है। पाकिस्तान की सांसद और पूर्व मंत्री शेरी रहमान ने इस पर सवाल उठाए हैं और बौखलाहट में भारत पानी को हथियार बनाने का आरोप लगाया है। रहमान ने कहा कि पानी को हथियार बनाना गलत है और इसे स्वीकार नहीं किया जा सकता। एक्स पर शेरी रहमान ने लिखा, ऐसा करना सिंधु जल समझौते का उल्लंघन है। भारत सरकार ने दुलहस्ती हाइड्रोपावर प्रोजेक्ट स्टेज-2 को मंजूरी दी है। ऐसा करना गलत है। सिंधु जल समझौते के तहत कोई भी फैसला एकतरफा तौर पर नहीं लिया जा सकता। सिंधु जल समझौते के तहत पाकिस्तान का चिनाब, झेलम और सिंधु नदी के जल पर अधिकार है। वहीं भारत का अधिकार रावी, ब्यास और सतलुज पर है। इसके आगे वह लिखती हैं कि भारत ने अवैध तौर पर सिंधु जल समझौते को स्थगित किया है।

जमीन हड़पने वाले दबंगों

माफियाओं को न छोड़ें

● यूपी के अफसरों को सीएम योगी का सख्त आदेश

लखनऊ (एजेंसी)। सीएम योगी आदित्यनाथ ने सोमवार को अधिकारियों को आदेश दिया कि वे जमीन हड़पने वाले बलवानों और माफियाओं पर कड़ी कार्रवाई करें। गोरखपुर में जनता दर्शन कार्यक्रम के दौरान सोमवार को उन्होंने करीब डेढ़ सौ लोगों की शिकायतें सुनीं और अधिकारियों को उनके समाधान का निर्देश दिया। इस दौरान कुछ लोगों द्वारा जमीन कब्जाने की शिकायत पर मुख्यमंत्री ने कठोर कानूनी कार्रवाई के निर्देश दिए। उन्होंने कहा यदि कोई दबंग, माफिया किसी की जमीन जबरन कब्जा कर रहा हो तो उसके खिलाफ कठोर से कठोर कार्रवाई की जाए। गरीबों को उजाड़ने वाले कतई न बख्शे जाएं। जहां पैमाइश की जरूरत हो, वहां पैमाइश कराकर विवाद का निस्तारण कराया जाए। पारिवारिक विवाद

के मामलों में उन्होंने उभयपक्षों के साथ संवाद कर समाधान की राह निकालने के लिए निर्देशित किया। प्रचंड ठंड के बावजूद जनता दर्शन में भीड़ रही।

रुद्राभिषेक कर लोक मंगल की कामना की

मुख्यमंत्री और गोरक्षपीठाधीश्वर योगी आदित्यनाथ ने सोमवार सुबह रुद्राभिषेक कर देवाधिदेव महादेव से लोकमंगल की प्रार्थना की। हवन के साथ रुद्राभिषेक का अनुष्ठान पूर्ण कर उन्होंने सभी नागरिकों के सुख-समृद्धि की कामना की। वर्ष 2025 के अंतिम सोमवार की सुबह गोरखनाथ मंदिर के अपने आवास के प्रथम तल स्थित शक्तिपीठ में सीएम योगी ने भगवान भोलेनाथ को विल्वपत्र, दुर्वा, मदार पत्र, कमल पुष्प समेत अनेकानेक पूजन सामग्री अर्पित करने के बाद जल और दूध से रुद्राभिषेक किया। मठ के विद्वत आचार्यगण एवं पुरोहितगण ने शुक्ल यजुर्वेद संहिता के रुद्राष्टाध्यायी के महामंत्रों द्वारा रुद्राभिषेक किया।

राज्यों से मांगा गया स्वतंत्रता के बाद हुए विरोध प्रदर्शनों का रिकॉर्ड

● पुलिस अनुसंधान एवं विकास ब्यूरो ने देश के सभी राज्यों को लिखी चिट्ठी

नई दिल्ली (एजेंसी)। स्वार्थ के लिए किए जाने वाले जन आंदोलनों को रोकने के लिए राज्यों से स्वतंत्रता के बाद हुए विरोध प्रदर्शनों का विस्तृत रिकॉर्ड साझा करने को कहा गया। इसके लिए एक व्यापक

मानक परिचालन प्रक्रिया तैयार करने हेतु, पुलिस अनुसंधान एवं विकास ब्यूरो ने पहली बार सभी राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों के पुलिस प्रमुखों से भारत भर में स्वतंत्रता के बाद हुए विरोध प्रदर्शनों का रिकॉर्ड शेयर करने को कहा है। इसके तहत विशेष रूप से 1974 के बाद हुए प्रदर्शनों का विस्तृत रिकॉर्ड साझा करने का अनुरोध किया गया है। राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों से प्रत्येक आंदोलन के बारे में जो प्रमुख विवरण प्रस्तुत करने को कहा गया है, उनमें इसका कारण, विकास, आयोजक, संरचना, विचारधारा, किसी भी हिंसक घटना की के बारे में जानकारी शामिल है। **स्वतंत्रता के बाद हुए सभी विरोध प्रदर्शनों का अध्ययन-** राष्ट्रीय पुलिस मिशन (एनपीएम) के बीपीआर एंड डी विभाग द्वारा जारी ये निर्देश केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह द्वारा ब्यूरो को एसओपी तैयार करने का निर्देश देने के चार महीने बाद आए हैं। यह निर्देश स्वतंत्रता के बाद हुए सभी विरोध प्रदर्शनों, विशेष रूप से 1974 के बाद हुए विरोध प्रदर्शनों के अध्ययन के बाद जारी किए गए थे, जिसमें उनके कारणों, वित्तीय पहलुओं, अंतिम परिणामों और पर्दे के पीछे के किरदारों का विश्लेषण किया गया था। पिछले महीने सभी पुलिस महानिदेशकों को भेजे गए एक पत्र में,कहा,सभी राज्य से अनुरोध है कि सभी विरोध प्रदर्शनों का विवरण प्रदान करें।

● अमित शाह ने दिया था एसओपी तैयार करने का निर्देश- इससे पहले इंडियन एक्सप्रेस ने खबर दी थी कि गृहमंत्री अमित शाह ने बीपीआर एंड डी को एक एसओपी तैयार करने और उन विरोध प्रदर्शनों के कारणों, पैटर्न और परिणामों का विश्लेषण करने के लिए कहा है जिसमें पर्दे के पीछे के खिलाड़ी भी शामिल हैं। राष्ट्रीय सुरक्षा नीति आयोग (एनपीएम) को राष्ट्रीय सुरक्षा रणनीति सम्मेलन 2025 की सिफारिशों के अनुरूप एक दस्तावेज तैयार करने का निर्देश दिया गया है। इन सिफारिशों में कहा गया है कि बीपीआर एंड डी को अनुभवी और युवा टीमें गठित करनी चाहिए।

नए साल पर उत्तराखंड में बजरंग सेतु की सौगात

● 100 साल पुराने ऋषिकेश लक्ष्मण झूला पुल की लेगा जगह

ऋषिकेश (एजेंसी)। उत्तराखंड में नए साल की शुरुआत के साथ ही ऋषिकेश के लोगों और देश-विदेश से आने वाले तीर्थयात्रियों व पर्यटकों को बड़ी सौगात मिलने जा रही है। यह सेतु 1929 में बना ऐतिहासिक लक्ष्मण झूला की जगह लेगा। गंगा नदी पर निर्माणाधीन अत्याधुनिक बजरंग सेतु को जल्द ही आम जनता के लिए

खोलने की तैयारी अंतिम चरण में पहुंच गई है। लोक निर्माण विभाग के अनुसार, पुल का निर्माण कार्य 26 जनवरी तक पूरा करने का लक्ष्य रखा गया है। हालांकि किसी तकनीकी कारण से यदि मामूली देरी होती है, तो भी जनवरी के अंत या फरवरी के पहले सप्ताह तक बजरंग सेतु को जनता के लिए खोल दिया जाएगा। अधिकारियों ने बताया कि गंगा पर बन रहा यह आधुनिक सस्पेंशन ब्रिज अब अपने अंतिम चरण में है। विभाग को निर्देश दिए गए हैं कि तय समयसीमा के भीतर कार्य पूरा किया जाए।

अब भारत ने 'प्राणदान' देकर अफगानिस्तान से निभाई दोस्ती

● पाकिस्तानी ब्लैकमेल अब खत्म,तालिबानी कर रहे तारीफ

काबुल (एजेंसी)। पाकिस्तान के हवाई हमले और दवाओं को लेकर ब्लैकमेल किए जाने के बीच भारत और अफगानिस्तान में दोस्ती अब और मजबूत होती जा रही है। भारत ने तालिबान सरकार से किया गया अपना वादा पूरा किया है और अफगानिस्तान को अत्याधुनिक एंबुलेंस की एक खेप सौंप दी है। इससे पहले तालिबानी विदेश मंत्री अमीर खान मुत्ताकी की दिल्ली यात्रा के दौरान भारतीय विदेश मंत्री एस जयशंकर ने यह वादा किया था। जयशंकर ने उस समय कहा था कि भारत की ओर से 20 एंबुलेंस की खेप सद्भावना गिफ्ट है। उन्होंने यह भी कहा था कि भारत अफगानिस्तान के हॉस्पिटल्स के लिए एमआरआई और सीटी स्कैन मशीन मुहैया कराएगा। साथ ही बच्चों की वैक्सीन और कैंसर की दवाएं भी देगा। रिपोर्ट के मुताबिक एंबुलेंस देना भारत और अफगानिस्तान के बीच हेल्थकेयर कोऑपरेशन का हिस्सा है। भारत काबुल में बच्चों के अस्पताल को गरम रखने का सिस्टम बदलेगा।

खराब सर्विस रोड ने डायवर्शन प्लान रोका

इंदौर। वर्ष 2025 की विदाई बेला पर 31 दिसम्बर को खजराना मंदिर में भक्तों की भीड़ उमड़ेगी। इस दिन बुधवार होने से 3 से 4 लाख भक्त आने की संभावना है। भक्तों का आने का क्रम सुबह 6 बजे से शुरू हो जाएगा जो देर रात तक अनवरत चलेगा। भीड़ को नियंत्रित करने हर साल यातायात पुलिस डायवर्शन प्लान लागू करती है, ताकि भक्तों को आवाजाही में सुगमता रहे। डायवर्शन प्लान को लेकर रविवार को यातायात विभाग की बैठक होना थी, लेकिन अव्यवस्था के चलते बैठक नहीं हो सकी। पश्चिम क्षेत्र के सहायक पुलिस आयुक्त (ट्रैफिक) ने डायवर्शन प्लान के पहले फ्लाईओवर ब्रिज के नीचे सर्विस रोड का निरीक्षण किया। निरीक्षण में निगम के अपर आयुक्त, खजराना थाने के एसीपी, ठेकेदार, एजेंसी संचालक मौजूद थे। यातायात अधिकारी ने बताया कि सर्विस रोड पर गड्ढे होने से सामान्य दिनों में वाहन निकल पाना मुश्किल हो जाता है। ऐसे में जब 31 दिसम्बर और एक जनवरी को भक्तों की भीड़ उमड़ेगी तो खराब सर्विस रोड से निकल पाना मुश्किल हो जाएगा। निरीक्षण के बाद निगम अधिकारी ने आश्वस्त किया कि सर्विस रोड को व्यवस्थित कर लिया जाएगा। रोड व्यवस्थित होने के बाद ही डायवर्शन प्लान जारी करेंगे। वाहन चालकों को काली माता मंदिर से प्रवेश और गोयल नगर रोड से बाहर किया जाता है।

चोरों ने ओमेक्स सिटी में धावा बोला

इंदौर। पॉश कॉलोनी ओमेक्स सिटी में चोरों के हौसले बुलंद नजर आए। लसूडिया थाना क्षेत्र में दिनदहाड़े सूने मकान में चोरी की वारदात को अंजाम दिया गया। अज्ञात बदमाशों ने घर का ताला तोड़कर अंदर प्रवेश किया और अलमारी के लॉक तोड़कर कीमती सामान चोरी कर फरार हो गए। मकान मालकिन विजयलक्ष्मी जादौन ने बताया कि वे कुछ समय के लिए घर से बाहर गई थीं। लौटने पर मुख्य दरवाजा टूटा मिला और घर का सामान अस्त-व्यस्त पड़ा था। चोर घर से नकदी, कीमती सामान और यूनियन बैंक के लॉकर की चाबी भी ले गए। घटना की सूचना मिलते ही लसूड़िया पुलिस मौके पर पहुंची और जांच शुरू की। पुलिस को शक है कि चोरों ने पहले घर की रैकी की थी। आसपास लगे सीसीटीवी कैमरों की मदद से आरोपियों की तलाश की जा रही है। इस घटना के बाद कॉलोनी के रहवासियों में सुरक्षा को लेकर चिंता बढ़ गई है।

घरेलू विवाद में पत्नी को गले में चाकू मारा

इंदौर। घरेलू विवाद में पत्नी से चाकू छीनकर उसके गले पर वार कर दिया। घायल महिला का शोर सुनकर पड़ोसी जमा हो गए तो मौका देखकर आरोपी फरार हो गया। घटना भागीरथपुरा क्षेत्र की है। बाणगंगा थाने में घायल सरिता ने पति सोनू उर्फ जितेंद्र पिता हरिनाथ कुमायूं के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज कराते हुए बताया कि उसका पति अक्सर छोटी-छोटी और अनर्गल बातों को लेकर घर में क्लेश करता है और आए दिन लड़ाई-झगड़ा करता रहता है। शनिवार सुबह 7 बजे मैं सब्जी काट रही थी, तभी सोनू गालियां देने लगा। मैंने गाली देने से मना किया तो उसने पहले मुझे जमकर पीटा, बाद में चाकू छीनकर हमला कर दिया। पुलिस ने आरोपी के खिलाफ केस दर्ज कर लिया है।

बच्चा हाईटैंशन लाइन से झुलसा, हालत गंभीर

इंदौर। थ्रीफेज की हाईटेंशन लाइन पर चढ़कर पंतग निकालने के दौरान बच्चा बुरी तरह झुलस गया। उसकी हालत गंभीर बनी हुई है। मामला एरोड्रम थाना क्षेत्र के नगीन नगर में शाम चार बजे का है। 9 साल का बच्चा गोविंद पिता मनीष गौर निवासी नगीन नगर पतंग उड़ा रहा था। इसी दौरान पंतग हाइटेंशन लाइन में फंस गई। बच्चा पंतग निकालने बिजली के पोल पर चढ़ गया, तभी उसे जोरदार झटका लगा। करंट लगने से वह पोल पर ही चिपक गया। धमाके और पटाखों जैसी आवाज आने पर लोग मौके पर पहुंचे और काफी मशक्कत के बाद बच्चे को नीचे उतारा गया। उसके बाद उसे वाहन से सीधे एमवाय अस्पताल लेकर पहुंचे, जहां उसकी हालत गंभीर बनी हुई है। बच्चे के पिता प्राइवेट नौकरी करते हैं। धार रोड पर एक सप्ताह पहले गुड़िया नाम का 12 साल का बच्चा भी हाईटेंशन लाइन से झुलस गया था। उपचार के दौरान उसकी अस्पताल में मौत हो गई। छत्रीपुरा पुलिस ने मामले में मर्ग कायम किया था। उसके पिता लकड़ी मंडी में मजदूरी करते थे। परिवार मूल रूप से अलीराजपुर का रहने वाला था।

पत्नी की मौत, दहेज प्रताड़ना में पुजारी पर केस

इंदौर। एक साल पहले युवती की शादी हुई थी। शादी के बाद पति दहेज के लिए प्रताड़ित करता था। तंग आकर युवती तमन्ना यादव ने चूहा मार दवा खा ली थी। कुछ दिन बाद युवती की मौत हो गई थी। मरने से पहले युवती ने पति के खिलाफ बयान दिए थे। बयान के बाद पुलिस ने कालका माता मंदिर के पुजारी राहुल (युवती के पति) पर केस दर्ज कर लिया है। विजयनगर पुलिस के मुताबिक, तमन्ना की मौत 15 नवंबर को हुई थी। जांच में सामने आया कि तमन्ना द्वारा जहर खाने के बाद राहुल उसे उपचार के लिए लसूडिया क्षेत्र स्थित विवेक मेमोरियल अस्पताल लेकर पहुंचा था, जहां उसने तबीयत बिगड़ने की जानकारी दी थी। हालांकि, मौत के बाद जब पोस्टमॉर्टम कराया गया तो शरीर में जहर की पुष्टि हुई। तमन्ना की शादी 2 दिसंबर 2024 को पारिवारिक सहमति से हुई थी, लेकिन शादी के बाद दोनों के बीच लगातार विवाद होता रहता था। आरोप है राहुल आएदिन किसी न किसी बात को लेकर तमन्ना को प्रताड़ित करता था, जिससे परेशान होकर उसने जहर खा लिया था। यह भी सामने आया है कि राहुल ने तमन्ना द्वारा जहर खाने की जानकारी पुलिस से छिपाई थी।

सूने मकान में दिनदहाड़े लाखों की चोरी

इंदौर। पुलिस की लचर कार्यशैली के चलते शहर में दिनदहाड़े चोरी की वारदातें हो रही है। बुजुर्ग महिला के घर के चैनल गेट का ताला तोड़कर बदमाशों ने लाखों के माल पर हाथ साफ कर दिया। वारदात के बाद दो बदमाशों के वीडियो फुटेज भी सामने आए हैं। मल्हारगंज पुलिस को फरियादी प्रेमलता पति करतार सिंह ठाकुर निवासी रामचंद्र नगर एक्सटेंशन ने बताया कि वह बाबू मुराई कालोनी एरोड्रम रोड पर चंद्रप्रकाश बत्रा के यहां पापड़ बनाने का काम करती है। वह तल मंजिल पर और बेटा उमेश पहली मंजिल पर रहते हैं। 25 दिसम्बर को सुबह 9 बजे मैं पापड़ बनाने चली गई थी। दोपहर करीब पौने तीन बजे मेरे पोते अंकित ठाकुर का कॉल आया। उसने कहा कि चैनल गेट का ताला टूटा हुआ है। तत्काल मैं घर आई और देखा तो अलमारी में रखे पुश्तैनी दो हार, तीन जोड़ लटकन, दो जोड़ पायजेब और 40 हजार रुपए गायब थे। घटना की जानकारी लगने के बाद पुलिस ने मौके का मुआयना किया। आसपास लगे सीसीटीवी कैमरे के फुटेज में बदमाशों को हुलिए सामने आए हैं। फुटेज के आधार पर पुलिस ने बदमाशों की तलाश शुरू कर दी है।

युवाओं ने रचा संस्कारों का उत्सव

इंदौर। 31 दिसंबर जैसे पाश्चात्य आयोजनों के दौर में लाल बंगला रहवासी संघ के युवाओं ने भारतीय परंपरा को जीवंत करते हुए अपने ही मोहल्ले के बुजुर्गों का सम्मान समारोह आयोजित किया। पश्चिमी प्रभाव के कारण पीढ़ियों के बीच बढ़ती दूरी के बीच यह आयोजन समाज के लिए प्रेरक संदेश बनकर सामने आया। कार्यक्रम में युवाओं ने बुजुर्गों को मालवीय पगड़ी पहनाकर सम्मानित किया और पादपूजन कर आशीर्वाद प्राप्त किया। कार्यक्रम में विधायक महेंद्र हार्डिया ने कहा कि आज का युवा अपने रिश्तों से दूर होता जा रहा है, ऐसे समय में लाल बंगला के युवाओं ने संस्कारों की मजबूत नींव रखी है। एमआईसी सदस्य नंदकिशोर पहाड़िया ने कहा कि जहां संपत्ति के कारण परिवार बिखर रहे हैं, वहीं लाल बंगला कॉलोनी में सामूहिक रूप से बुजुर्गों का सम्मान कर समाज को नई दिशा देने का कार्य किया है। कार्यक्रम के अंतर्गत कॉलोनी में नवीन ड्रेनेज लाइन व सीमेंट सड़क निर्माण का भूमिपूजन भी किया गया।

बिजलपुर में निगम का ऐक्शन, सड़क निर्माण की राह से 40 बाधक हटाए

एमआईसी से मंजूरी के बाद कार्रवाई, 5 जेसीबी से तोड़फोड़ की गई

इंदौर। नगर निगम ने शहर की सड़कों को चौड़ा और सुगम बनाने की दिशा में सोमवार सुबह बड़ा कदम उठाया। बिजलपुर क्षेत्र में सड़क निर्माण में बाधक बने 40 मकानों के हिस्सों पर निगम की रिमूवल गैंग ने कार्रवाई की। पांच जेसीबी और पोकलेन मशीनों की मदद से यह कार्रवाई ताबड़तोड़ तरीके से की गई। खास बात यह रही कि इस पूरे अभियान के दौरान निगम आयुक्त दिलीप कुमार यादव स्वयं मौके पर मौजूद रहे। नगर निगम को केंद्रीय सड़क निधि के अंतर्गत 465 करोड़ रुपए की राशि प्राप्त हुई है, जिससे मास्टर प्लान की 23 सड़कों का निर्माण प्रस्तावित है। इन्हीं में से एक सड़क बिजलपुर से ट्रेजर टाउन होते हुए क्रिस्टल अपार्टमेंट तक बनाई जानी है। इस सड़क के निर्माण को हाल ही में हुई महापौर परिषद की बैठक में मंजूरी मिली थी। मंजूरी के बाद निगम ने बाधक निर्माण हटाने की प्रक्रिया तेज कर दी। सोमवार सुबह अचानक निगम की रिमूवल गैंग इलाके में पहुंची। पुलिस बल के पहुंचते ही कार्रवाई शुरू कर दी गई। जिन मकानों के हिस्से सड़क निर्माण में बाधा बन रहे थे, वहां पहले लोगों को सामान हटाने का मौका दिया गया, उसके बाद ही तोड़फोड़ की गई। निगम ने एक साथ पांच जेसीबी मशीन लगाकर कार्रवाई को कम समय में पूरा करने की रणनीति अपनाई। वर्षों बाद ऐसा देखने को मिला जब निगम आयुक्त स्वयं रिमूवल कार्रवाई के दौरान मौके पर पहुंचे। पूर्व में इसी क्षेत्र में कार्रवाई के दौरान विवाद की स्थिति बनी थी, जिसे देखते हुए इस बार आयुक्त ने स्वयं मौजूद रहकर टीम का मनोबल बढ़ाया और विरोध की आशंका को पहले ही खत्म कर दिया। उनकी मौजूदगी से यह स्पष्ट संदेश गया कि निगम सड़क निर्माण को लेकर पूरी तरह गंभीर है। कार्रवाई के दौरान किसी तरह का विरोध नहीं हुआ। क्षेत्रवासियों ने भी सड़क निर्माण का समर्थन किया। लोगों का कहना है कि सड़क बनने से आवागमन सुगम होगा और इलाके का विकास तेजी से होगा। निगम अधिकारियों के अनुसार, रिमूवल के बाद जल्द ही सड़क निर्माण कार्य शुरू कर दिया जाएगा।

रेलवे अगले 5 साल में इंदौर समेत तीन शहरों को नई सुविधाएं देगा

उज्जैन, भोपाल, इंदौर में ट्रेनों का विस्तार करने की योजना

इंदौर। रेलवे ने तीन शहरों के लिए ट्रेनों के संचालन की क्षमता 5 साल में दोगुनी करने की तैयारी की है। ये शहर हैं इंदौर, भोपाल और उज्जैन। इसके लिए बुनियादी ढांचे में बड़ा बदलाव कर विस्तार किया जाएगा। रेल अधिकारियों के अनुसार इन शहरों के आस-पास व उपनगरीय क्षेत्रों में नए टर्मिनल बनाए जाने की योजना है। रेलवे ने 2030 तक इन शहरों में ट्रेनों की संख्या दोगुनी करने के लक्ष्य हासिल करने के लिए योजना का खाका तैयार किया। प्रथम चरण में देश के 48 प्रमुख शहर रेलवे की प्राथमिकता सूची में हैं, इनमें इंदौर, उज्जैन के अलावा भोपाल में मंडीदीप, ओबेदुल्लागंज, मिसरोद, निशातपुरा सहित कई अन्य स्टेशनों को भविष्य की जरूरत के हिसाब से विकसित किया जाएगा। रेलवे ने पहले चरण में देश के 48 प्रमुख शहरों को चुना है।

ऐसे किया जाएगा विस्तार- इन शहरों में मौजूदा टर्मिनलों पर अतिरिक्त प्लेटफार्म, स्टेबलिंग-पिट लाइन, पर्याप्त शंटिंग सुविधाएं दी जाएंगी। शहरी क्षेत्र व आसपास नए टर्मिनलों की पहचान और निर्माण होगा। विभिन्न पॉइंट्स पर ट्रेनों की बढ़ती संख्या को संभालने के लिए यातायात सुविधा के कार्य, सिग्नलिंग उन्नयन और मल्टी ट्रैक के कार्य होंगे। रखरखाव सुविधाएं बढ़ेंगी, जिनमें मेगा कोचिंग कॉम्प्लेक्स भी शामिल है।

यात्री बस ट्रैफिक सिग्नल से टकराई बस के सभी 35 यात्री सुरक्षित बचे

विजयनगर चौराहे पर अलसुबह गफलत में हुआ यह हादसा

इंदौर। एक यात्री बस सिग्नल से टकरा गई। हालांकि हादसे में किसी भी यात्री को चोट नहीं आई। घटना विजयनगर क्षेत्र में रविवार सुबह करीब 5:30 बजे हुई। उदयपुर से भोपाल जा रही अशोक ट्रेवल्स की एसी स्लीपर बस ट्रैफिक सिग्नल से टकरा गई। टक्कर इतनी तेज थी कि ट्रैफिक सिग्नल टूटकर गिर गया, जबकि बस को भी नुकसान पहुंचा। बस में करीब 35 यात्री सवार थे और सभी सुरक्षित हैं। पुलिस के मुताबिक अशोक ट्रैवल्स की बस (एमपी 14 जेडएफ 9954) रसोमा चौराहे से विजयनगर की ओर आ रही थी। बस की रफ्तार कम थी। बस चालक प्रताप सिंह चौहान ने बताया कि सड़क के बीच में सिग्नल होने के कारण उन्हें भ्रम हो गया। बीआरटीएस हटने के बाद अचानक बदले ट्रैफिक पैटर्न के चलते वह स्थिति को समय पर समझ नहीं पाए, जिससे हादसा हो गया। घटना की सूचना मिलने पर गश्त कर रहे पुलिस जवान मौके पर पहुंचे और स्थिति को संभाला। इस हादसे में ट्रैफिक सिग्नल और बस दोनों को नुकसान हुआ है।

टायर फटा, परिवार बचा

इंदौर के हीरानगर क्षेत्र में शनिवार रात एक ट्रक की टक्कर से कार का टायर फट गया। हादसे में कार चालक और उसका परिवार बाल-बाल बच गया। पुलिस ने वंदना नगर निवासी अशोक शुक्ला की शिकायत पर ट्रक (सीजी 04 एनएम 7361) के चालक के खिलाफ एफआईआर दर्ज की है। पुलिस ने ट्रक को जब्त कर लिया। अशोक शुक्ला ने बताया कि वह चंद्रगुप्त चौराहे की ओर से एमआर-10 की तरफ जा रहे थे। इसी दौरान तेज रफ्तार ट्रक ने पीछे से उनकी कार को टक्कर मार दी। टक्कर के बाद जोरदार धमाके के साथ कार का टायर फट गया और कार डिवाइडर की ओर बढ़ गई, लेकिन बड़ा हादसा होने से बच गया। हादसे के दौरान कार के एयरबैग खुल जाने से किसी को कोई चोट नहीं आई।

ठगी के अंतरराष्ट्रीय नेटवर्क का भंडाफोड़ 6 आरोपी एरोड्रम पुलिस की गिरफ्त में

हिमांशु वर्मा को गिरफ्तार किया, उसने नेटवर्क का संचालन स्वीकारा

इंदौर। साइबर अपराधों के विरुद्ध चलाए जा रहे अभियान के तहत एरोड्रम पुलिस ने संगठित अंतर्राज्यीय और अंतर्राष्ट्रीय ठग गिरोह का पदार्फाश किया। गिरोह के 6 सदस्यों को गिरफ्तार किया गया, जो कमीशन के लालच में बैंक खाते किराए पर उपलब्ध कराकर ठगी की रकम विदेश भेजते थे। प्रकरण की फरियादी सलोनी नांदेकर निवासी कृष्णबाग कॉलोनी की शिकायत पर दर्ज किया गया, जिसमें शेयर बाजार में निवेश के नाम पर 1,63,600 रुपए की ठगी की गई थी। इस संबंध में थाना एरोड्रम में अपराध (क्रमांक 907/25, धारा 318(4) बीएनएस के तहत मामला पंजीबद्ध किया गया। पुलिस ने शिकायत के बाद मामले की जांच शुरू की। जांच में सबसे पहले बैंक ट्रांजेक्शन को खंगाला तो संगठित नेटवर्क के जुड़े होने के संकेत मिले थे। इसके बाद पुलिस ने एक के बाद एक लिंक जोड़ते हुए बदमाशों को गिरफ्तार किया।

सबसे पहले खाताधारक तौफिक रहमानी निवासी नूरानी नगर को पकड़ा। उसने पूछताछ में बताया कि वह कमीशन के बदले अपने और अपने भाई के बैंक खाते गिरोह के सदस्यों को किराए पर देता था।

नेटवर्क संचालन करना स्वीकारा

तौफिक से पूछताछ के बाद हिमांशु वर्मा को गिरफ्तार किया। उसने पूरे नेटवर्क का संचालन करना स्वीकार किया। हिमांशु की निशानदेही पर उसके अन्य साथी फरहान, जितेंद्र रावल एवं प्रवीण चौहान को अलग-अलग स्थानों से पकड़ा। सभी आरोपियों से अपराध की कार्यप्रणाली पूछी तो उन्होंने बताया कि युवाओं को घर बैठे कमाई और कमीशन का लालच देकर उनके नाम पर बैंक खाते खुलवाए जाते थे। इसके बाद साइबर ठगी, अवैध गेमिंग और फर्जी निवेश से प्राप्त धन इन खातों में डलवाया जाता था।

बैंक में पैसा जमा होते ही उसे यूएसटीडी (क्रिप्टो करेंसी) में बदलकर चीनी कंपनियों को ट्रांसफर कर दिया जाता था, ताकि ट्रेस करना मुश्किल हो जाए। आरोपियों के कब्जे से विभिन्न बैंकों के 15 एटीएम कार्ड बरामद किए गए हैं। आरोपियों को न्यायालय में प्रस्तुत कर पुलिस रिमांड लिया जा रहा है ताकि अब तक के कुल लेनदेन की राशि का पता तथा गिरोह के अंतरराष्ट्रीय संपर्कों की पहचान की जा सके।

पुलिस का ऐक्शन, 651 बदमाशों पर कार्रवाई, ड्रोन से निगरानी की

नशे में वाहन चलाने वालों पर भी सख्ती, गुंडों पर लगाम

इंदौर। शहर में अपराध और अपराधियों पर लगाम कसने पुलिस ने बड़ी कार्रवाई की है। आगामी नववर्ष को देखते हुए पुलिस कमिश्नर संतोष कुमार सिंह के निर्देश पर 27-28 दिसंबर की दरम्यानी रात सघन चेकिंग और कॉम्बिंग गश्त की गई। इस अभियान में सभी चारों जोन के डीसीपी, वरिष्ठ पुलिस अधिकारी और थाना प्रभारियों के नेतृत्व में पुलिस बल ने रात 3 बजे तक संवेदनशील इलाकों में चेकिंग की। पुलिस ने 1369 गुंडे-बदमाशों और असामाजिक तत्वों की जांच की, जिनमें से 651 बदमाशों पर कार्रवाई की गई। इस दौरान लंबे समय से फरार अपराधियों के खिलाफ बड़ी सफलता मिली और 227 से अधिक वारंट व समंस की तामील कराई गई, जिनमें स्थाई, गिरफ्तारी और जमानती वारंट शामिल हैं।

नशेबाज चालकों पर शिकंजा- अभियान के दौरान शराब पीकर वाहन चलाने वाले 317 चालकों को पकड़ा गया, जिनमें से 185 मामलों में मोटर व्हीकल एक्ट के तहत कार्रवाई की गई। अवैध मादक पदार्थ का सेवन करने वालों पर 6 प्रकरण दर्ज कर एनडीपीएस एक्ट के तहत कार्रवाई की। वहीं सार्वजनिक स्थान पर शराब पीने वालों के खिलाफ 27 मामले दर्ज किए गए। आदतन बदमाशों के खिलाफ विभिन्न धाराओं में 74 लोगों पर प्रतिबंधात्मक कार्रवाई की गई। साथ ही हॉटस्पॉट और शैडो एरिया में ड्रोन पेट्रोलिंग के जरिए निगरानी रखी गई। पुलिस ने 718 से अधिक गुंडे, नकबजन, लुटेरे, चाकूबाज, निगरानीशुदा बदमाश और जिलाबदर आरोपी शामिल है, को चेक कर सख्त हिदायत दी कि वे आगे कोई अपराध न करें।

घायल युवक की मौत, बाइक से जाते समय दुर्घटना का शिकार

इंदौर। पलासिया क्षेत्र में शनिवार देर शाम हुए सड़क हादसे में 18 साल के युवक की इलाज के दौरान मौत हो गई। घायल अवस्था में युवक को एमवाय अस्पताल में भर्ती कराया गया था। पुलिस ने मर्ग कायम कर जांच शुरू कर दी है। पुलिस के मुताबिक, मृतक की पहचान बबलू (18) पिता अर्जुन निवासी संजीवनी नगर खजराना के रूप में हुई है। वह ग्रेटर कैलाश अस्पताल के पास बाइक से कहीं जा रहा था, तभी उसका हादसे का शिकार हो गया था।

मौके पर मौजूद लोगों ने उसे अस्पताल पहुंचाया, लेकिन गंभीर चोटों के कारण उसकी जान नहीं बच सकी। पुलिस का कहना है कि जिस बाइक से हादसा हुआ, उस पर नंबर प्लेट नहीं थी। रविवार सुबह परिजन अस्पताल पहुंचे और शव की पहचान की। जानकारी के अनुसार, बबलू अपने दोस्त की बाइक लेकर निकला था। पोस्टमार्टम के बाद शव परिजनों को सौंप दिया गया है। फिलहाल पुलिस दूसरे वाहन की पहचान के लिए आसपास के सीसीटीवी फुटेज खंगाल रही है।

सुपरवाइजर पर एफआईआर

भंवरकुआं थाना क्षेत्र में ड्यूटी के दौरान सिक्योरिटी गार्ड की मौत के मामले में पुलिस ने फैक्ट्री सुपरवाइजर के खिलाफ लापरवाही से मौत का केस दर्ज किया है। यह कार्रवाई घटना के करीब चार महीने बाद जांच पूरी होने पर की गई। पुलिस के अनुसार रामेश्वर पाटीदार निवासी भगवती नगर मूसाखेड़ी अगस्त में गजराज एग्रोटेक प्राइवेट लिमिटेड फैक्ट्री में ड्यूटी कर रहा था। इसी दौरान लोहे का भारी गेट गिरने से वह गंभीर रूप से घायल हो गया था। फैक्ट्री सुपरवाइजर अंकित शर्मा उसे इलाज के लिए निजी अस्पताल ले गया, जहां इलाज के दौरान रामेश्वर की मौत हो गई। जांच में सुपरवाइजर की लापरवाही सामने आने के बाद पुलिस ने उसके खिलाफ एफआईआर दर्ज की है।

ढाई लाख की ब्राउन शुगर के साथ दो तस्कर क्राइम ब्रांच ने गिरफ्तार किए

पुलिस की प्रभावी चैकिंग व पेट्रोलिंग से अवैध मादक पदार्थ पकड़े

इंदौर। शहर में अवैध मादक पदार्थों की तस्करी पर प्रभावी रोक लगाने के लिए क्राइम ब्रांच द्वारा लगातार कार्रवाई की जा रही है। इसी क्रम में क्राइम ब्रांच टीम ने लोखंडे ब्रिज के पास नाले के किनारे से आरोपी भूपेंद्र डिगवा को 13.82 ग्राम अवैध मादक पदार्थ ब्राउन शुगर के साथ गिरफ्तार किया है। पुलिस की प्रभावी चैकिंग व पेट्रोलिंग में अवैध मादक पदार्थ का पैडलर शुभम उर्फ गुलशन यादव भी पकड़ा गया। पुलिस के मुताबिक, भूपेंद्र डिगवा से जब्त ब्राउन शुगर की अंतरराष्ट्रीय बाजार में अनुमानित कीमत करीब 1 लाख 40 हजार रुपये बताई जा रही। टीम संदिग्धों की पतारसी कर रही थी, तभी काले रंग की दोपहिया वाहन पर बैठा एक युवक संदिग्ध अवस्था में मिला। पुलिस को देखकर घबराने पर उसे घेराबंदी कर रोका गया।

पूछताछ में उसने अपना नाम भूपेंद्र डिगवा निवासी एरोड्रम, इंदौर बताया, जो गाड़ी रिपेयरिंग का कार्य करता है और आठवीं तक शिक्षित है। तलाशी में आरोपी के पास से ब्राउन शुगर, बिना नंबर की हीरो स्प्लेंडर मोटरसाइकिल और एक मोबाइल फोन जब्त किया गया। कुल जब्ती की कीमत लगभग 2 लाख 30 हजार रुपए आंकी गई है। आरोपी के विरुद्ध एनडीपीएस एक्ट के तहत मामला दर्ज कर आगे की कार्रवाई की जा रही है।

नशाखोर तस्कर को पकड़ा

परदेशीपुरा पुलिस ने रात्रि गश्त के दौरान ब्राउन शुगर के साथ नशे के आदि ड्रग पैडलर शुभम को गिरफ्तार किया है। आरोपी से अवैध मादक पदार्थ 11.01 ग्राम ब्राउन शुगर के साथ एक्टिवा भी जब्त की गई। आरोपी खुद नशा करने की आदत है और इस लत को पूरा करने के लिए ड्रग बेचता है। परदेशीपुरा थाने की टीम मध्य रात्रि लगभग 2 बजे सघन गश्त व चेकिंग कर रही थी। इस दौरान एमआर 4 रोड पर एक एक्टिवा के चालक को संदिग्ध रूप से घूमते देखकर उसे रोका और पूछताछ करते हुए तलाशी लेने पर उसके पास ब्राउन शुगर लगभग 11.01 ग्राम मिला। आरोपी शुभम उर्फ गुलशन यादव भागीरथपुरा से 11.01 ग्राम ब्राउन शुगर (कीमत 1,10,000 रु) व उसकी एक्टीवा को जब्त जब्त किया गया।

संपादकीय

सरकारी छुट्टियों की खैरात

मध्यप्रदेश सरकार द्वारा जारी 2026 के कैलेंडर का लुब्बो लुआब इतना है कि इसमें सरकारी कर्मचारियों की छुट्टियां कम करने की जगह और बढ़ा दी गई हैं तथा इनका कर्मचारियों के परफार्मेंस और जवाबदेही से कोई लेना देना नहीं है। जो कैलेंडर जारी हुआ है, उसके मुताबिक राज्य सरकारी दफ्तर कुल 365 में से 127 दिन तक बंद रहेंगे। यानी अगले साल दफ्तर कुल 238 दिन ही खुलेंगे। जबकि कर्मचारियों को 127 दिनों का अवकाश मिलेगा। इन छुट्टियों में 52 शनिवार, 52 रविवार और 23 सार्वजनिक अवकाश शामिल हैं। कर्मचारियों के लिए 5 डेज वर्किंग की व्यवस्था यथावत रहेगी। यह व्यवस्था कोरोना काल में लागू की गई थी, लेकिन कोरोना खत्म हुए अब पांच साल हो रहे हैं, लेकिन छुट्टियां बरकरार हैं। बताया जाता है कि इस बार सरकार ने ड्यूटी आवर बढ़ना तय किया था, लेकिन इस प्रस्ताव पर सहमति नहीं बन सकी। सरकारी दफ्तरों में छुट्टियों की मौज और नगण्य आउट पुट को लेकर अक्सर बहस होती है। कई बार कहा गया कि सरकारी दफ्तरों में इतनी छुट्टियां भारत जैसे देश में भी सहन की जाती हैं। जबकि कर्मचारियों को तनख्वाह के रूप में मिलने वाला पैसा जनता का ही होता है। वही जनता काम के लिए सरकारी दफ्तरों के चक्कर लगाती रहती है। क्योंकि ज्यादातर समय सरकारी दफ्तर छुट्टियों के कारण बंद ही रहते हैं। लिहाजा सरकारी दफ्तरों में छुट्टियां कम करने की मांग अक्सर उठती रहती है। लेकिन व्यवहार में कुछ नहीं होता। आलम यह है कि छुट्टियां घटाने की जगह अगले साल एक छुट्टी का इजाफा और कर दिया गया है। सरकार ने इस बार गणेश चतुर्थी (14 सितंबर) को भी सार्वजनिक अवकाश की सूची में शामिल किया है, जिससे कुल सार्वजनिक छुट्टियों की संख्या 23 हो गई है। सार्वजनिक छुट्टियों के अलावा सरकारी कर्मचारियों को मिलने वाली व्यक्तिगत छुट्टियों की तो भरमार है। मसलन कैलेंडर में कर्मचारियों को 62 ऐच्छिक अवकाशों की एक लंबी सूची भी दी गई है, जिसमें से वे अपनी सुविधानुसार किन्हीं तीन छुट्टियों का चुनाव कर सकते हैं। छुट्टी प्रेमी सरकारी कर्मचारियों के लिए दुख की बात इतनी है कि वर्ष 2026 में 6 सरकारी छुट्टियां शनिवार रविवार 'खा' गए हैं। गौरतलब है कि सरकार ने मध्य प्रदेश सिविल सेवा (अवकाश) नियम, 1977 में महत्वपूर्ण संशोधन किए हैं, जो 1 जनवरी, 2026 से लागू होंगे। इन बदलावों का सीधा असर कर्मचारियों पर पड़ेगा। इसके तहत महिला कर्मचारियों को मिलने वाले 730 दिनों के संतान पालन अवकाश के नियमों में बड़ा बदलाव किया गया है। अब अवकाश के पहले 365 दिनों के लिए पूरा वेतन मिलेगा, लेकिन दूसरे 365 दिनों के लिए केवल 80 प्रतिशत वेतन का ही भुगतान किया जाएगा। यह अवकाश 18 वर्ष तक की संतान के लिए स्वीकृत होगा। एक कैलेंडर वर्ष में कोई भी कर्मचारी तीन बार से अधिक संतान पालन अवकाश नहीं ले सकेगा। हालांकि, एकल महिला (सिंगल मदर) कर्मचारियों को विशेष छूट देते हुए एक कैलेंडर वर्ष में छह बार तक यह अवकाश लेने की पात्रता दी गई है। पहली बार प्रदेश के साढ़े चार लाख से अधिक शिक्षकों को अब वर्ष में दस दिन के अर्जित अवकाश की पात्रता होगी, जो उनके लिए एक बड़ी राहत है। लेकिन जो बात जनता के हित में नहीं कही जा सकती, वह है छुट्टियां कम नहीं करना और न ही कार्यदिवस में काम के घंटे नहीं बढ़ाना। हफ्ते में पांच दिन काम की व्यवस्था जारी रहेगी। यह व्यवस्था केन्द्र सरकार में भी है, लेकिन वहां काम के घंटे ज्यादा और सुपरिभाषित हैं। जबकि कहा जा रहा है कि नए नियम केन्द्र सरकार के कर्मचारियों के नियमों के समान ही हैं। बगैर जवाबदेही और परफार्मेंस के छुट्टियां बढ़ाते रहना खैरात ही है।

शांति की नई इबारत और पुर्नवास का संकल्प

नक्सलवाद

डॉ. सुधीर कुमार
(कुरुक्षेत्र विवि के विधि विभाग में सहायक प्रोफेसर)

भारत के आंतरिक सुरक्षा परिदृश्य में नक्सलवाद एक ऐसा नासूर रहा है, जिसने दशकों तक विकास और सामाजिक समरसता की गति को बाधित किया है। वर्तमान आंकड़ों और सुरक्षा बलों की सटीक रणनीति से स्पष्ट है कि छत्तीसगढ़ में यह समस्या अब अपने अंतिम चरण में है। अबूझमाड़ के उन अभेद्य जंगलों में, जहाँ कभी केवल बंदूकों की गूँज सुनाई देती थी, आज सुरक्षा बलों के बढ़ते कदम और विकास की सुगबुगाहट एक नए युग का संकेत दे रही है। लेकिन सैन्य सफलता केवल एक पहलू है। असल चुनौती उन 'बंदूक छोड़ने वाले हाथों' को मुख्यधारा के कानूनी और सामाजिक ढांचे में इस प्रकार समाहित करने की है कि वे पुनः असंतोष की राह न चुनें। नक्सलवाद का पूर्ण उन्मूलन तभी संभव है जब हम पुनर्वास को केवल एक प्रशासनिक प्रक्रिया या वित्तीय इनाम न मानकर, उसे एक 'वैधानिक और मानवीय अधिकार' के रूप में स्थापित करें।

शांति केवल शस्त्रों के मौन होने का नाम नहीं है, बल्कि यह उस न्यायपूर्ण व्यवस्था की उपस्थिति है जहाँ समाज का अंतिम व्यक्ति स्वयं को सुरक्षित और गरिमामय महसूस करे। भारतीय लोकतंत्र के विकासक्रम में आज हम एक ऐसे मोड़ पर खड़े हैं जहाँ 'शांति' और 'पुनर्वास' को केवल मानवीय संवेदना के चश्मे से नहीं, बल्कि एक 'विधिक अधिकार' के रूप में देखने की आवश्यकता है। इतिहास गवाह है कि थोपी गई शांति कभी स्थायी नहीं होती। शांति तब तक 'इबारत' मात्र रहती है जब तक उसे कानूनी शुचिता प्राप्त न हो। हमें 1990 के दशक के उत्तरार्ध और 2000 के शुरुआती दौर के उन उदाहरणों से सीखना होगा, जब पुनर्वास नीतियों में स्पष्टता की कमी के कारण कई आत्मसमर्पित नक्सली फिर से जंगलों की ओर लौट गए थे। उदाहरण के तौर पर, आंध्र प्रदेश और तत्कालीन अविभाजित मध्य प्रदेश के कई कैडरों ने केवल इसलिए फिर से हथियार उठा लिए थे क्योंकि आत्मसमर्पण के बाद उन पर दर्ज मुकदमों का कानूनी बोझ उनके सामाजिक जीवन को निगल रहा था।

जब एक व्यक्ति मुख्यधारा में आता है और उसे कोर्ट-कचहरी के अंतहीन चक्करों में छोड़ दिया जाता है, तो राज्य की न्याय व्यवस्था के प्रति उसका मोहभंग होना निश्चित है। जब हम शांति की नई इबारत लिखने की बात करते हैं, तो इसमें 'संवैधानिक नैतिकता' का पुट होना अनिवार्य है। भारत के संविधान का अनुच्छेद 21 केवल 'जीवन' की गारंटी नहीं देता, बल्कि 'गरिमापूर्ण जीवन' की गारंटी देता है। उच्चतम न्यायालय ने 'ओल्गा टेलिस बनाम बॉम्बे म्युनिसिपल कॉर्पोरेशन' और 'नर्मदा बचाओ आंदोलन' जैसे ऐतिहासिक फैसलों में यह स्पष्ट किया है कि पुनर्वास की विफलता सीधे तौर पर मौलिक अधिकारों का उल्लंघन है। छत्तीसगढ़ के संघर्ष प्रभावित क्षेत्रों में भी यही विधिक सिद्धांत लागू होना चाहिए। शांति वार्ताओं में अक्सर रणनीतिक पहलुओं पर तो चर्चा होती है, लेकिन कानूनी जवाबदेही को पीछे छोड़ दिया जाता है। नई इबारत लिखने के लिए हमें 'संक्रमणकालीन न्याय' के सिद्धांत को अपनाना होगा। यह सिद्धांत दक्षिण

अफ्रीका में रंगभेद की समाप्ति के बाद अपनाया गया था, जहाँ 'सत्य और सुलह आयोग' ने अपराधियों को मुख्यधारा में जोड़ने के लिए एक विधिक ढांचा तैयार किया था।

छत्तीसगढ़ के संदर्भ में, पंचायत उपबंध (अनुसूचित क्षेत्रों तक विस्तार) अधिनियम, 1996 (पेसा) का प्रभावी क्रियान्वयन वह वैधानिक अस्त्र है, जो ग्राम सभाओं को आत्मनिर्भर बनाकर शांति की नींव को ठोस बनाता है। बस्तर के गाँवों में जब 'ग्राम सभा' यह तय करती है कि विकास का स्वरूप क्या होगा, तो माओवादियों का 'जल-जंगल-जमीन' वाला भ्रामक विमर्श स्वतः ही समाप्त हो जाता है। बिना कानूनी आधार के किया गया पुनर्वास महज एक 'खैरात' बनकर रह जाता है। पुनर्वास को अक्सर आर्थिक पैकेज तक सीमित मान लिया जाता है। लेकिन, कानूनी परिप्रेक्ष्य में, पुनर्वास का अर्थ है–'यथास्थिति की बहाली' - इसका अर्थ है पीड़ित को उस स्थिति में लाने का प्रयास करना जिसमें वह संघर्ष न होने की स्थिति में होता। छत्तीसगढ़ सरकार की 'नियत नेल्लानार' (आपका अच्छा गाँव) जैसी योजनाएं इसी दिशा में एक सराहनीय कदम हैं। इस योजना के तहत बस्तर के सुदूर नक्सल प्रभावित गाँवों में सुरक्षा शिविरों को 'विकास के केंद्र' के रूप में स्थापित किया जा रहा है। उदाहरण के तौर पर, बीजापुर और सुकमा के उन क्षेत्रों में जहाँ कभी स्कूल जाना एक सपना था, आज 'पोला' और 'नियत नेल्लानार' के माध्यम से स्कूल, अस्पताल और राशन की दुकानें कानूनी गारंटी के साथ खुल रही हैं। यह केवल सरकारी काम नहीं, बल्कि राज्य द्वारा अपने नागरिकों को दिया गया एक 'विधिक वचन' है।

अक्सर विस्थापितों और आत्मसमर्पित कैडरों की सबसे बड़ी कानूनी लड़ाई अपनी पहचान सिद्ध करने की होती है। संघर्ष के वर्षों में उनके पास न आधार कार्ड बचा, न ही राशन कार्ड। शांति की प्रक्रिया में सबसे पहला वैधानिक कदम 'डिजिटल पहचान' और खोए हुए दस्तावेजों की कानूनी बहाली होना चाहिए। इसके साथ ही, संघर्ष के दौरान संपत्तियों पर हुए अवैध कब्जों के निपटारे हेतु 'विशेष फास्ट ट्रैक ट्रिब्यूनल' की आवश्यकता है। हम उन हजारों ग्रामीणों को नहीं भूल सकते जो अपनी पैतृक भूमि छोड़कर कैंपों में रहने को मजबूर हुए। जब तक एक व्यक्ति अपनी जमीन पर अपना कानूनी हक वापस नहीं पाता, उसके लिए 'शांति' एक बेमानी शब्द है। कोलंबिया के संघर्ष में भी 'लैंड रेस्टीट्यूशन लॉ' ने शांति बहाली में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी, जिसे छत्तीसगढ़ के मॉडल में भी शामिल किया जा सकता है। कानूनी दृष्टिकोण से सबसे बड़ी दुविधा 'दंडात्मक न्याय' और 'पुर्नस्थापनात्मक न्याय' के बीच संतुलन बनाने की है। समर्पण करने वाला व्यक्ति कानून की नजर में एक अपराधी और राज्य का नागरिक दोनों होता है। वर्तमान में दशकों तक चलने वाले मुक़दमे आत्मसमर्पण की राह में सबसे बड़ा अवरोध हैं।

कल्पना कीजिए एक ऐसे युवक की, जिसने 18 साल की उम्र में बहकावे में आकर हथियार उठाया और 10 साल बाद वह मुख्यधारा में लौटना चाहता है। यदि उसे अगले 20 साल जेल में बिताने पड़ें, तो पुनर्वास की नीति विफल मानी जाएगी। इसके समाधान हेतु एक 'विशिष्ट कानूनी डेस्क' की आवश्यकता है, जो छोटे मामलों को तत्काल समाप्त करे और गंभीर अपराधों में 'न्यायिक रियायत' सुनिश्चित कर सके। 'सिंगल विंडो क्लियरेंस' की तर्ज पर जब तक कानूनी अड़चनों को दूर नहीं किया जाता, तब तक व्यवस्था के प्रति विश्वास बहाल करना कठिन होगा। शांति की नई इबारत लिखते समय हमें गांधीवादी 'हृदय परिवर्तन' और आधुनिक 'कानूनी प्रवर्तन' के बीच संतुलन बनाना होगा। कानून डंडे के जोर पर व्यवस्था तो बना सकता है, लेकिन स्थायी शांति के लिए 'संवैधानिक विश्वास' की आवश्यकता होती है। छत्तीसगढ़ में 'बस्तर फाइटर्स' का गठन इस विश्वास का जीता-जागता उदाहरण है। जब स्थानीय आदिवासी युवक स्वयं पुलिस बल का हिस्सा बनकर अपने ही क्षेत्र में कानून व्यवस्था संभालता है, तो वह केवल एक नौकरी नहीं कर रहा होता, बल्कि वह 'विधिक तंत्र' का हिस्सा बनकर नक्सली विचारधारा को संवैधानिक चुनौती दे रहा होता है।

शांति की नई इबारत केवल स्याही से नहीं, बल्कि न्याय के संकल्प से लिखी जाती है। हमें समझना होगा कि पुनर्वास कोई उपकार नहीं, बल्कि राज्य का उत्तरदायित्व और नागरिक का अधिकार है। जब हम 'पुनर्वास का वैधानिक संकल्प' लेते हैं, तो हम वास्तव में एक ऐसे समाज की रचना कर रहे होते हैं जहाँ 'कानून का शासन' हिंसा के डर से बड़ा होता है। आने वाले समय में, छत्तीसगढ़ को विश्व के सामने एक ऐसा मॉडल पेश करना चाहिए जहाँ विकास और शांति के कारण विस्थापित हुए हर नागरिक को कानून के संरक्षण में पुनः स्थापित किया जाए। याद रहे, जिस समाज में न्याय की गूंज कमजोर होती है, वहाँ शांति की इबारत धुंधली पड़ जाती है। शांति को स्थायी बनाने के लिए उसे 'वैधानिक कवच' पहनाना ही आज की सबसे बड़ी आवश्यकता है। बस्तर की आबोहवा में अब बारूद नहीं, बल्कि न्याय और विकास की खुशबू महकनी चाहिए।

पर्यावरण

डॉ. अस्मिता सिंह
लेखक प्राध्यापक हैं।

सिंगरौली का विकास बना पर्यावरणीय त्रासदी

इसे एक विडंबना ही समझिए कि जिस क्षेत्र से उत्तर भारत के बड़े हिस्से को रोशनी मिलती है, वही इलाका पर्यावरणीय अंधेरे में डूबता जा रहा है। जंगलों की कटाई में भारत विश्व में दूसरा स्थान रखता है। शायद पहला स्थान बनाने के लिए सिंगरौली जिले के धिरौली कोल ब्लॉक में कोयला खनन को मंजूरी मिलते ही लगभग छह लाख पेड़ों पर आरी चलने लगी है, जिससे यहाँ बड़े पैमाने पर वन विनाश की प्रक्रिया शुरू हो गई है। जब कुछ पेड़ों के कटने से ही हवा, मिट्टी, जल और जीव-जंतुओं के संतुलन पर असर पड़ता है, तब सोचने वाली बात है कि लाखों पेड़ एक साथ काट दिए जाये, तो दुष्परिणाम कैसे होंगे। यह केवल हरियाली का नुकसान नहीं, बल्कि वर्षा चक्र के बिगड़ने, भूजल स्तर के गिरने, तापमान बढ़ने, वन्यजीवों के विस्थापन और मानव-प्रकृति संबंध के टूटने जैसा है। इस प्रक्रिया में सवाल ये उठता है कि आखिर हमें ऐसा कौन सा विकास चाहिए जो लाखों पेड़ों को काटकर ही मिलेगा? हम आने वाली पीढ़ी को कौन सा विकास देने जा रहे है जो न तो सतत् है न न्यायसंगत।

वैसे देखें तो सिंगरौली का इतिहास बहुत दिलचस्प है प्राचीनकाल में यह इलाका श्रृंगी ऋषि की तपोभूमि हुआ करता था, जिससे इसका नाम श्रृंगावली पड़ा। भाषा और समय प्रवाह के कारण श्रृंगावली, सिंगरौली में तब्दील हुआ। सिंगरौली रीवा रियासत का हिस्सा रहा और अंग्रेजी हुकूमत में काले पानी की सजा में सिंगरौली का नाम भी आता था। अब सीधी जिले से अलग कर 2008 में इसे मध्यप्रदेश का 50वाँ जिला बनाया गया। आज यह देश की ऊर्जा जरूरतों को पूरा करने वाले प्रमुख क्षेत्रों में बदल गया है।

दरअसल सिंगरौली कोलफील्ड देश के सबसे समृद्ध कोयला क्षेत्रों में गिना जाता है, जहाँ से मिलने वाला कोयला ताप विद्युत संयंत्रों के लिए मुख्य ईंधन प्रदान करता है। इनसे प्रतिदिन हजारों मेगावाट बिजली राष्ट्रीय ग्रिड के माध्यम से न सिर्फ मध्यप्रदेश बल्कि दिल्ली, झारखंड, उत्तरप्रदेश सहित देश के कई राज्यों तक पहुँचती है। सिंगरौली की पहचान केवल कोयला खदानों, बिजली उत्पादन या भारी उद्योगों तक सीमित नहीं रही, चितरंगी के चकरिया गोल्ड ब्लॉक में सोने का खनन भी शुरू हो गया है। बावजूद इसके सिंगरौली न सिर्फ विकास की दृष्टि से बल्कि यहाँ उपजाऊ मिट्टी, सोन और रिहंद जैसी नदियां, घने जंगल और सामाजिक विविधता में भी समृद्धशाली है। प्राकृतिक संसाधनों से भरपूर ये जंगल अब कॉरपोरेट कॉम्पनियों के लालच की भेंट चढ़ रहे हैं।

यहाँ स्थित बगदरा वन्यजीव अभयारण्य, जो सीधी और सिंगरौली दोनों जिलों में फैला है, संजय टाइगर रिज़र्व के बफर ज़ोन से सटा है यहाँ बाघों की घनी आबादी है। साथ ही माड़ा का जंगल इस क्षेत्र की जैव विविधता के संरक्षण में अहम भूमिका निभाता है। धिरौली और आसपास के वन क्षेत्र जैव विविधता की दृष्टि से अत्यंत संवेदनशील हैं। यह इलाका हाथी-बाघ कॉरीडोर सहित तेंदुआ, भालू के साथ-साथ कई दुर्लभ और संरक्षित प्रजातियों का प्राकृतिक आवास है। कोयला खनन के लिए बड़े पैमाने पर जंगलों की कटाई और भूमि-उपयोग में बदलाव से इन वन्यजीवों के प्राकृतिक गलियारों को खत्म करने का सीधा अर्थ है वन्यजीव संरक्षण अधिनियम को किनारे करके खनन को महत्व देना। वन्यजीव कॉरिडोर केवल संकरी पगडंडी नहीं, बल्कि कई किलोमीटर चौड़े सतत मार्ग होते हैं, जिनमें जंगल, पहाड़ी ढाल, नदी और खुली भूमि भी शामिल होती है। कॉरिडोर खत्म होने पर बाघ, हाथी और तेंदुआ जैसे वन्यजीवों को गाँवों और खेतों की ओर बढ़ना पड़ता है जिससे मानव-वन्यजीव संघर्ष में वृद्धि होगी। बिल्कुल तय है कि खनन परियोजनाएं न सिर्फ स्थानीय प्रजाति के पेड़ों की बल्कि वन्यजीवों की बली लेने से भी गुरेज नहीं करती हैं।

यहाँ रहने वाले स्थानीय जनजातीय समूहों के लिए भी यह विकास आपदा बनकर आया है। सिंगरौली जिला सामाजिक और सांस्कृतिक दृष्टि से अत्यंत विविधतापूर्ण क्षेत्र है, जहाँ गोंड, बैगा, कोरकू और खैरवार जैसी जनजातियाँ इसकी मूल पहचान का हिस्सा हैं। जंगलों के खत्म होने से इनकी आजीविका के साथ ही इनके जीने के तरीके भी प्रभावित होते है जिनसे इनकी संस्कृति नष्ट होने की संभावना भी बढ़ी है। जनजातीय क्षेत्र में खनन गतिविधियों से बड़े पैमाने पर विस्थापन हुआ है, जिससे लोगों की पारंपरिक आजीविका, विशेषकर आदिवासी समुदायों के ईंधन, चारा और वन-आधारित संसाधन समाप्त हो गए हैं। कोयला खनन से यहाँ अब राख, धूल और वायु प्रदूषण चरम पर है, जिससे श्वसन रोगों के साथ ही मिट्टी प्रदूषण ने कृषि उत्पादकता को घटाया है तथा जल प्रदूषण से उत्पन्न गंभीर स्वास्थ्य जोखिमों को बढ़ाया है। कोयला खनन ने न केवल पर्यावरणीय असंतुलन को जन्म दिया है, बल्कि स्थानीय लोगों की जीवन गुणवत्ता और पारंपरिक जीवनशैली को भी गहराई से प्रभावित किया है।

व्यावसायिक दृष्टिकोण ने सिंगरौली को भले ही औद्योगिक विकास दिया हो, लेकिन इसके साथ पर्यावरणीय और सामाजिक विनाश भी बढ़ता जा रहा है। संविधान द्वारा संरक्षित पेसा एक्ट का मूल उद्देश्य था कि आदिवासी क्षेत्रों में भूमि, जंगल और संसाधनों पर निर्णय का अधिकार ग्राम सभाओं के पास रहे, लेकिन सिंगरौली में यह कानून काग़ज़ों तक सिमटता दिखाई देता है। परियोजनाओं की मंजूरी, भूमि अधिग्रहण और विस्थापन की प्रक्रियाओं में ग्राम सभा की वास्तविक सहमति के बिना ही फैसले आगे बढ़ाए गए, जिससे यहाँ की जनजातियाँ अपनी ही धरती पर पराई हो गईं। अब ये लोग रोजगार, आवास और संस्कृति के संकट से जूझ रहे हैं। यहाँ विकास का लाभ बाहर जा रहा है और उसकी कीमत स्थानीय समाज और जंगल चुका रहे हैं।

जिस धरती से देश को ऊर्जा मिलती है, निजी कॉरपोरेट कॉम्पनियों के कारण वही धरती अपने जंगल, नदियाँ, वन्यजीव और सांस्कृतिक विरासत खोती जा रही है। अब प्रश्न यह नहीं है कि विकास चाहिए या नहीं, विचार यह है कि किस तरह का विकास चाहिए, तो हमें ऐसा विकास चाहिए जो स्वच्छ हवा, साफ जल, हरे भरे जंगल और जीवन के मूल आधारों को सुरक्षित रख सके। आने वाली पीढ़ियाँ हमसे यह नहीं पूछेंगी कि हमने कितना विकास किया, बल्कि यह जरूर पूछेंगी कि क्या हमने उनके लिए सांस लेने की हवा, पीने का पानी और जीने लायक प्रकृति छोड़ी भी या नहीं। आज जरूरत है ऐसे विकास मॉडल की, जो जंगलों को जीवन का आधार माने, जनजातीय समाज को सहभागी बनाए और ऊर्जा सुरक्षा के साथ पर्यावरणीय संतुलन को भी समान महत्व दे।

वह संस्कारी पार्टी के लोग हैं

कटाक्ष

सुरेश सौरभ
लेखक व्यंग्यकार हैं।

समय के साथ कहावतें और मुहावरे भी चेंज होने लगे हैं भाई। अब लोग-बाग कहने लगे हैं, बड़ा वकील वह नहीं, जो दिन-रात खूब पढ़-पढ़ कर सींक-सलाई जैसा हो रहा है, बल्कि बड़ा वकील वह है, जो जुगाड़ से फर्जी डिग्री ले आए, जुगाड़ से कोर्ट में पैसा देकर अपने वकालत करने का रजिस्ट्रेशन करा ले, फिर गवाह, सबूत, पुलिस आदि की बोली लगा-लगा कर खरीद-फरोख्त करे, इससे भी अगर बात न बने,तो सीधे-सीधे जज को ही खरीद ले फिर वह जज चाहे सिविल कोर्ट का हो, या हाईकोर्ट का हो, या सुप्रीम कोर्ट का हो। सबसे प्यारा कौन? उत्तर-पैसा, फिर पैसा बोलता ही नहीं, बड़े-बड़े को भी तोल देता है। बड़े-बड़े नाक वालो को अंदर से, बाहर तक पूरा खोल भी देता है। इसे ऐसे भी गांव की भाषा में कहा जा सकता है, जहां देखो मीट मुरगे का सुरुआ यानि ग्रेवी, बैठ जाओ वहीं पालथी मारकर या फिर उटकुरुवा। वैसे भी रेल, बैंक, पोर्ट, एअरपोर्ट सब बिक चुका है। अब जब जज वकील भी बिकने लगे तो कोई ज्यादा हैरत वाली बात नहीं, न इसमें कोई तूफान खड़ा होने वाला है। जहां रुपया लगातार गिर रहा हो, फिर वहां कानून के रखवारे अगर गिरने लगे, तो इसमें किसी भी भले इंसान को तनिक भी चिंतन करने की आवश्यकता नहीं। ऐसी जलवायु में साईकिल चोर भले ही पकड़ लिए जा रहे हो, पर विजय माल्या, नीरव मोदी जैसे अरबों लेकर भागने वाले भगोड़े लोगों को कौन पकड़ पायेगा? जिस देश में राम रहीम,आशाराम, कुलदीप सेंगर, जैसे दुष्कर्मी महा संस्कारी जेल से बाहर आ रहे हो, माला पहना कर महा संस्कारी लोग ही जिनका सम्मान कर रहे हो और सोनम वांगचुक जैसे सामाजिक कार्यकर्ताओं को जेल में डाला जा रहा हो, फिर तो उस देश का भगवान् ही रक्षक है। भगवान ही मुख्तियार है।

संस्कारी इतने हैं कि कभी धाकड़ कार्य रोड पर ही संपादित करने लगते हैं। कभी किसी महिला का बुरका हटाकर हें हें हें करने लगते हैं। बार बालाओं के साथ कभी नाच-गाना करके अपने माननीय होने का, अपना खास परिचय देने लगते हैं। कभी किसानों को थार से रौंदते हैं। मारते हैं। कभी अपनी आवाज मुखर करने वाले बेरोजगार युवाओं पर लाठीचार्ज करते हैं। कभी जाति-जाति का कार्ड खेल कर अपने स्वजातीय भाई, भौजाई, सालियों की पक्की नियुक्ति कर देते हैं। कभी बड़े पदों पर अपने ही स्वजातीय बंधुओं की पदोन्नति कर तपस्वी मनस्वी होने का ढोल पीटने लगते हैं। इतने हैं, संस्कारी तभी तो बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ का नारा देकर 'मनीषा' को आधी रात में जलाते हैं। कभी किसी की, गरीब बेटी को भेड़ियों के सामने पेश करने की काली कवायद करते हैं। ऐसे महा संस्कारी लोगों की महिमा अपरंपार है।

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए उमेश त्रिवेदी द्वारा अग्निबाण पब्लिकेशन, 121, देवी अहिल्या मार्ग, इंदौर, म.प्र. से मुद्रित एवं 662, साई कृपा कॉलोनी, बॉम्बे हॉस्पिटल के सामने, इंदौर से प्रकाशित।

प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
स्थानीय संपादक
हेमंत पाल
प्रबंध संपादक
रमेश रंजन त्रिपाठी
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र इंदौर रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2015/ 66040,
Mobile No.: 09893032101
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

व्यंग्य

शशांक दुबे
लेखक व्यंग्यकार हैं।

नए साल की पहली कसम

आजकल सर्दी, शादी और महिला क्रिकेट के साथ-साथ शुभकामनाओं का भी सीज़न चल रहा है। अब पहले वाला ज़माना तो रहा नहीं कि टांड़ पर पड़े पुराने ग्रीटिंग कार्डों में से पसंद का कार्ड छांटो, बीच का अंगेज़ी पन्ना फाड़ो और उसकी जगह नए पन्ने पर गलत-सलत हिन्दी में 'प्रिय चंदू भिया ओर भाबी को नए साल कि शूभकामनाएँ' जैसा कुछ भी लिख लुखा के लाल डिब्बे में डाल दो। अब तो मामला 'आज, अभी और इसी वक़्त' का है। आदमी 31 दिसंबर की शाम से ही ड्राइंग रूम में 'पसरीचा' बन जाता है और चादर में घुसने से पहले अपनी मतलब के दस-बीस लोगों को फोन ठपकारने के अलावा फेसबुक पर ऐसा कुछ चितर जाता है कि लाइकरों की संख्या 'तिहाई' का आंकड़ा पार कर जाए और व्हाट्स एप्प पर ऐसा कुछ चिपका जाता है कि लोग 'दुहाई हो दुहाई' की चीख-पुकार मचाने लगें।

बड़ा निराला अंदाज़ होता है शुभकामना देनेवालों का। कोई चिल्लाकर बधाई देता है, तो कोई फुसफुसाकर। रोजी-रोटी की खातिर दूर-दराज़ के गांवों से शहर की ओर निकल आया आदमी अपने दूर के रिश्तेदारों को इतनी ऊंची आवाज़ में शुभकामनाएँ देता है कि खिड़कियों के काँच थरथराने लगते हैं। दूसरी ओर अपने बॉस या समधी को शुभकामनाओं के नाम पर कुल्हड़ में गुड़ फोड़ते हुए खुद ही थरथराने लगता है। एक होते हैं साहित्यकार। वे किसी नामावर संपादक या आलोचक को

शुभकामना देते वक्त थरथराते तो नहीं लेकिन तलत महमूद की आवाज़ की तरह कंपकंपाते ज़रूर हैं, बस इसी आशंका से कि जाने-अंजाने मुँह से कोई ऐसी बात न निकल जाए कि वे महोदय की नज़रों से गिर जाएँ और फिर किसी 'लघु पत्रिका' के लायक भी न रहें।

कामना के इस आदान-प्रदान में कुछ डरने वाले हैं तो कुछ डराने वाली भी। आदमी दफ्तर में घुसने से पहले गुमटी पर गुनगुनी धूप में चाय की चुस्कियाँ ले रहा होता है कि अचानक कोई पीछे से ज़बरदस्त धौल जमाकर 'हैप्पी न्यू यर!!' कर देता है। ऐसे में बेचारे के पास अधढुली चाय का कप परे कर अपनी पीठ सहलाने, नलके के पानी में रूमाल भिगो-भिगोकर उससे शर्ट पोंछने और मन ही मन 'हमसे का भूल हुई जो ये सजा हमका मिली' गुनगुनाने के अलावा कोई चारा नहीं बचता।

दूसरी ओर बधाई लेने वाले भी कम 'पठानी' नहीं होते। आप उन्हें शुभकामनाएँ देते हैं वे साफ कहते हैं, 'क्या यार सूखे सूखे हैप्पी न्यू यर! भई कुछ मीठा खिलाओ, गला गीला करवाओ।' कुछ तो इनके भी उस्ताद होते हैं। साफ साफ बोल देते हैं 'हम तो हैप्पी न्यू यर के जवाब में सेम टू यू तब कहेंगे जब तुम हमें वैसा ही ब्लू जैकेट दिलवाओ जैसा तुमने व्यासजी के यहाँ शादी में पहना था।' ऐसे उस्तादों से मिलने के बाद आदमी नए साल की पहली कसम यह खाता है कि आइंदा उस्तादों को 'हैप्पी न्यू यर' कहने के बजाए साल के पहले हफ्ते छुट्टी लेकर घर में पड़ा रहेगा।

जन्मदिन : राजेश खन्ना

अभय बेडेकर

प्रशासनिक अधिकारी और लेखक

'काका' की बादशाहत के गिरने की वो दास्तां

राजेश खन्ना उर्फ काका की परदे पर बादशाहत को यदि किसी ने खत्म किया, तो वो थे अमिताभ बच्चन। जबकि, एक दौर ऐसा भी था, जब राजेश खन्ना अपने लिए अमिताभ बच्चन को मनहूस मानते थे। लेकिन। फिल्म 'आनंद' में दोनों के साथ करने से फिल्म को मिली सफलता ने उनके इस भ्रम को तोड़ दिया। उसके बाद जो हालात बने, वह एक शिखर से गिरने और दूसरे के शिखर पर स्थापित होने की दास्तां है।

'इज़्ज़तें शोहरतें चाहतें उल्फ़तें, कोई भी चीज़ दुनिया में रहती नहीं, आज मैं हूं जहां कल कोई और था, ये भी एक दौर है वो भी एक दौर था।' ये थे फ़िल्मी दुनिया के काका यानी राजेश खन्ना। स्टेज था आईफ़ा लाइफ़ टाइम अचीवमेंट अवॉर्ड (2009) का और स्टेज पर मौजूद थे बाबू मोशाय उर्फ़ अमिताभ बच्चन। वो बाबू मोशाय जिसने काका की बादशाहत को खत्म किया था। काका के सुपर स्टारडम की राह में खड़ा अकेला शहंशाह जिसने गुरु शर्ट पहनकर सर को हल्के से झटका देकर बात करने की अदा से दर्शकों को दीवाना बनाने वाले काका को सुपर स्टार की कुर्सी से उतार दिया था। सदियों से ये होता रहा है और आगे भी होता रहेगा। क्योंकि कोई भी चीज़ दुनिया में शिखर पर नहीं रहती।

कहते हैं चोटी पर स्थान बहुत कम होता है 'देयर इज वेरी लिटिल स्पेस ऑन टॉप।' इसलिए चोटी पर कोई एक ही रह पाता है। वहां पहुंचना आसान नहीं होता, पर उससे भी मुश्किल काम है टॉप पर जमे रहना। माउंट एवरेस्ट पर चढ़ना बहु मुश्किल काम है, पर ऊपर हवा इतनी तेज और बर्फीली होती है कि चोटी पर उतने निम्न तापमान में खड़े रहना असंभव हो जाता होगा। इसलिए मुश्किल पर्वतारोही एवरेस्ट पर आधा घंटा रुक पाते हैं। ऐसे में बॉलीवुड में सुपरस्टार की कुर्सी पर बरसों तक काबिज रह पाना किसी के लिए भी संभव नहीं है। काका ने भी भैया (अमिताभ) के लिए अपनी कुर्सी ऐसे ही नहीं छोड़ दी थी। 'काका' तो ऐसे सुपर स्टार थे जो ना पहले कभी हुआ और न अब फिर कभी होगा।

एक ही समय में शहर के कई टॉकीजों में काका की ही फ़िल्में चलती थी और पूरा शहर काका का दीवाना हुआ रहता था। लड़कियां काका की गाड़ी घेर लेती थीं और सफेद कार को चूम चूमकर लिपस्टिक से लाल कर देती थीं। ऐसे में कोई नया लड़का काका को टक्कर दे सके, ये तो मुमकिन ही नहीं था। स्थापित सितारे भी चाहे वो राजेंद्र कुमार, राज कपूर हो या देव आनंद सभी राजेश खन्ना के दिग्विजयी रथ के सामने फेल थे।

अमिताभ बच्चन जो उस समय फिल्मी दुनिया में कुछ तो अपने कवि पिता हरिवंश राय बच्चन जो उस समय तक अपनी रचना 'मधुशाला' के कारण प्रसिद्ध हो चुके थे, के नाम से बॉलीवुड के श्रेष्ठि वर्ग में पहचाने जाते थे तो कुछ अपनी माता

श्रीमती तेजी बच्चन के पॉलिटिकल कनेक्शन के कारण जाने जाते थे। पर, सच बात तो यह है कि माता पिता के साहित्यिक और राजनीतिक संपर्क का फायदा अमिताभ को कुछ ख़ास मिल नहीं पा रहा था।

अमिताभ कलकत्ता मे 'बर्ड एंड कंपनी' में 500/- मासिक पगार पर नौकरी करते थे (हाथ में सिर्फ़ 450/- मिलते थे) पर मुंबई जाकर फिल्मी दुनिया मे हाथ भी आज़माना चाहते थे।1969 में ख्वाजा अहमद अब्बास ने 'सात हिंदुस्तानी' फिल्म में अमिताभ को कास्ट किया गया और इस तरह और अमिताभ को बॉलीवुड में पहला मौका मिला। ये एक छोटा सा रोल था जिसमें अमिताभ को किसी ने नोटिस नहीं किया। फिर अमिताभ भी एक स्ट्रगलर की तरह इस स्टूडियो से उस स्टूडियो और इस दरवाजे से उस दरवाजे घूमने लगे। 1971 से 1972 के बीच अमिताभ ने यदि कोई उल्लेखनीय फ़िल्म की तो वो थी 'आनंद' जिसमें 'काका' मुख्य कलाकार थे और अमित सह कलाकार।

'आनंद' कैसी फिल्म थी, क्या थी, कितनी हिट थी ये सब जानते हैं। पर, ये नही जानते कि उस समय अमिताभ और राजेश खन्ना के फिल्मी सफ़र में दोनों के बीच दूरी कितनी थी! 'आनंद' के लॉन्च के समय काका सुपर स्टार थे और अमिताभ स्ट्रगलर। अमिताभ के कुछ कलकत्ता के मित्र जब अमिताभ से सुनते थे कि वो काका के साथ किसी फिल्म में काम कर रहे हैं तो पहले तो वो विश्वास नहीं करते, पर बाद में जब उन्हें सच्चाई पता लगती तो वो अमित से पूछते थे कि क्या सचमुच तुमने राजेश खन्ना को इतने क़रीब से देखा है? उनके साथ काम किया है और क्या तुमने उन्हें छू कर देखा है! अमिताभ को ऐसे ऐसे सवालों से जूझना पड़ता था।

'आनंद' सुपर हिट हुई और अमिताभ को बेस्ट सपोर्टिंग एक्टर का फ़िल्मफ़ेयर पुरस्कार भी मिला, पर काका की नज़र में अमित मनहूस थे, जिनके होने से फ़िल्म असफल हो जाती है। इस सबका मकसद 'काका' की आलोचना या अमिताभ की अच्छाई दिखाना नहीं, वरन यह दिखाना है कि समय बड़ा बलवान है। दोनों बड़े कलाकार हैं और दोनो में कुछ न कुछ कमजोरियां है। इन सालों में 1971-72 में अमिताभ ने 'परवाना' और 'रेशमा और शेरा' जैसी फ़िल्में भी की और 'गुड्डी' में गेस्ट रोल किया। फिल्में तो नहीं चली पर फिल्म गुड्डी के सेट पर अमिताभ को जया मिल गई। दोनो एक दूसरे को पसंद करने लगे और मेल मुलाकातों का सिलसिला शुरू हो गया। 1972 में सुपरहिट फिल्म 'बावर्ची' में हृषिकेश मुखर्जी ने अमिताभ को फिल्म में तो नहीं लिया, पर फ़िल्म की कहानी अमिताभ से कहलवायी।

अमिताभ का आना जाना 'बावर्ची' के सेट पर लगा रहा और राजेश खन्ना कोये पसंद नही था। उन्हें लगता था कि अमिताभ मनहूस हैं और उनके आने से शायद फ़िल्म फ्लॉप हो सकती है। एक-दो बार काका ने उनका अपमान भी किया, पर ये बात गुड्डी (जया) को पसंद नही आयी और उसने जाकर काका को कान में कहा कि,तुम आज जिसका अपमान कर रहे हो एक दिन दुनिया देखेगी कि वो कहां पहुंच गया और तुम कहां रह गए। शायद उस दिन जया की वाणी में सरस्वती का वास था। समय गुजरता गया और सलीम जावेद की लेखनी और अपनी दमदार अदाकारी के दम पर अमिताभ 1973-80 के सात सालों में सुपरस्टार बन गए और फिर सदी के महानायक के खिताब से भी उन्हें नवाज़ा गया।

देश के सभी बड़े शहरों के सभी सिनेमाघरों में अमित और विजय नाम छाये रहते। वे काका को अपना ज़माना याद दिलाते रहते थे, पर काका के स्टारडम कमजोर पड़ चुका था। राजेश खन्ना अपनी रोमांटिक इमेज के साथ इस 'ऐंग्री यंग मैन' का मुकाबला नहीं कर पा रहे थे और उनका सितारा डूबता चला गया और फिर वो चरित्र अभिनेता की भूमिका निभाने लगे। ये वही दर्द की दास्तान थी जो उस आईफा अवॉर्ड वाले दिन 'काका' के मुँह से लोगों ने सुनी थी। कहते हैं कि वक्त की पहचान बहुत ज़रूरी है जो वक्त को नहीं पहचानते वक्त उन्हें पहचानने लायक नहीं छोड़ता।

स्कूल में पानी की याद दिलाएगी 'वाटर बेल'

केरल के स्कूलों में 'वाटर बेल' नाम की एक अनोखी मुहिम चल रही है। इस मुहिम में पूरे स्कूली घंटों के दौरान तीन बार बेल बजती है, जो घर जाने, क्लास चेंज होने या खाना खाने की नहीं, बल्कि पानी पीने की याद दिलाने के लिए होती है। इसमें बच्चों को पांच मिनट का समय पानी पीने के लिए दिया जाता है। बच्चों के लिए एक साथ पानी पीना भी एक खेल जैसा हो गया और उन्हें यह घंटी रास भी आ रही है। क्योंकि, बेहद असरदार यह आदत बच्चों को डिहाइड्रेशन से बचाव तथा हल्दी लाइफ स्टाइल दे रही है।

अनोखी मुहिम

रेणु जैन

(वैचारिक विषयों की लेखिका)

ये शिकायत लगातार बढ़ रही है कि बच्चे स्कूल में पानी नहीं पीते। घर से जो पानी की बॉटल उन्हें दी जाती है, वो या तो भरी हुई घर आती है या फिर बच्चा याद आने पर दो घूंट पानी पीता है। बच्चों में पानी पीने की आदत न होने के कई कारण होते हैं। लेकिन सबसे ज्यादा कारण यह है कि पानी पीना बच्चों को याद नहीं रहता। घर में तो कई सदस्य होते हैं, जो मौखिक रूप से बच्चे को पानी पीने की याद दिलाते हैं। लेकिन, बच्चे सात से आठ घंटे या उससे भी ज्यादा स्कूल में समय व्यतीत करते हैं। ऐसे में पानी की कमी से बच्चों के स्वास्थ्य पर प्रतिकूल असर पड़ सकता है। इस कारण थकान, ध्यान केंद्रित करने में मुश्किल और अन्य स्वास्थ्य समस्याओं की शिकायत बढ़ रही है। बच्चे स्कूल में पढ़ने के अलावा खेलना, एक्सरसाइज़ जैसे काम भी करते हैं। ऐसे में उन्हें पर्याप्त पानी की जरूरत होती है। इन्हीं बातों से निजात पाने के लिए केरल में 'वाटर बेल' अवधारणा को लागू किया गया।

दक्षिण कन्नड़ के उप्पिंगडी जिले के इंद्रप्रस्थ स्कूल ने सबसे पहले 'वाटर बेल' योजना को शुरू किया था। इस योजना को अब बीकानेर, रायपुर और मंडला समेत कई शहरों के स्कूल भी

चालू कर चुके हैं। हाल में हुए कई शोधों से पता चला है कि पानी का सेवन सीधे तौर पर मस्तिष्क पर असर डालता है। क्योंकि, मस्तिष्क के कुल द्रव्यमान का लगभग 75 प्रतिशत हिस्सा पानी है। एक मोटे अनुमान के आधार पर 4 से 8 साल के बच्चों के लिए 1.2 लीटर पानी 9 से 13 साल के बच्चों के लिए 1.5 लीटर तथा 14 साल के आसपास के बच्चों को 1.9 लीटर या उससे भी कुछ ज्यादा पानी की आवश्यकता हो सकती है। लेकिन, यह मौसम, पसीने,और बच्चों की शारीरिक गतिविधि पर भी घट बढ़ सकती है।

जर्मनी के 5 और 6 साल के बच्चों पर कुछ समय पूर्व एक सर्वे हुआ, जिसमें पाया गया कि जिन बच्चों ने सुबह उठने के चार घंटों की अवधि में पूरे दिन 50 प्रतिशत पानी पीया उनका दिमाग अन्य बच्चों की तुलना में समग्र रूप से कार्य करता है। एक्सपर्ट के मुताबिक पानी हार्मोन के स्तर को संतुलित करने, उचित रक्त प्रवाह बनाए रखने और मस्तिष्क में विटामिन, खनिज एवं ऑक्सीजन पहुंचाने में मस्तिष्क की कोशिकाओं और ऊतकों की मदद करता है। जो बच्चों की एकाग्रता को भी बढ़ाता है।

आहार संबंधी दिशा-निर्देशों के अनुसार घर में भी माता पिता और अन्य वयस्क बच्चों की गतिविधियों में शामिल होते हैं, तो वे हर बार पानी पीने पर उनका ध्यान आकर्षित कर सकते हैं और इसे एक खेल भी बना सकते हैं। नए शोध यह बताते हैं कि 60 प्रतिशत बच्चे तथा 75 प्रतिशत किशोर पर्याप्त मात्रा में पानी का सेवन ही नहीं करते। किशोर बच्चों में कोल्ड ड्रिंक का चस्का भी बढ़ता जा रहा है। पर, सबसे हानिकारक बात यह भी है कि इसमें शुगर की मात्रा ज्यादा होना स्वास्थ्य संबंधी अन्य परेशानियों को भी बढ़ावा देता है। आम समस्या यह भी तेजी से बढ़ रही है कि मोबाइल की लत से बच्चों को ख्याल ही नहीं रहता कि उन्हें तय समय पर पानी पीना भी है। स्कूलों की 'वाटर बेल' योजना एक स्वस्थ बच्चे के निर्माण में बहुत कारगर है। सभी स्कूलों में इस तरह के नवाचार करना बच्चों को पूरे जीवन स्वस्थ तो रखेगी ही साथ ही बचपन की सीखी आदतें ताउम्र याद रहेगी।

दृष्टिकोण

अनुपमा तिवाड़ी

साहित्यकार, शिक्षाविद व ट्री वुमन ऑफ राजस्थान

सबके होने से हम हैं

हम सब प्रकृति के हिस्से हैं जिनमें कुछ जीव धरती पर, कुछ जल में, कुछ पेड़ों पर तो कुछ अलग-अलग जगहों पर रहते हैं। हम कभी-कभी अपने को ही सबसे अधिक महत्व देने लगते हैं। हमारे आस-पास कितने ही जीव जन्तु ऐसे हैं जो प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से हमारे जीवन को सुगम बनाते हैं। अभी हाल ही में कुछ दिनों पहले एक व्यक्ति द्वारा बड़ी संख्या में कुत्तों को मार डाला गया जिसके बाद कुत्तों के काटने की खबरें सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल होने लगीं। बहुत सारे लोग उनके पक्ष में तो बहुत सारे उसके विपक्ष में आ गए और मामला कोर्ट तक पहुँच गया। हमें किसी जीव से नुकसान होने के साथ-साथ उससे होने वाले नुकसान के कारणों पर काम करना चाहिए। किसी को उसकी जगह से निष्कासित/विस्थापित करना उसके अस्तित्व को खतरे में डालना है। लावारिस जीव-जन्तु भी जिस जगह पर रहते हैं वे उस जगह के साथ तादात्म्य स्थापित कर लेते हैं। वे वहाँ रहना चाहते हैं। उन्हें वहाँ से हटाकर नए अपरिचित माहौल में रखना उनके लिए कष्टप्रद होता है। उनके लिए आवश्यक विकल्प, सुविधाएं और आवास की व्यवस्था या जिस तरह वे रह रहे थे वह व्यवस्था न छीनकर उसे सुगम बनाने की दिशा में काम होना चाहिए।

बहुत सारे लोग कुत्तों को पालते हैं लेकिन जिन कुत्तों को लोग नहीं पालते वे लावारिस सड़कों पर घूमते रहते हैं और भोजन तथा आवास के लिए दर ड्ड दर भटकते रहते हैं। लगभग 20-25 वर्ष पहले तक कस्बों और गाँवों में बहुत से घरों से पहली रोटी गाय के लिए और आखिरी रोटी कुत्ते के लिए निकालने का चलन था। लोग कूड़ा भी यहाँ-वहाँ फेंक देते थे जिसमें बचा हुआ भोजन भी होता था जिसे लावारिस पशु खा लेते थे। मजबूरी में पीने का पानी नालियों से पी लेते थे। अब रोटी निकालने का धीरे ड्ड धीरे यह चलन कम हो गया है। ऐसे में कुत्ते अपनी भूख मिटाने के लिए यदाकदा बच्चों व बड़ों पर हमला कर देते हैं। अधिकांश जीव आमतौर पर भूख और असुरक्षा के चलते किसी पर हमला करते हैं। ऐसे में उन्हें उस जगह से बलपूर्वक हटा देना एक तरह की क्रूरता ही है। उनके लिए विकल्पों की तलाश नहीं के बराबर हो पाती है। जब उनके द्वारा कुछ अप्रत्याशित घटित होता है तभी हमारा ध्यान उस ओर जाता है। उन्हें भी सभी जीवों की तरह जीवन जीने का अधिकार है। सामान्यतौर पर वे किसी को नुकसान नहीं पहुँचाते यदि उनकी ज़रूरत पूरी हो जाये तो।

कहा जाता है कि दुनिया की पहली मिठाई शहद है जो कि हमें मधुमक्खियों से मिलता है। शहद की यह ताकत है कि वह स्वास्थ्यप्रद और औषधीय होने के साथ-साथ कभी खराब होने वाला द्रव है।

कितनी ही चिड़ियाओं के फल खाने से बीज उनके पेट में चले जाते हैं और बीट के रूप में बाहर निकलते हैं। ये बीज चिड़ियों के पेट में रहने से उपचारित हो जाते हैं और उन्हें उगने की संभावनाएं बढ़ जाती हैं। कितने ही पशुओं के शरीर से माल के द्वारा बीज निकलने से नए पेड़ जन्म लेते हैं। कितनी ही बार गिलहरियाँ बीज जमीन में अपने खाने के लिए छुपा देती हैं और फिर भूल जाती हैं जिनके अंकुरण से पेड़ बन जाते हैं। तितलियों के फूलों पर बैठने से फूलों के परागकण उनकी टांगों में चिपक जाते हैं जिससे अन्य पेड़ों में परागण की क्रिया सहज रूप से हो पाती है। कुत्तों में सूँघने की शक्ति बहुत तेज होती है जिसके चलते ही सेना और पुलिस में कुत्तों को प्रशिक्षित कर के अपराधी तक पहुँचा जाता है। घरों में कुत्ते घर की सुरक्षा करते हैं और अपने मालिक के प्रति वफादारी निभाते हैं।

शहरी जानवर, पेड़-पौधों और अपने आसपास की पारिस्थितिकी को जानते-बूझते, अकारण नुकसान पहुंचाना एक तरह की असभ्यता है, हिंसा है। जल, वायु और मृदा ये तीनों ही पर्यावरण के अभिन्न अंग हैं। हम अपने जीवन को सुगम और सुरक्शित बनाना चाहते हैं तो हमें इंका संरक्षण करना होगा तभी इनसे संबंधित संसाधन हमें पर्याप्त मात्रा में मिलते रहेंगे और हम अपना जीवन अच्छे से गुजार पाएँगे। यदि वन व वन्यजीव नहीं होंगे तब जल, वायु व मृदा से मिलने वाले संसाधनों भी समाप्त हो जाएँगे और हम इनके बिना अपने जीवन की कल्पना नहीं कर सकते।

जिस तरह से भाषाएँ विलुप्त होती जा रही हैं उसी तरह से बहुत से जीव भी कम या विलुप्त होते जा रहे हैं। शहरों में अब मोर और तोते कम होते जा रहे हैं। लगभग 35-40 वर्ष पहले गिद्ध और चील दिखाई देते थे जो अब नहीं के बराबर दिखाई देते हैं। शहरों में तितलियाँ कम होती जा रही हैं। एक रिपोर्ट के मुताबिक फोन के टावर लगते रहने से मधुमक्खियाँ अपना रास्ता भूलने लगती हैं। बारिश के दिनों में निकलने वाली बीरबहूटी कम होती जा रही है। लगातार पहाड़ों और जंगलों का कटना, नदियों और तालाबों का सूखना, शहरों का विस्तार ने कई जीवों के जीवन को संकट में डाला है। हम सब प्रकृति के हिस्से हैं। पारिस्थिति के अनुसार यदि इस चेन की एक भी कड़ी टूटती है तो उसका पर्यावरण पर प्रभाव पड़ता है। जिससे मानव जीवन भी अछूता नहीं रह सकता।

एनएचएआई ने कलेक्टर को पत्र लिखकर मांगा सहयोग, सड़क सुरक्षा और यातायात सुधार पर जोर

हाइवे किनारे अतिक्रमण, मनमुताबिक डिवाइडर काटकर बना लिया रास्ता

बैतूल। नेशनल हाईवे पर लोगों ने अपनी सुविधाओं के अनुसार डिवाइडर को तोड़कर रास्ता बना लिया है। कई लोगों ने तो सडक़ किनारे अतिक्रमण तक कर लिया है। इन लापरवाहियों से भविष्य में बड़ा हादसा भी हो सकता है। जिसे दृष्टिगत रखते हुए अब एनएचएआई ने सख्त रूख अपना लिया है। एनएचएआई के अधिकारियों ने जिला कलेक्टर को पत्र लिखकर अतिक्रमण हटाने और अवैध रास्तों को बंद करने के लिए सहयोग का अनुरोध किया है। दरअसल राष्ट्रीय राजमार्ग-46 (इटारसी-बैतूल) और इंदौर-बैतूल नेशनल हाइवे-47 पर लोगों ने अपनी सुविधाओं के अनुसार डिवाइडरों को तोडक़र रास्ता बना लिया है। जहां से दोपहिया वाहन आसानी से एक लेन से दूसरी लेन पर पहुंच रहे है। ऐसे में इन मीडियन कट पर हमेशा हादसो का खतरा बना रहता है और बार लोगों की यहीं लापरवाही के कारण वाहन चालक दुर्घटनाग्रस्त भी हो चुके है। लेकिन अब एनएचएआई ने ऐसे अवैध मीडियन कट और अतिक्रमण को हटाने के लिए जिला प्रशासन से सहयोग मांगा है।

अतिक्रमण कर बना ली दुकान और ढाबे - एनएचएआई ने जिला प्रशासन को लिखे पत्र में बताया कि निरीक्षण के दौरान पाया गया कि दोनों राष्ट्रीय राजमार्गो के राइड ऑफ वे क्षेत्र में बड़ी संख्या में अस्थाई और स्थाई अतिमक्रण है। इसमें दुकानें, ढाबों, निर्माण सामग्री के ढेर, सर्विस रोड पर खड़े वाहन तथा अवैध कट शामिल है। इससे सडक़ सुरक्षा प्रभावित हो रही है और दुर्घटनाओं की आशंका लगातार बनी हुई है। प्राधिकरण के अनुसार सडक़ सुरक्षा को ध्यान

में रखते हुए अवैध मीडियन ओपनिंग को बंद करना आवश्यक है। इसके अलावा भविष्य में दुर्घटनाओं की संभावनाओं को दृष्टिगत रखते हुए जिन लोगों ने हाइवे किनारे अवैध रूप से निर्माण या मटेरियल डालकर रखा है, उन्हें भी हटाना अतिआवश्यक है। इसके लिए पूर्व में भी जिला प्रशासन एवं राजमार्ग प्राधिकरण के बीच समंवय किया गया था।

सड़क बनने से वाहनों की रफ्तार में आई तेजी- राष्ट्रीय राजमार्ग बनने के बाद सडक़ों पर ट्रैफिक बढ़ गया है। इसके अलावा वाहनों की रफ्तार भी तेज हुई है। ऐसे में यदि कोई अचानक सामने आता है तो दुर्घटना होना तय है। बताया जाता है कि लोगों ने अपनी सुविधा के अनुसार डिवाइडर को तोड़कर रास्ता बना लिया है। जिससे एक लेन से दूसरे लेन पर पहुंचते हैं। डिवाइडर तोडकर बनाए गए रास्ते से दो पहिया और चार पहिया वाहन भी निकलते हैं। इस दौरान थोडी सी लापरवाही हादसे का कारण बनते जा रही है। कई जगहों पर वाहन चालक डिवाइडर पर गाडी चढ़ाकर एक से दूसरी ओर आते-जाते है। इस दौरान हाइवे से तेज गति से गुजरने वाले वाहनों से टक्कर होती है। सबसे अधिक घटनाएं रात के समय होती है। डिवाइडर के बीच से बाइक सहित अन्य वाहन निकालने के दौरान हाइवे से गुजरने वाले वाहनों की गति का अंदाजा नहीं लग पाता है। डिवाइडर से हाइवे पर वाहन पहुंचते ही टक्कर हो जाती है।

ऐसे मामलों में कार्रवाई का प्रावधान

पत्र में यह भी बताया गया कि उच्च न्यायालय द्वारा पारित आदेशों एवं राष्ट्रीय राजमार्ग (भूमि एवं यातायात) नियंत्रण अधिनियम 2002 की धाराओं 24, 26, 27 एवं 31(2) के तहत अतिक्रमण हटाने की कार्रवाई अनिवार्य है। एनएचएआई ने स्पष्ट किया है कि बिना अनुमति किए गए अतिक्रमण एवं अवैध कट न केवल कानून का उल्लंघन है बल्कि ये गंभीर सडक़ हादसों का कारण भी बनते हैं। ऐसे मामलों में दोषियों के खिलाफ वैधानिक कार्रवाही का प्रावधान है। पत्र में स्थानीय प्रशासन और पुलिस विभाग से सहयोग लेकर प्रभावी रूप से अतिक्रमण हटाने तथा यातायात व्यवस्था को सुचारु बनाने का आग्रह किया गया है। प्राधिकरण का कहना है कि यदि समय रहते अतिक्रमण नहीं हटाए गए तो भविष्य में दुर्घटनाओं की संख्या बढ़ सकती है। इसलिए जनहित और सडक़ उपयोगकर्ताओं की सुरक्षा को प्राथमिकता देते हुए यह कार्रवाही जरूरी है।

इनका कहना है -

राष्ट्रीय राजमार्ग पर अतिक्रमण और अवैध मीडियन ओपनिंग सडक़ सुरक्षा के लिए गंभीर खतरा हैं। जिला प्रशासन के सहयोग में इन्हें हटाकर सुरक्षित और सुगम यातायात व्यवस्था सुनिश्चित की जाएगी। राष्ट्रीय राजमार्गों को अतिवामण हटाने के लिए कलेक्टर को भी पत्र लिखा है।

- मनीष मीणा,
प्रोजेक्ट डायरेक्टर, एनएचएआई

केबी सिंह सर ने बगडोना में शिक्षा की अलख जगाकर कई छात्रों का सवारा भविष्य

अंत्येष्टि आज, कर्मयोगी से हर वक्त ताजा रहेंगी सिंह सर की यादें

बैतूल/सारनी। बगडोना के ठाकुर रघुराज सिंह मेमोरियल हाईस्कूल के संचालक व वरिष्ठ पत्रकार अनिल सिंह ठाकुर के ससुर प्रसिद्ध शिक्षाविद कुंवर बहादुर सिंह (के. बी. सिंह) का सोमवार सुबह साढ़े आठ बजे दुखद निधन हो गया। वे 89 वर्ष के थे। 30 दिसंबर मंगलवार को सुबह दस बजे बगड़ोना निवास से अंतिम यात्रा शोभापुर मोक्षधाम के लिए निकलेगी। उनके निधन पर बड़ी संख्या में लोगों ने अपनी संवेदना जताते हुए श्रद्धांजलि अर्पित की है। प्रसिद्ध शिक्षाविद के.बी. सिंह का जन्म रायबरेली जिले के ग्राम कोरिहरा में 07 मार्च 1937 को हुआ था। उनकी प्राथमिक एवं हाई स्कूल तक की शिक्षा रायबरेली से तथा एम.ए. (अर्थशास्त्र) एवं बी.टी. (बैचलर ऑफ टीचर) की पढ़ाई डी. बी.एस. कॉलेज कानपुर से की। जनता उ.मा.वि. शाहपुर में 1963 से जून 1978 तक व्याख्याता, डब्लूसीएल. द्वारा संचालित उ. मा. विद्यालय, पाथाखेड़ा में जुलाई 1978 से जून 1999 तक प्राचार्य पद पर रहे। यहां उनके कड़े अनुशासन के सभी कायल थे।उनके प्राचार्य पद पर रहते हुए उनके अनेक विद्यार्थियों ने प्रशासनिक एवं राजनीति के महत्वपूर्ण पदों पर पहुंचकर स्कूल एवं उनका नाम रोशन किया। उन्होंने 1999 से अपने पिता की स्मृति में ठाकुर रघुराज सिंह मेमोरियल

हाईस्कूल बगडोना में स्कूल प्रारंभ किया। प्रसिद्ध शिक्षाविद के.बी. सिंह ने 13 वीं वर्ल्ड एजूकेशन फैलोशिप कान्फ्रेंस मुंबई में जनवरी 1986 में शामिल होकर इकोनॉमिक्स ग्रोथ एंड एजूकेशन पर शोध पत्र प्रस्तुत किया। इसके बाद 14 वीं वर्ल्ड एजूकेशन फैलोशिप कान्फ्रेंस आस्ट्रेलिया के एडिलेड में सितंबर 1988 में शामिल होकर चाइल्ड केयर एंड कम्यूनिटी पर व्याख्यान दिया। मई 1995 में बैंगलोर में शिक्षाविदों के सम्मेलन में गार्जियनशिप इन एजूकेशन पर दिए व्याख्यान को खूब ख्याति मिली. वहाँ के बुद्धिजीवियों ने उनके पांच व्याख्यान आयोजित कराए. 26 जनवरी 2009 में जिला स्तरीय गणतंत्र दिवस समारोह में कलेक्टर द्वारा सर्वश्रेष्ठ प्राचार्य पुरस्कार से उन्हें सम्मानित किया गया। वेस्टर्न कोल फील्ड (वेकोलि) के महाराष्ट्र एवं मध्यप्रदेश के कोयला उद्योग क्षेत्रों के विद्यालयों की प्रतियोगिता में निरतंर सात वर्ष तक उ.मा. वि. पाथाखेड़ा के प्रथम आने पर तत्कालीन केंद्रीय कोयला मंत्री पी.ए. संगमा द्वारा 1987 में नागपुर में सम्मानित किया गया। वे विवेकानंद स्मारक न्यास कन्याकुमारी तमिलनाडु के आजीवन सदस्य तथा मा. शिक्षा मंडल भोपाल की अर्थशास्त्र विषय समिति के सात वर्ष तक सदस्य रहे। श्री सिंह जिला साक्षरता संचालन समिति में कार्यकारिणी निदेशक एवं केंद्रीय विद्यालय सारनी की विद्यालय प्रबंध समिति में कई वर्षों तक शिक्षा विशेषज्ञ के तौर पर सदस्य रहे। शिक्षाविद के.बी. सिंह के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर उनकी बड़ी पुत्री उषा सिंह ने कर्मयोगी शीर्षक से एक पुस्तक प्रकाशित की। इस पुस्तक में उनके जीवन काल से लेकर जीवन के अंतिम पड़ाव तक का उल्लेख सचित्र किया। 100 से अधिक पेज की इस पुस्तक की प्रस्तावना प्रसिद्ध शिक्षाविद एवं ज्योतिषाचार्य कांत दीक्षित ने लिखी। शिक्षाविद के.बी. सिंह के असामयिक निधन पर बड़ी संख्या में लोगों ने अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की है।

त्रिमूर्ति नगर में हिंदू सम्मेलन का भूमि पूजन उत्साह और गरिमामय वातावरण में संपन्न हुआ

धार। संगठन की शक्ति और संकल्प की सिद्धि का अनुपम दृश्य आज त्रिमूर्ति नगर बस्ती में देखने को मिला। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के शताब्दी वर्ष के पावन उपलक्ष्य में आगामी 4 जनवरी 2026 को आयोजित होने वाले विशाल 'हिंदू सम्मेलन' का भूमि पूजन कार्यक्रम आज अत्यंत उत्साह और गरिमामय वातावरण में संपन्न हुआ।

भक्ति और शक्ति का संगम- त्रिमूर्ति महादेव मंदिर के विद्वान पंडित श्याम सुंदर दुबे के सानिध्य में पूर्ण विधि-विधान और मंत्रोच्चार के साथ भूमि पूजन किया गया। कार्यक्रम में वरिष्ठ मार्गदर्शक पंडित जगदीश चंद्र जोशी की विशेष उपस्थिति ने कार्यकर्ताओं में नव ऊर्जा का संचार किया।

नारी शक्ति की अनुकरणीय सहभागिता- आज के कार्यक्रम का सबसे प्रेरक और भावुक पक्ष माता-बहनों की गरिमामयी उपस्थिति रही। जिस प्रकार मातृशक्ति ने घर की दहलीज से निकलकर हिंदू सम्मेलन के संकल्प के लिए अपनी एकजुटता दिखाई, वह न केवल प्रशंसनीय है बल्कि यह संकेत है कि आने वाला हिंदू सम्मेलन ऐतिहासिक होगा। उनकी उपस्थिति ने सिद्ध कर दिया कि धर्म और संस्कृति के संरक्षण में नारी शक्ति सदैव अग्रणी है।

प्रबुद्धजनों की उपस्थिति

कार्यक्रम को सफल बनाने में संयोजक मंडल और नगर के गणमान्य नागरिकों ने अपनी सक्रिय भूमिका निभाई-

संयोजक मंडल- अशोक जी जैन (संयोजक), गुंजन शुक्ला, संतोष पांडे (सह-संयोजक), अशोक मनोहर जोशी (कोषाध्यक्ष), एवं रितेश शर्मा ।

युवा पार्षद अजीत जैन, जसवीर सिंह भाटी, रितेश अग्रवाल, मनीष जायसवाल, तृप्ति जायसवाल, मीना दुबे, सोनिया जोशी, गोपाल दास गुप्ता, गरिमा गुप्ता, संजय शर्मा, ईश्वर वैष्णव ओम सोलंकी सहित मगजपुरा, श्री कृष्णा नगर, शरद नगर, भोज नगर और तिरुपति नगर के अनेक धर्मप्रेमी बंधु।

यह केवल एक आयोजन की शुरुआत नहीं, बल्कि हिंदू समाज की समरसता और एकजुटता का शंखनाद है। आज भूमि पूजन में उमड़ा यह जनसैलाब आने वाले भव्य सम्मेलन की सफलता की पहली सीढ़ी है।

60 प्लस लालबाग ग्रुप धार ने ओम पर्वत पर बैठक कर किया विमर्श

धार। 60 प्लस लालबाग ग्रुप धार ने ओम पर्वत पर बैठक कर किया विमर्श । ग्रुप के संरक्षक व महामंत्री महेश माहेश्वरी ने बताया कि ओम पर्वत धार पर ग्रुप की एक बैठक कार्यकारी अध्यक्ष श्याम लाल अग्रवाल के आतिथ्य में संपन्न हुई। बैठक में वर्ष 2026 में आने वाले बजट के ऊपर सरकार का ध्यान आकर्षण करने के लिए चर्चा हुई, बांग्लादेश में हिंदुओं के ऊपर हो रहे अत्याचार व लूटमार आगजनी पर अंकुश लगाने हेतु अंतर्राष्ट्रीय दबाव बनाया जाए, बांग्लादेश को सबक सिखाया जाए जैसे विषयों पर विमर्श किया गया। ग्रुप का वार्षिक खर्च व आवक एवं लालबाग में तुलसी झील चौराहा, सुंदर व साफ सफाई की ओर नगरपालिका का ध्यान दिलाया जाए पर भी विचार विमर्श किया गया।

कवि नंदकिशोर उपाध्याय जी ने अपनी चार लाइनों में लालबाग को कैसे

सुंदर बनाए सुझाया। अशोक कासलीवाल ने ओम पर्वत के पास स्थित पहाड़ी पर पौधरोपण का सुझाव दिया कि ग्रुप के माध्यम से सरकार को ध्यान दिलाया जाए। इस अवसर पर ग्रुप के महेश महेश्वरी, श्याम अग्रवाल, नारायण जोशी, मुकेश पिपलोदिया, नंदकिशोर उपाध्याय, हरिप्रकाश मिश्रा, जेपी सिंह,मनीष ठाकुर मोहनलाल परमार, राधेश्याम गोयल, प्रवीण गोद, अशोक कासलीवाल, राजन जैन, गणेश अग्रवाल ,रमेश जोशी, कन्हैया लाल यादव, प्रकाश टेलर, सुरेश पवार ओम, जय अग्रवाल आदि सदस्य उपस्थित थे। सबने मनीष भाई को जन्मदिन की बधाई दी और सहभोज का आनंद लिया। जानकारी नंद किशोर उपाध्याय ने दी।

कुशाभाऊ ठाकरेजी की पुण्यतिथि पर पैतृक निवास पर पुष्पांजलि अर्पित कर नमन किया

धार। भाजपा के पितृ पुरुष, कुशल संगठक एवं पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष कुशाभाऊ जी ठाकरे की पुण्यतिथि पर 28 दिसंबर को धार शहर की रघुनाथपुरा स्थित उनके पैतृक निवास पर भारतीय जनता पार्टी किसान मोर्चा के प्रदेश उपाध्यक्ष राजेंद्र सिंह राजपूत, प्रदेश महामंत्री दिलीप पटौंदिया, पूर्व संभागीय सह मीडिया प्रभारी ज्ञानेंद्र त्रिपाठी, किसान मोर्चा जिला अध्यक्ष बृजेंद्र सिंह चौहान, किसान मोर्चा मीडिया प्रभारी रितेश अग्निहोत्री, ठाकरे जी के भतीजे प्रशांत ठाकरे, विक्की जैन व परिजनो पितृ पुरुष के चित्र पर श्रद्धापूर्वक पुष्पांजलि अर्पित कर नमन किया।

हर हर गाय, घर-घर गाय के संकल्प के साथ भाजपा किसान मोर्चा ने किया गो पूजन एवं कार्यक्रम में मन की बात को सुना

धार। हर हर गाय,घर-घर गाय के संकल्प के साथ भाजपा किसान मोर्चा प्रदेश उपाध्यक्ष राजेंद्र सिंह राजपूत द्वारा संचालित गौशाला दर्शन यात्रा का विशेष पड़ाव श्री गणेश बड़केश्वर महादेव मंदिर गौशाला धाम प्रांगण भोपावर सरदारपुर मे रहा जहां किसान मोर्चा धार जिला अध्यक्ष बृजेंद्र सिंह चौहान के नेतृत्व में जिला स्तरीय कार्यक्रम आयोजित किया गया। यहां पहुंचकर श्री राजपूत ने श्रद्धा भाव से गो पूजन किया तथा गौरज प्राप्त कर समाज में गौ सेवा और संरक्षण का संदेश दिया। इस अवसर पर उन्होंने प्रदेश सरकार द्वारा गौ सांभर और पशुपालन से जुड़ी योजनाओं की जानकारी भी उपस्थित लोगों को दी। गौशाला परिसर में उपस्थित को भक्तों ने सेवा गतिविधियां व स्वच्छता अभियान में भी सहभागिता की एवं गौ माता को गुड प्रसादी खिलाई गई।तत्पश्चात भारतीय जनता पार्टी किसान मोर्चा द्वारा टिफ़िन पार्टी के साथ बूथ क्रमांक 229 ,230 एवं 231 पर मन की बात कार्यक्रम सुना गया। प्रारंभ में स्वागत भाषण किसान

मोर्चा के जिला अध्यक्ष बृजेंद्र सिंह चौहान ने दिया। कार्यक्रम में किसान मोर्चा के प्रदेश महामंत्री दिलीप पटोदिया,भाजपा के वरिष्ठ नेता एवं पूर्व संभागीय सह मीडिया प्रभारी ज्ञानेंद्र त्रिपाठी, पूर्व विधायक वेल सिंह भूरिया,किसान मोर्चा के महामंत्री रतन लाल पाटीदार व विष्णु चौधरी, उपाध्यक्ष राजेश वर्मा व विकास शर्मा, जिला मंत्री अनिरुद्ध सिँह ठाकुर, शांतिलाल शर्मा, बलराम मकवाना, जीवन चौधरी, ओंकार जाट सरदारपुर मण्डल अध्यक्ष, भाजपा जिला उपाध्यक्ष रोमा धर्मेन्द्र मंडलोई, जिला मंत्री कमल यादव, वरिष्ठ नेता राजेंद्र गर्ग, नवीन बानिया ,धर्मेन्द्र मंडलोई, जिला पंचायत सदस्य सुनील गामड़ व गायत्री राजपुरोहित,

विजय पाटीदार मण्डल अध्यक्ष किसान मोर्चा, राहुल राजपूत राजगढ़ मण्डल अध्यक्ष किसान मोर्चा, झमक चौधरी बरमंडल मण्डल अध्यक्ष, प्रेम नारायण पाटीदार सरदारपुर किसान मोर्चा मंडल अध्यक्ष,मांगीलाल कुल्हारा अमझेरा मण्डल अध्यक्ष मौजूद रहे। कार्यक्रम का संचालन मंडल अध्यक्ष ओंकार लाल जाट ने किया एवं आभार जिला उपाध्यक्ष रोमा मंडलोई ने माना। जानकारी किसान मोर्चा जिला मीडिया प्रभारी रितेश अग्निहोत्री ने दी।

विजेता खिलाड़ी महिला सशक्तिकरण का प्रतीक : राज्यपाल पटेल

राष्ट्रीय टीम की प्रदेश की खिलाड़ियों ने लोकभवन में की सौजन्य भेंट

राज्यपाल ने किया ब्लाइंड महिला टी-20 वर्ल्ड कप-2025 की विजेता खिलाड़ियों का सम्मान

भोपाल (नप्र)। राज्यपाल मंगुभाई पटेल ने कहा कि ब्लाइंड महिला टी-20 वर्ल्ड कप - 2025 की विजेता टीम की बेटियां महिला सशक्तिकरण का प्रतीक है। कार्यक्रम में विजेता होना दिव्यांगजनों के हौसलें और दिव्यता का उत्कृष्ट उदाहरण है। बेटियों की उपलब्धि प्रत्येक देशवासी के लिए प्रेरणा और गर्व की बात है। उन्होंने कहा कि दिव्यांग महिला खिलाड़ियों ने मध्यप्रदेश और देश का नाम विश्व स्तर पर रोशन किया है।

राज्यपाल श्री पटेल सोमवार को राष्ट्रीय ब्लाइंड महिला टी-20 टीम की प्रदेश की खिलाड़ी सुश्री सुषमा पटेल, सुश्री सुनीता सराठे और सुश्री दुर्गा येवले से लोकभवन में चर्चा कर रहे थे। राज्यपाल श्री पटेल ने तीनों खिलाड़ियों का शॉल और स्मृति चिन्ह भेंट कर अभिनंदन किया। उन्होंने खिलाड़ियों और उनके कोच का भी उत्साहवर्धन किया। राज्यपाल श्री पटेल ने उन्हें बधाई और उज्जवल भविष्य की शुभकामनाएं दी।

भारतीय महिला (ब्लाइंड) क्रिकेट टीम ने 23 नवम्बर 2025 को कोलंबो में आयोजित टी-20 वर्ल्डकप के फ़ाइनल मैच में नेपाल को हराकर ऐतिहासिक जीत दर्ज की थी। इस राष्ट्रीय टीम में मध्यप्रदेश के नर्मदापुरम जिले की सुश्री सुनीता सराठे, दमोह ज़िले की सुश्री सुषमा पटेल और बैतुल ज़िले की सुश्री दुर्गा येवले प्रतिभावान खिलाड़ी शामिल रहीं हैं।

2 वर्षों में उद्यानिकी रकबे में हुई सवा 3 लाख हैक्टेयर की वृद्धि

सामाजिक न्याय से लेकर कृषि-उद्यानिकी तक समावेशी विकास की रखी मजबूत नींव: कुशवाहा

म.प्र. उद्यानिकी के क्षेत्र में देश का अग्रणी राज्य

भोपाल (नप्र)। विकास एवं सेवा के दो वर्ष-सामाजिक न्याय, दिव्यांगजन कल्याण एवं उद्यानिकी और खाद्य प्रसंस्करण मंत्री श्री नारायण सिंह कुशवाह ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के विजन-2047 और मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में मध्यप्रदेश को कृषि एवं उद्यानिकी के क्षेत्र में अग्रणी राज्य बनाने की दिशा में ठोस प्रयास किए जा रहे हैं। सामाजिक न्याय से लेकर कृषि-उद्यानिकी तक, समावेशी विकास की मजबूत नींव है। उन्होंने प्रदेश में गत 2 वर्षों में उद्यानिकी और सामाजिक न्याय के क्षेत्र में हुए उपलब्धियों, नवाचारों और आगामी 3 वर्षों में विभाग की कार्य योजनाओं के संबंध में अवगत कराया।

उद्यानिकी में रिकॉर्ड वृद्धि- गत दो वर्षों में उद्यानिकी फसलों का रकबा 25.12 लाख हेक्टेयर से बढ़कर 28.29 लाख हेक्टेयर हो गया है। इसी अवधि में उत्पादन 389.10 लाख मीट्रिक टन से बढ़कर 425.68 लाख मीट्रिक टन पहुंच गया है। प्रदेश की प्रति हेक्टेयर उत्पादकता

15.08 मीट्रिक टन, राष्ट्रीय औसत से अधिक है। मध्यप्रदेश मसाला उत्पादन में प्रथम, पुष्प उत्पादन में द्वितीय, सब्जी उत्पादन में तृतीय और फल उत्पादन में चतुर्थ स्थान पर है।

जीआई टैग और सेंटर ऑफ एक्सीलेंस- रीवा का सुंदरजा आम और रतलाम का रियावन लहसुन जीआई टैग प्राप्त कर चुके हैं। प्रदेश की 15 फसलों का जीआई पंजीयन कराया गया है। इजराइल के तकनीकी सहयोग से मुरैना में सेंटर ऑफ एक्सीलेंस स्थापित किया गया है, जबकि छिंदवाड़ा और हरदा में नए सीओई विकसित किए जा रहे हैं।

खाद्य प्रसंस्करण और नवाचार- प्रधानमंत्री सूक्ष्म खाद्य उद्यम उन्नयन योजना के अंतर्गत 8,198 ऋण प्रकरण स्वीकृत किए गए हैं और 3,113 उद्यमियों को 108.64 करोड़ रुपये की अनुदान सहायता प्रदान की गई है। सेंसर आधारित स्वचलित फर्टिगेशन, मखाना क्षेत्र विस्तार, एग्जोटिक सब्जी क्लस्टर, हाईटेक नर्सरी और इंक्यूबेशन सेंटर जैसे नवाचार लागू किए जा रहे हैं।

आगामी तीन वर्षों की कार्ययोजना- आगामी तीन वर्षों में उद्यानिकी फसलों का रकबा 33.39 लाख हेक्टेयर तक बढ़ाने, 15 हजार सूक्ष्म खाद्य प्रसंस्करण इकाइयों की स्थापना और 25 फसलों को जीआई टैग दिलाने का लक्ष्य रखा गया है।

वर्ष 2026: कृषि वर्ष- मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव द्वारा वर्ष 2026 को कृषि वर्ष घोषित किया गया है। इसके अंतर्गत उद्यानिकी को बढ़ावा, खाद्य प्रसंस्करण से मूल्य संवर्धन और रोजगार सृजन के माध्यम से किसानों की आय में उल्लेखनीय वृद्धि सुनिश्चित की जाएगी।

संक्षिप्त समाचार

श्रद्धांजलि अर्पित कर शोक संवेदनाएं व्यक्त की

विदिशा (निप्र)। पशुपालन एवं डेयरी विभाग (स्वतंत्र प्रभार) राज्यमंत्री और जिले के प्रभारी मंत्री श्री लखन पटेल ने आज ग्राम हरिपुर में बासौदा विधायक श्री हरिसिंह रघुवंशी के निज निवास पर पहुंचकर श्रद्धांजलि अर्पित कर शोक संवेदनाएं व्यक्त की है। बासौदा विधायक श्री रघुवंशी जी की पूज्य माताजी स्वर्गीय श्रीमती कमलादेवी रघुवंशी के देवलोकगमन पर गहन शोक संवेदनाएं व्यक्त कीं। इस अवसर पर उन्होंने दिवंगत आत्मा को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए शोकाकुल परिवार से भेंटकर ढांढस बंधाया ओर ईश्वर से दिवंगत आत्मा की शांति एवं परिवार को यह दुःख सहन करने की शक्ति प्रदान करें कि प्रार्थना की हैं

अपर कलेक्टर श्री वृंदावन सिंह ने राजस्व न्यायालयों का किया निरीक्षण एसआईआर के संबंध में दिये निर्देश

सीहोर (निप्र)। अपर कलेक्टर श्री वृंदावन सिंह द्वारा राजस्व न्यायालय अनुविभाग बुधनी, तहसील बुधनी तथा टप्पा तहसील शाहगंज का निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के दौरान उन्होंने न्यायालयों में लंबित प्रकरणों की स्थिति की समीक्षा की और अधिकारियों को प्रकरणों का शीघ्र, निष्पक्ष एवं समयबद्ध निराकरण सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। अपर कलेक्टर श्री सिंह ने कहा कि राजस्व न्यायालयों में आम नागरिकों से जुड़े मामलों का त्वरित समाधान प्रशासन की प्राथमिकता है। उन्होंने निर्देशित किया कि प्रत्येक प्रकरण की नियमित समीक्षा करते हुए अनावश्यक विलंब को रोका जाए तथा कार्यवाही में पारदर्शिता बनाए रखी जाए। निरीक्षण के दौरान एसआईआर (विशेष गहन पुनरीक्षण) के अंतर्गत मतदाता सूची प्रशिक्षण संबंधी कार्यों की भी समीक्षा की गई। इस अवसर पर बीएलओ (बूथ लेवल अधिकारी) एवं सहायक रजिस्ट्रीकरण अधिकारियों को आवश्यक दिशा निर्देश दिये। अपर कलेक्टर श्री वृंदावन सिंह ने संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिए कि अनमैप मतदाताओं को समय पर नोटिस जारी कर दावा आपत्ति प्राप्त करने के निर्देश दिये। उन्होंने कहा कि इस कार्य में मतदाताओं की पूरी मदद की जाये। यह सुनिश्चित किया जाये कि कोई भी पात्र उम्मीदवार का नाम मतदाता सूची से छूटे नहीं।

विकसित भारत-जी राम जी, अधिनियम 2025 के संबंध में आयोजित की गई विशेष ग्राम सभाएं

नर्मदापुरम (निप्र)। जिले की समस्त ग्राम पंचायतों में विकसित भारत रोजगार और आजीविका के लिये गारंटी मिशन (ग्रामीण) वीवी-जी राम जी अधिनियम, 2025 के संबंध में ग्राम सभाओं का आयोजन किया गया। उल्लेखनीय है कि भारत सरकार द्वारा राष्ट्रीय विज़न विकसित भारत @ 2047 के परिप्रेक्ष्य में महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी एक्ट 2005 (मनरेगा) के स्थान पर (विकसित भारत-जी राम जी) अधिनियम 2025 लागू किया गया है। उक्त अधिनियम के महत्वपूर्ण प्रावधानों एवं प्रदत्त कानूनी अधिकारों के संबंध में व्यापक जागरूकता लाने के उद्देश्य से प्रत्येक ग्राम पंचायत में विशेष ग्राम सभाओं का आयोजन किया गया। जिले की सभी 427 ग्राम पंचायतों में ग्राम सभाएं आयोजित की गई ग्राम सभाओं में ग्रामीण श्रमिकों, महिलाओं, अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति परिवारों एवं कमजोर वर्गों की सक्रीय भागीदारी सुनिश्चित करवायी गई। ग्राम सभाओं में की गई कार्यवाही कर अभिलेखीकरण किया गया। ग्राम सभाओं में जियो टेग फोटो एवं वीडियो ग्राफ्स के साथ विशेष ग्राम सभा संबंधी गतिविधियों / विवरण/ कार्यवृत्त की रिअल टाइम अपलोडिंग पंचायत निर्णय ऐप के माध्यम से की गई साथ ही नये अधिनियम का प्रचार-प्रसार कर अधिनियम की विशेषताऐं एवं अधिनियम के तहत श्रमिकों को मिलने वाली जानकारी ग्रामीणों को दी गई।

सिविल अस्पताल बरेली में सीएमएचओ की उपस्थिति में बैठक आयोजित

रायसेन (निप्र)। कलेक्टर श्री अरूण कुमार विश्वकर्मा द्वारा गत दिवस आयोजित जिला स्वास्थ्य समिति की बैठक में सीएमएचओ और सभी बीएमओ को अधीनस्थ अमले की बैठक आयोजित कर स्वास्थ्य सेवाओं और अभियानों की प्रगति की समीक्षा करते हुए सुधार लाने के निर्देश दिए गए थे। कलेक्टर श्री विश्वकर्मा के निर्देशों के परिपालन में शनिवार को सिविल अस्पताल बरेली में सीएमएचओ डॉ एचएन मांडरे की उपस्थिति में बीएमओ डॉ हेमन्त यादव द्वारा समस्त सुपरवाईजर, सीएचओ, एएनएम, आशा सहयोगियों की बैठक आयोजित की गई।

बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ योजना अंतर्गत नवजात बालिकाओं को स्वागत लक्ष्मी बेबी किट वितरित

विदिशा (निप्र)। कलेक्टर श्री अंशुल गुप्ता के निर्देशन में आज जिला चिकित्सालय के प्रस्तुति विभाग में बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ योजना अंतर्गत नवजात बालिकाओं को स्वागत लक्ष्मी बेबी किट वितरण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य संस्थागत प्रसव को प्रोत्साहित करना, कन्या शिशु के जन्म को बढ़ावा देना तथा कन्या भ्रूण हत्या की रोकथाम हेतु समाज में सकारात्मक जागरूकता उत्पन्न करना रहा। यह पहल बालिका संरक्षण की दिशा में एक महत्वपूर्ण प्रयास है। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में जिला पंचायत अध्यक्ष श्रीमती गीता कैलाश रघुवंशी, नगर पालिका अध्यक्ष श्रीमती प्रीति राकेश शर्मा एवं श्रीमती सरोज मुकेश टंडन उपस्थित रहीं। सभी अतिथियों द्वारा नवप्रसूता माताओं को स्वागत लक्ष्मी बेबी किट का वितरण अपने हाथों से किया गया तथा कन्या के जन्म पर शुभकामनाएं प्रदान की गईं। अतिथियों ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि बेटी समाज की अमूल्य धरोहर है और उसके संरक्षण, शिक्षा एवं सशक्तिकरण के लिए सामूहिक प्रयास आवश्यक हैं। बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ योजना एक सामाजिक जनआंदोलन है, जिसमें शासन के साथ-साथ समाज की सक्रिय भागीदारी अत्यंत आवश्यक है। बेबी किट वितरण से नवजात शिशु एवं माताओं को प्रारंभिक आवश्यक सामग्री उपलब्ध होती है, साथ ही यह संदेश भी जाता है कि सरकार बेटी के जन्म को सम्मान और समर्थन देती है।

कार्यक्रम का आयोजन एवं समन्वय महिला एवं बाल विकास विभाग की जिला कार्यक्रम अधिकारी श्रीमती विनीता लोढ़ा के मार्गदर्शन में किया गया। इस अवसर पर सहायक संचालक श्री विवेक शर्मा, संरक्षण अधिकारी श्री संतोष रघुवंशी, जिला चिकित्सालय का चिकित्सकीय एवं नर्सिंग स्टाफ सहित संबंधित विभागों के अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित रहे।महिला एवं बाल विकास विभाग, विदिशा द्वारा इस प्रकार के कार्यक्रम निरंतर आयोजित किए जा रहे हैं, जिससे लिंगानुपात में सुधार, संस्थागत प्रसव में वृद्धि तथा बालिकाओं के प्रति सकारात्मक सोच को सुदृढ़ किया जा सके। कार्यक्रम का समापन विभागीय अधिकारियों द्वारा धन्यवाद ज्ञापन के साथ किया गया।

वन ग्रामों का संपरिवर्तन शासन की महत्वपूर्ण प्राथमिकताओं में शामिल है- कलेक्टर

सीहोर (निप्र)। कलेक्टर श्री बालागुरू के. ने इछावर तहसील के ग्राम ईटखेड़ा एवं नींबूखेड़ा में वन ग्रामों के संपरिवर्तन की चल रही कार्यवाही तथा ग्राम गाजीखेड़ी में वन खण्डों के व्यवस्थापन संबंधी कार्यवाही का निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने मौके पर उपस्थित अधिकारियों से कार्यों की प्रगति की जानकारी ली और प्रभावी क्रियान्वयन के निर्देश दिए। निरीक्षण के दौरान कलेक्टर ने कहा कि वन ग्रामों का संपरिवर्तन शासन की महत्वपूर्ण प्राथमिकताओं में शामिल है, जिससे वन क्षेत्रों में निवासरत ग्रामीणों को राजस्व ग्रामों के समान मूलभूत सुविधाएं उपलब्ध कराई जा सकें। उन्होंने अधिकारियों को निर्देशित किया कि संपरिवर्तन की प्रक्रिया में पारदर्शिता रखते हुए सभी आवश्यक प्रक्रियाएं समय-सीमा में पूर्ण की जाएं। कलेक्टर श्री बालागुरू ने वन खण्डों के वैज्ञानिक एवं सुनियोजित व्यवस्थापन पर विशेष जोर देते हुए कहा कि वन संसाधनों का संरक्षण करते हुए आजीविका के अवसर भी विकसित किए जाएं। उन्होंने स्पष्ट किया कि वन एवं राजस्व विभाग आपसी समन्वय से कार्य करें, ताकि सीमा निर्धारण, अभिलेखों के आदान-प्रदान एवं तकनीकी प्रक्रियाओं में किसी प्रकार की बाधा न आए। उन्होंने लंबित सामुदायिक वनाधिकार दावों के शीघ्र निराकरण के निर्देश देते हुए कहा कि वनवासियों को उनके अधिकार मिलना चाहिए। इसके लिए चरणबद्ध कार्ययोजना तैयार कर प्रत्येक चरण के लिए एक स्पष्ट समय-सीमा तय की जाए और प्रगति की नियमित समीक्षा की जाए।

सामाजिक संवेदनशीलता की मिसालर - विमुक्त जाति कन्या आश्रम शाला लटेरी की 50 बालिकाओं को इनर वितरित

विदिशा (निप्र)। समाजसेवी श्री बल किशन प्रजापति, निवासी बमोरी शाला द्वारा विमुक्त जाति कन्या आश्रम शाला लटेरी की 50 बालिकाओं को आवश्यकता अनुसार इनर (अंतर्वस्त्र) का वितरण किया गया। यह सराहनीय पहल बालिकाओं की गरिमा, स्वच्छता एवं स्वास्थ्य को ध्यान में रखते हुए की गई। इस अवसर पर श्री बल किशन प्रजापति ने कहा कि बालिकाओं की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति समाज की सामूहिक जिम्मेदारी है। ऐसे छोटे-छोटे प्रयास न केवल बालिकाओं के आत्मसम्मान को बनाए रखते हैं, बल्कि उनमें सुरक्षा और आत्मविश्वास की भावना भी विकसित करते हैं।

आश्रम शाला के स्टाफ एवं शिक्षकों ने इस मानवीय सहयोग के लिए श्री प्रजापति के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कहा कि इस प्रकार के सहयोग से बालिकाओं को संबल मिलता है और उनका मनोबल बढ़ता है। कार्यक्रम के दौरान बालिकाएं भी प्रसन्न एवं उत्साहित नजर आईं। यह पहल समाज में सकारात्मक संदेश देती है कि जरूरतमंद बालिकाओं के कल्याण हेतु आगे आकर सहयोग करना ही सच्ची सामाजिक सेवा है।

इटारसी से स्कूटी में रखकर शराब लाने वाला पकड़ाया

नर्मदापुरम में 310 पाव देसी मदिरा प्लेन जब्त; 23 हजार 250 रुपए का माल

नर्मदापुरम (निप्र)। नर्मदापुरम जिले में अवैध शराब बिक्री और तस्करी का कारोबार थमने का नाम नहीं ले रहा है। माफिया और तस्कर दूसरे शहरों और गांवों की दुकानों से शराब लाकर नर्मदापुरम शहर में बेच रहे हैं। आबकारी और पुलिस विभाग की लगातार कार्रवाई के बावजूद तस्कर चोरी-छिपे शराब की सप्लाई कर नशेड़ियों को आसानी से उपलब्ध करा रहे हैं। इसी कड़ी में शनिवार को आबकारी विभाग ने डबल फाटक क्षेत्र में एक शराब तस्कर को गिरफ्तार किया है।

इटारसी से खरीदकर नर्मदापुरम ला रहा था शराब

सहायक जिला आबकारी अधिकारी राहुल ढोके ने बताया कि आरोपी आकाश पिता मनोहर लाल जाटव निवासी नर्मदापुरम को डबल फाटक के पास पकड़ा गया। उसके पास से 310 पाव देसी मदिरा प्लेन जब्त की गई है, जिसकी कीमत करीब 23 हजार 250 रुपए आंकी गई है। पूछताछ में आरोपी ने बताया कि वह इटारसी की अलग-अलग शराब दुकानों से पाव

खरीदकर उन्हें एकत्र करता था और फिर नर्मदापुरम में बेचने के लिए लाता था। आरोपी का कहना था कि इटारसी में शराब सस्ते दामों पर मिल जाती है।

एक्टिवा से कर रहा था तस्करी

आबकारी वृत्त प्रभारी हेमंत चौकसे के अनुसार आरोपी एक्टिवा वाहन से इटारसी बायपास रोड होते हुए नर्मदापुरम में प्रवेश कर रहा था। डबल फाटक के पास आबकारी मुख्य आरक्षक रघुवीर निमोदा और आरक्षक धर्मेंद्र बारंगे ने उसे रोका। तलाशी लेने पर एक्टिवा के आगे रखे झोले में 310 पाव देसी शराब बरामद हुई।

93 हजार से अधिक की कुल जब्ती

कार्रवाई के दौरान शराब के साथ आरोपी की एक्टिवा गाड़ी भी जब्त की गई है। शराब और वाहन की कुल कीमत करीब 93 हजार 250 रुपए बताई जा रही है। आरोपी के खिलाफ मध्यप्रदेश आबकारी अधिनियम 1915 की धारा 34(2) के तहत प्रकरण दर्ज कर लिया गया है।

अवैध शराब नेटवर्क की जांच जारी

आबकारी विभाग का कहना है कि आरोपी से पूछताछ कर यह पता लगाया जा रहा है कि वह कब से तस्करी कर रहा था और इसके पीछे कोई संगठित नेटवर्क तो नहीं है। जिले में अवैध शराब के खिलाफ आगे भी सख्त कार्रवाई जारी रहेगी।

विधायक डॉ चौधरी ने गैरतगंज में 110.02 लाख रू लागत से बनने वाले विश्रामगृह का किया भूमिपूजन

रायसेन (निप्र)। रायसेन जिले के गैरतगंज में आयोजित कार्यक्रम में सांची विधानसभा क्षेत्र के विधायक डॉ प्रभुराम चौधरी द्वारा 110.02 लाख रू लागत से बनने वाले 2 सूट विश्रामगृह निर्माण कार्य का भूमिपूजन किया गया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि इस विश्रामगृह के बनने से अतिथियों के रूकने एवं बैठकों के आयोजन में सुविधा होगी। विधायक डॉ चौधरी ने कहा कि मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव के नेतृत्व में हमारा मध्यप्रदेश, आत्मनिर्भर प्रदेश बनने की ओर तेजी से अग्रसर है। चाहे शिक्षा की बात हो, स्वास्थ्य की बात हो, सड़क की बात हो, सिंचाई की बात हो... हर क्षेत्र में लगातार विकास और निर्माण कार्य किए जा रहे हैं। सरकार द्वारा आद्योसंरचना के कार्य भी तेजी से किए जा रहे हैं। गैरतगंज में 350 वर्ग मीटर में बनने वाले इस विश्रामगृह के भू-तल पर व्हीआईपी सूट, ड्राईंग हॉल, डायनिंग हॉल, किचिन स्टोर रूम सहित और डोरमेट्री का निर्माण होगा। इस अवसर पर स्थानीय जनप्रतिनिधि और अधिकारी भी उपस्थित रहे।

बाउन्ड्रीवॉल निर्माण कार्य का किया भूमिपूजन : रायसेन स्थित शासकीय कन्या महाविद्यालय में शनिवार को आयोजित कार्यक्रम में सांची विधानसभा क्षेत्र के विधायक डॉ प्रभुराम चौधरी द्वारा शासकीय कन्या महाविद्यालय में 71.31 लाख रू लागत से बनने वाली 600 मीटर लम्बी बाउण्ड्रीवॉल एवं गेट निर्माण कार्य का भूमिपूजन किया गया।

इसी प्रकार स्वामी विवेकानंद शासकीय महाविद्यालय रायसेन में आयोजित कार्यक्रम में 56 लाख रू लागत से बनने वाली बाउण्ड्रीवॉल का भूमिपूजन किया गया। इस अवसर पर उन्होंने उपस्थित जनसमूह को संबोधित करते हुए कहा कि इस निर्माण के पूर्ण हो जाने से विद्यार्थियों की सुरक्षा, सुविधा एवं शैक्षणिक वातावरण और अधिक सुदृढ़ होगा। छात्र-छात्राओं को सुरक्षित, सम्मानजनक और अनुकूल वातावरण उपलब्ध कराना सरकार की प्राथमिकता है। विधायक डॉ चौधरी ने कहा कि सरकार द्वारा विद्यार्थियों के लिए, युवाओं के लिए अनेक छात्रवृत्ति योजनाएं संचालित की जा रही हैं। सरकार द्वारा प्रतिभाशाली विद्यार्थियों को विदेश अध्ययन हेतु भी छात्रवृत्ति प्रदान की जाती है। इसके साथ ही अन्य छात्रवृत्ति योजनाएं भी प्रदान की जा रही हैं। विधायक डॉ चौधरी ने सरकार की अन्य योजनाओं तथा क्षेत्र में किए जा रहे विकास कार्यों का भी उल्लेख किया।

विकसित भारत अभियान अंतर्गत जल उत्सव एवं जल जीवन मिशन पर सेमिनार आयोजित

विदिशा (निप्र)। पीएमसीओई शासकीय महाविद्यालय विदिशा द्वारा शनिवार को विकसित भारत अभियान योजना के अंतर्गत जल उत्सव एवं जल जीवन मिशन पर आधारित एक जागरूकता सेमिनार का सफल आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य जल संरक्षण, सतत जल प्रबंधन तथा प्रत्येक घर तक सुरक्षित पेयजल उपलब्ध कराने के महत्व के प्रति विद्यार्थियों में जागरूकता बढ़ाना रहा। कार्यक्रम में पीआई स्टाफ से सम्मानित अतिथि श्री अविनाश पाटले की गरिमामयी उपस्थिति रही। उनके मार्गदर्शन एवं प्रेरक उद्बोधन से कार्यक्रम और अधिक प्रभावशाली एवं ज्ञानवर्धक बना। इस अवसर पर उन्होंने विद्यार्थियों को जल संसाधनों के संरक्षण, विवेकपूर्ण उपयोग तथा राष्ट्र निर्माण में युवाओं की भूमिका के महत्व से अवगत कराया।

इस सेमीनार का आयोजन डॉ. राज कमल प्रजापति द्वारा किया गया, जिनके नेतृत्व में कार्यक्रम को सुव्यवस्थित ढंग से संपन्न किया गया। कार्यक्रम में लगभग 25 एनसीसी कैडेट्स सहित अन्य विद्यार्थियों ने सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित की। एनसीसी प्रथम वर्ष के कैडेट विशाल गुर्जर ने जल संरक्षण विषय पर अपने विचार साझा करते हुए सभी को जल बचाने के लिए प्रेरित किया।

तवा पुल के 100 फीट दायरे में अवैध रेत उत्खनन

दिन में ट्रॉली, रात में डंपरों से परिवहन; पुल के पिलरों को खतरा

नर्मदापुरम (निप्र)। नर्मदापुरम में पिपरिया स्टेट हाईवे पर माखननगर स्थित तवा पुल के आसपास बड़े पैमाने पर अवैध रेत उत्खनन किया जा रहा है। नियमों को दरकिनार कर रेत माफिया पुल के 30 मीटर (करीब 100 फीट) के प्रतिबंधित दायरे से रेत निकालकर परिवहन कर रहे हैं। दिन में ट्रैक्टरों से और रात में डंपरों के जरिए रेत ढोई जा रही है, लेकिन खनिज विभाग और राजस्व विभाग की ओर से इस पर कोई कार्रवाई नजर नहीं आ रही है। नियमों के अनुसार नदी पर बने पुल के 100 से 200 फीट के दायरे में रेत उत्खनन अवैध और प्रतिबंधित है। ऐसा इसलिए क्योंकि रेत निकालने से नदी तल कमजोर होता है और पुल के पिलरों को नुकसान पहुंचने का खतरा बढ़ जाता है। इसके बावजूद तवा पुल के पास से लगातार रेत निकाली जा रही है, जिससे पुल की सुरक्षा को लेकर चिंता बढ़ गई है।

ब्रिज एक्सपर्ट ने जताई हादसे की आशंका : ब्रिज एक्सपर्ट और पीडब्ल्यूडी के सेवानिवृत्त अधिकारी नागेश दुबे ने बताया कि नियमों के तहत किसी भी पुल के 100 फीट के दायरे में रेत खनन की अनुमति नहीं होती। उन्होंने कहा कि गहरे गड्ढे बनने से पुल के पिलरों की नींव कमजोर होती है और इससे बड़े हादसे की आशंका बनी रहती है।

दिन में ट्रैक्टर, रात में डंपरों से रेत ढुलाई : स्थानीय लोगों के अनुसार रेत माफिया दिन के समय ट्रैक्टर-ट्रॉली से और रात में डंपरों के जरिए रेत का परिवहन कर रहे हैं। यह गतिविधि लंबे समय से चल रही है, लेकिन अब तक इसे रोकने के लिए कोई ठोस कदम नहीं उठाया गया है।

डोंगरवाड़ा क्षेत्र में भी नर्मदा से रेत की चोरी

बुधनी रोड स्थित खर्राघाट-डोंगरवाड़ा रोड के पास नर्मदा नदी से भी रेत का अवैध उत्खनन किया जा रहा है। यहां ट्रैक्टर-ट्रॉली में रेत भरकर बिना रोक-टोक परिवहन किया जा रहा है। डोंगरवाड़ा खदान से फिलहाल रेत कंपनी द्वारा उत्खनन नहीं किया जा रहा है। इसके बावजूद इलाके से रेत की ढुलाई जारी है। न तो रेत कंपनी की फ्लाइंग स्क्वॉड मौके पर दिख रही है और न ही खनिज विभाग के अधिकारी रेत चोरों पर कार्रवाई कर रहे हैं।

जिला स्तरीय टास्क फोर्स समिति की बैठक आयोजित

रायसेन (निप्र)। कलेक्टर श्री अरुण कुमार विश्वकर्मा की अध्यक्षता में जिला स्तरीय ट्रास्क फोर्स समिति की बैठक कलेक्ट्रेट सभाकक्ष में शुक्रवार को आयोजित की गई, जिसमें कलेक्टर श्री विश्वकर्मा द्वारा जिले में वन और राजस्व भूमि में खनिजों के अवैध उत्खनन, परिवहन और भंडारण की प्रभावी रोकथाम हेतु संबंधित अधिकारियों को विस्तृत दिशा निर्देश दिए गए। बैठक में एसपी श्री आशुतोष गुप्ता, अपर कलेक्टर श्री मनोज उपाध्याय, एएसपी श्री कमलेश कुमार, एसडीएम रायसेन श्री मनीष शर्मा और खनिज अधिकारी श्री महेंद्र पटेल उपस्थित रहे। बैठक में बताया गया है जिले में वित्तीय वर्ष 2025-26 में अवैध उत्खनन, परिवहन और भण्डारण की रोकथाम पर कार्यवाही करते हुए खनिज विभाग द्वारा कुल 200 प्रकरण पंजीबद्ध किये जाकर खनिज मद 0853 में राशि रूपये 2,22,57,684/- जमा कराई गई है। बैठक में कलेक्टर श्री विश्वकर्मा ने सभी एसडीएम, पुलिस तथा खनिज अधिकारी को अवैध उत्खनन एवं परिवहन पर प्रभावी कार्यवाही किये जाने हेतु निर्देशित करते हुए कहा कि अवैध उत्खनन एवं परिवहन की कार्यवाही के दौरान अधिकारी एवं कर्मचारी अपनी सुरक्षा का ध्यान रखते हुए कार्यवाही संपादित करें। साथ ही संवेदनशील क्षेत्रों में पुलिस, राजस्व एवं खनिज विभाग द्वारा संयुक्त रूप से प्रभावी रोकथाम हेतु रणनीति तैयार कर कार्यवाही करना सुनिश्चित करें। इसी प्रकार डीएफओ, एसडीएम तथा खनिज अधिकारी को जिले में उपलब्ध खनिज संपदा फर्शी पत्थर एवं आकारीय पत्थर, पत्थर गिट्टी हेतु ऐसे क्षेत्रों का चिन्हांकन करने के लिए कहा जिनमें अवैध उत्खनन, परिवहन की शिकायतें प्राप्त हो रही हैं। जिससे राजस्व आय भी प्राप्त होगी और अवैध उत्खनन / परिवहन की रोकथाम भी होगी। जिले में प्राप्त आवेदन पत्रों का समय सीमा में निराकरण कर अधिक से अधिक खदानें स्वीकृत करने की कार्यवाही की जाए।

अशोकनगर में सट्टा किंग का होटल तोड़ा

तीन मंजिला इमारत के अगले-पिछले हिस्से पर चली जेसीबी, 100 पुलिसकर्मियों ने ड्रोन कैमरे से रखी नजर

अशोकनगर (नप्र)। अशोकनगर जिला प्रशासन ने सट्टा किंग आजाद खान का होटल गिरा दिया है। नगर पालिका और पुलिस की टीम सोमवार दोपहर करीब 2 बजे होटल आजाद पैलेस पहुंची। करीब 3 बजे तीन मंजिला होटल के अगले और पिछले हिस्से पर जेसीबी चलाकर उसे गिरा दिया गया। निर्माण के दौरान नियमों का पालन न करने के कारण इस

कार्रवाई को अंजाम दिया गया। जेसीबी चलाने से पहले प्रशासनिक अधिकारी होटल के अंदर गए। तीनों मंजिलों पर बने कमरों को चेक किया।

आसपास की सभी दुकानों को बंद करवा दिया गया था। गलियों में बैरिकेड लगाकर आवाजाही रोक दी गई थी। पुराने बस स्टैंड के पास खाली परिसर में भी बैरिकेड लगाए गए थे, ताकि वहां भीड़ इकट्ठा न हो। कार्रवाई के दौरान राजस्व विभाग और नगर पालिका के अमले के साथ 100 से ज्यादा पुलिस जवान तैनात रहे। एसडीएम शुभ्रता त्रिपाठी, नगर पालिका सीएमओ विनोद उन्नीथन, एसडीओपी विवेक शर्मा ने मॉनिटर किया। दो पोकलेन, एक-एक हाइड्रा और जेसीबी की मदद से होटल को ध्वस्त किया गया। इस दौरान ड्रोन और वीडियो कैमरे से रिकॉर्डिंग की गई।

राज्यमंत्री की सादगी या विभागीय कंगाली...

डॉ. मोहन सरकार के दो साल पूरे होने का जश्न आलीशान होटलों के बुफे और ठंडी हवाओं के बीच मनाया गया। मंत्रियों ने सरकार की उपलब्धियों के साथ-साथ होटलों के बिलों का भी बखान किया। लेकिन,

मोहन का मंत्रालय
आशीष चौधरी

गरीबों के कल्याण का जिम्मा संभालने वाले एक स्वतंत्र प्रभार राज्य मंत्री ने गजब की मितव्ययिता दिखाई। साहब ने प्रेस कॉन्फ्रेंस के लिए किसी होटल की जगह अपने विभागाध्यक्ष कार्यालय को ही चुन लिया। अब पत्रकार साथी चटखारे ले रहे हैं कि क्या विभाग के पास बजट का टोटा है या मंत्री, सच में सादगी की मिसाल पेश कर रहे हैं ? विडंबना देखिए, जिस वर्ग ने भाजपा को प्रचंड बहुमत देकर सत्ता की मलाई खिलाई, उसी के विभाग के मंत्री जी को प्रेस वार्ता के लिए एक अच्छा हॉल तक मयस्सर नहीं हुआ। इसे सादगी कहें या विभाग की कंगाली?

प्रमुख सचिव पर अविश्वास का दंश

नए साल के जश्न की खुमारी में मंत्रालय के गलियारे खाली हो रहे हैं। बड़े साहबान अपने-अपने डेस्टिनेशन वेकेशन पर निकल चुके हैं, लेकिन एक प्रमुख सचिव महोदय ऐसे भी हैं जो अपनी कुर्सी से ऐसे चिपके हैं जैसे फेविकोल का जोड़ हो। कोफ्त इस बात की नहीं कि वे छुट्टी पर नहीं गए, दर्द यह है कि शासन ने उनके बगल वाले केबिन की जिम्मेदारी भी उन्हें सौंपना मुनासिब नहीं समझा। सीनियरिटी का भारी-भरकम बोझ उठाए इन साहब का रूतबा ऐसा है कि सरकार उन्हें एक्स्ट्रा चार्ज देने के नाम से भी कन्नी काट रही है। बेचारे साहब अपने खासमखास लोगों के सामने अपना दुखड़ा रोते पाए गए कि सरकार को शायद उन पर रत्ती भर भी भरोसा नहीं है। गलियारों में चर्चा है कि साहब को डर है कि कहीं उनके पिछले कारनामों के गुलदस्ते की खुशबू शासन तक न पहुँच गई हो। फिलहाल, साहब अपने विभाग में अकेले बैठकर अपनी वरिष्ठता का अचार डाल रहे हैं।

जन्मदिन पर होर्डिंग्स रेस

सादगी के उपदेश देना भाजपा संगठन का प्रिय शगल है, लेकिन मंत्री जी के समर्थकों को इससे क्या? राजधानी के चौक-चौराहों को देखकर लग रहा है जैसे कोई राष्ट्रीय उत्सव हो। जन्मदिन से 10 दिन पहले ही समर्थकों ने होर्डिंग्स के जरिए राजधानी की शक्ल बदल दी। पर गौर करने वाली बात इन पोस्टरों की डिजाइन है। कल तक जो मंत्री जी एक खास वर्ग के प्रेम में लट्टू रहते थे और जिनके इर्द-गिर्द खास समर्थकों का हुजूम रहता था, उनके ताजे पोस्टरों से वो हुजूम मिस्टर इंडिया की तरह काफी हद तक गायब है। चर्चा गर्म है कि पिछले दिनों हुए एक बड़े खुलासे के बाद मंत्री जी ने इस वर्ग से ऐसी दूरी बनाई है कि अब पोस्टरों में उनके फोटो तो क्या, परछाईं भी ढूंढना मुश्किल है। लगता है, चुनावी गणित अब नए समीकरणों की इबारत लिख रहा है।

बधाई देने भी नहीं आए सिपहसालार

कांग्रेस के एक दिग्गज नेता का राजनीतिक औरा इन दिनों वैसा ही है जैसा बिना सेल के चलने वाली घड़ी का। राजधानी आए, जन्मदिन का ढोल पीटा गया, लेकिन जश्न में भीड़ नदारद थी। उम्मीद थी कि बंगले पर बधाई देने वालों का मेला लगेगा, पर आलम यह रहा कि पार्टी के बड़े पदाधिकारी तो छोड़िए, भोपाल जिले के छोटे पदाधिकारियों भी साहब के दरवाजे की कुंडी खड़काना जरूरी नहीं समझा। खास समर्थकों ने इस बेइज्जती का कच्चा चिट्ठा साहब के सामने पेश कर दिया है। अब देखना दिलचस्प होगा कि ये दिग्गज अपनी बची-कुची साख का इस्तेमाल करके पदाधिकारियों को डराते हैं या फिर इस अकेलेपन को ही अपनी नई नियति मान लेते हैं।

साहब का 'वेज' पर अफसरों का 'नॉनवेज' खेल

कहते हैं कि राजनीति में मिश्रण खतरनाक होता है, लेकिन पिछले दिनों एक सरकारी जलसे में अफसरों ने ऐसा कॉकटेल परोसा कि मंत्री जी की शुचिता ही संकट में पड़ गई। भाजपा की सरकार में सरकारी आयोजनों की मर्यादा आमतौर पर घास-फूस (शुद्ध शाकाहार) तक ही सीमित रहती है, लेकिन यहाँ तो अफसरों ने अति-उत्साह में वेज के नकाब में नॉनवेज की ऐसी एंट्री कराई कि हड़कंप मच गया।

स्नैक्स की शक्ल में परोसी गई इन हड्डियों को शाकाहारी आगंतुक भी बड़े चाव से पनीर समझकर गटकते रहे। जब तक कइयों की अंतरात्मा जागती और उन्हें स्वाद में कुछ अजीब महसूस होता, तब तक आधा पंडाल अपनी वर्षों की तपस्या भंग कर चुका था। बस फिर क्या था, जैसे ही राज खुला, शाकाहारियों का गुस्सा सातवें आसमान पर पहुँच गया। अफसरों की इस करामात का सारा नजला बेचारे मंत्री जी पर ही गिर पड़ा। आनन-फानन में प्लेटें हटाई गईं औरडैमेज कंट्रोल का उपक्रम शुरू हुआ, लेकिन तब तक देर हो चुकी थी–गंगाजल छिड़कने से पहले ही कइयों के धर्म की थाली में कबाब का तड़का लग चुका था। अब गलियारों में चर्चा है कि अफसरों ने मंत्री जी को उलझाया है या जानबूझकर उनके राजनैतिक भविष्य में मिलावट कर दी है।

भोपाल के ईरानी डेरे की दिल्ली तक गूंज

सीबीआई अफसर और पत्रकार बनकर भी लोगों को लूटा, पुलिस पकड़ने पहुंची तो दौड़ा-दौड़ाकर पीटा

भोपाल (नप्र)। भोपाल में अमन कॉलोनी स्थित ईरानी डेरे में रविवार को पुलिस पर हमला हो गया। निशातपुरा के इस इलाके में रहने वाले ज्यादातर लोग देशभर में लूट, चोरी और ठगी की वारदातों को अंजाम देने के लिए बदनाम हैं।

इनमें से दो बदमाशों का इसी साल दिल्ली में एनकाउंटर हो चुका है। रविवार को पुलिस ईरानी डेरे के प्रमुख राजू ईरानी को पकड़ने अमन कॉलोनी पहुंची थी। उसने सागर जिले के एक सर्राफा कारोबारी को सीबीआई अधिकारी बनकर ठगा था।

पुलिस पर हमले के बाद गिरफ्तार किए गए काला ईरानी ने भोपाल पुलिस की पूछताछ में सीबीआई अधिकारी और पत्रकार बनकर ठगी की वारदातें करने की बात स्वीकार की है। छापेमारी के दौरान उसके घर से पुलिस को एक न्यूज चैनल की माइक आईडी भी मिली है।

दुबई तक बेचते हैं झपटमारी के मोबाइल फोन- 20 दिसंबर 2025 को हबीबगंज थाना इलाके में रानी कमलापति रेलवे स्टेशन के पास बाइक सवार दो लुटेरों ने एक वेटरनरी डॉक्टर से मोबाइल फोन लूटा था। फरियादी डॉ. मोहित सिंह बघेल मूल रूप से भिंड के निवासी हैं।भागते समय लुटेरों की बाइक

आगे जाकर एक वाहन से टकरा गई। दोनों लुटेरे घायल हो गए। राहगीरों ने उन्हें पकड़कर पुलिस के हवाले कर दिया।

पुलिस के अनुसार, गिरफ्तार दोनों लुटेरे- अली हसन (19) और मो. अली (19) ईरानी डेरे में ही रहते हैं। पूछताछ में उन्होंने बताया कि वे महंगे मोबाइल फोन लूटकर मुंबई भेजते हैं, जहां से उन्हें दुबई पहुंचा दिया जाता है।फिलहाल, पुलिस उनके नेटवर्क की जांच कर रही है। पुलिस ने ईरानी डेरे में ही रहने वाले झपटमार अली हसन और मो. अली को गिरफ्तार किया था।

दिल्ली पुलिस ने मुठभेड़ के बाद दो बदमाशों को पकड़ा था- इसी साल जुलाई महीने में दिल्ली पुलिस ने अमन कॉलोनी निवासी ईरानी गैंग के दो सदस्यों- मुर्तजा अली उर्फ दमार (38) और सिराज अली (40) को मुठभेड़ के बाद गिरफ्तार किया था। पुलिस को उनके दिल्ली में छिपे होने की सूचना मिली थी, जिसके आधार पर इंद्रप्रस्थ पार्क के पास रात में घेराबंदी की गई।

पुलिस को देखते ही आरोपियों ने फायरिंग शुरू कर दी। जवाबी कार्रवाई में दोनों आरोपी गोली लगने से घायल हो गए थे। जांच में सामने आया कि दोनों के खिलाफ देश के कई राज्यों में हत्या के प्रयास, लूट, चोरी और ठगी जैसे संगीन अपराध दर्ज हैं। वे कई मामलों में फरार चल रहे थे। दिल्ली पुलिस ने दोनों के खिलाफ नया केस दर्ज किया था।

सागर पुलिस पर मिर्च पाउडर फेंका, पथराव किया था

ईरानी डेरे के 4 कुख्यात बदमाश साल 2020 में 9-10 नवंबर को वे सागर जिले के खुरई पहुंचे थे। यहां एक ज्वेलर्स शॉप में खुद को सीबीआई अधिकारी बताकर रेड की बात कही और जरूरी दस्तावेज मांगे। दुकानदार को शक होने पर आरोपियों ने गन पॉइंट पर जेवरात से भरा बैग लूटा और फरार हो गए।

सीसीटीवी फुटेज से उनकी पहचान- रिजवान हुसैन, गुलाम उर्फ काकड़ी, तकबीर अली और खैबर अली के रूप में गई। जांच में सामने आया कि वे भोपाल के ईरानी डेरे के निवासी हैं और राजू की गैंग के सदस्य हैं। इसके बाद खुरई पुलिस उनकी तलाश में भोपाल पहुंची। छोला और निशातपुरा पुलिस के साथ अमन कॉलोनी में तड़के दबिश दी और दोनों संदिग्धों को हिरासत में ले लिया।

लेकिन बदमाशों को ले जाते समय ईरानी डेरे के लोगों ने हंगामा शुरू कर दिया। इनमें से कुछ लोगों ने पुलिस पर मिर्च पाउडर फेंक दिया, फिर पथराव होने लगा। हालात बिगड़ने पर पुलिस को हवाई फायरिंग करनी पड़ी। पत्थर लगने से 12 पुलिसकर्मी घायल हो गए थे। पुलिस को आरोपियों को गिरफ्तार किए बिना ही भागना पड़ा था।

व्हाइट कोट फीयर बिगाड़ता है ब्लड प्रेशर

भोपाल के 800 बच्चों पर हुई इंटरनेशनल स्टडी
दावा- सटीक रीडिंग चाहिए तो 3 बार करें जांच

भोपाल (नप्र)। व्हाइट कोट फीयर के कारण ब्लड प्रेशर की रीडिंग बिगड़ सकती है। यह एक अहम संकेत के रूप में सामने आया है, जिससे कई मरीज बेवजह बीपी की दवाइयों के सेवन और बीमारी के तनाव से बच सकते हैं। यह जानकारी एम्स भोपाल, पांडिचेरी मेडिकल कॉलेज, नोएडा मेडिकल कॉलेज और अमेरिका के कॉटनवुड स्थित यूनिवर्सिटी जीएमई कंसोर्टियम रेजिडेंसी प्रोग्राम के विशेषज्ञों की संयुक्त स्टडी में सामने आई है।

स्टडी में बताया गया है कि अगर किशोरावस्था में ब्लड प्रेशर ज्यादा रहता है, तो आगे चलकर युवावस्था में यह स्थायी हाई ब्लड प्रेशर का रूप ले सकता है। इससे दिल का आकार बढ़ना, किडनी की कार्यक्षमता कम होना और पेशाब में प्रोटीन आना जैसी गंभीर समस्याएं हो सकती हैं। इससे बचाव के लिए कई किशोर दवाइयों का सेवन शुरू कर देते हैं।

भारत में किशोरों में हाई ब्लड प्रेशर की औसत दर करीब 7.6 प्रतिशत बताई गई है। वहीं, इस स्टडी के दौरान मध्यप्रदेश में खासतौर पर भोपाल के सरकारी और निजी स्कूलों के 800 से अधिक स्वस्थ बच्चों की पहली जांच की गई। इसमें 4 प्रतिशत बच्चों का ब्लड प्रेशर तय मानक से अधिक पाया गया। कुछ दिनों के अंतराल पर जब इन्हीं बच्चों की दूसरी जांच की गई, तो यह आंकड़ा घटकर 2.7 प्रतिशत रह गया। तीसरी बार जांच करने पर यह और घटकर 1.9 प्रतिशत पर आ गया।

डॉक्टरों का कहना है कि सही ब्लड प्रेशर रीडिंग के लिए कुछ समय के अंतराल पर तीन बार जांच करना जरूरी है। इससे अनावश्यक दवाइयों के सेवन को रोका जा सकता है और बच्चों व उनके परिजनों को बीमारी के बेवजह तनाव से बचाया जा सकता है।

यह कारण बढ़ा देते हैं बीपी- विशेषज्ञों के मुताबिक बच्चों और किशोरों में ब्लड प्रेशर स्थिर नहीं रहता। स्कूल का माहौल, परीक्षा का तनाव, अजनबी डॉक्टर या जांच का डर, ये सभी कारण पहली बार में बीपी बढ़ा सकते हैं। इसे मेडिकल भाषा में व्हाइट कोट इफेक्ट कहा जाता है।

इसी वजह से इस स्टडी में हर बच्चे का ब्लड प्रेशर तीन अलग-अलग दिनों में, एक एक हफ्ते के अंतर से मापा गया। हर विजिट में भी तीन-तीन रीडिंग ली गईं। इससे यह साफ हो सका कि वास्तव में किन बच्चों में ब्लड प्रेशर लगातार ऊंचा रहता है और किसमें यह अस्थायी बदलाव होता है।

10 से 18 साल के बच्चों पर हुई स्टडी- भोपाल के स्कूलों में हुई इस वैज्ञानिक और गहन जांच में 10 से 18 साल के किशोरों को शामिल किया गया, जिसमें सामने आया कि हर 100 में से एक से दो बच्चे ऐसे हैं, जिसे बार-बार जांच करने पर हाई ब्लड प्रेशर की समस्या पाई गई।अध्ययन से यह भी साफ हुआ कि पहली बार जांच में दिखने वाला हाई ब्लड प्रेशर कई बार तनाव या घबराहट का नतीजा होता है, जो दोबारा जांच में सामान्य हो जाता है। यही वजह है कि डॉक्टर अब किशोरों में हाई बीपी की पहचान के लिए नई रणनीति की जरूरत बता रहे हैं।

800 स्कूली बच्चों पर एक साल की निगरानी- यह अध्ययन जून से दिसंबर के बीच भोपाल के शहरी इलाके के अलग अलग दिशाओं के सरकारी और निजी स्कूलों में किया गया। इसमें 10 से 18 साल के 824 छात्र-छात्राएं शामिल किए गए। सभी बच्चों की लंबाई, वजन और बीएमआई दर्ज किया गया।

स्टडी में सामने आए यह नतीजे

- पहली विजिट में 4 प्रतिशत बच्चों का ब्लड प्रेशर सामान्य से अधिक पाया गया
- दूसरी विजिट में यह घटकर 2.7 प्रतिशत रह गया
- तीसरी विजिट तक यह आंकड़ा करीब 2प्रतिशत पर आ गया

लड़के ज्यादा खतरे में

अध्ययन में यह भी सामने आया कि हाई ब्लड प्रेशर की समस्या लड़कों में ज्यादा देखी गई। लड़कों में यह दर करीब 2.6 प्रतिशत रही। जबकि, लड़कियों में यह केवल 0.2 प्रतिशत पाई गई। डॉक्टरों के अनुसार, इसके पीछे हार्मोनल बदलाव, शरीर में फैट का वितरण और किशोरावस्था में लड़कों पर ज्यादा मानसिक-शारीरिक दबाव जैसे कारण हो सकते हैं। इसके अलावा स्टडी इस बात पर जोर देती है कि सिर्फ एक बार की जांच के आधार पर बच्चों को बीमार घोषित करना गलत हो सकता है।

दिग्विजय सिंह के समर्थन में आए मंत्री कैलाश विजयवर्गीय

बोले- सरदार पटेल की तरह सच कहने की परंपरा को आगे बढ़ाया

भोपाल (नप्र)। कांग्रेस के वरिष्ठ नेता और राज्यसभा सांसद दिग्विजय सिंह द्वारा राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) की तारीफ करने जाने के बाद राजनीति में नई बहस छिड़ गई है। जहां कांग्रेस के भीतर इस बयान को लेकर सवाल उठ रहे हैं। अब भाजपा के वरिष्ठ नेता और नगरीय प्रशासन मंत्री कैलाश विजयवर्गीय खुलकर

अब दिग्विजय सिंह के समर्थन में सामने आए हैं। विजयवर्गीय ने सोमवार को एक्स पर दिग्विजय सिंह के बयान का समर्थन किया।

उन्होंने लिखा कि लोकतंत्र में वैचारिक मतभेद होना स्वाभाविक है, लेकिन सच कहने का साहस भी होना चाहिए जो हर किसी में नहीं होता। कांग्रेस नेता दिग्विजय सिंह ने आरएसएस की तारीफ कर अपने साहसी होने का परिचय दिया है।

हालांकि, इससे दिल्ली दरबार में उनके नंबर अवश्य कम हुए होंगे, पर दिग्विजय सिंह ने कांग्रेस के अंदर 50 के दशक के नेता सरदार पटेल और अन्य नेताओं की उस परंपरा पर चलने का काम किया है जो सच कहने की हिम्मत रखते थे। यही लोकतंत्र की असली खूबसूरती है।

दिग्गी ने मोदी की फोटो पोस्ट कर बताई थी संगठन की शक्ति- दरअसल, दिग्विजय सिंह ने शनिवार को एक ट्वीट किया था। जिसमें लिखा था कि क्योरा साइट पर मुझे यह चित्र मिला। बहुत ही प्रभावशाली है। किस प्रकार आरएसएस का जमीनी स्वयंसेवक व जनसंघ-भाजपा का कार्यकर्ता नेताओं की चरणों में फर्श पर बैठकर प्रदेश का मुख्यमंत्री और देश का प्रधानमंत्री बना। यह संगठन की शक्ति है। जय सिया राम।

कोहरे से थमी ट्रेनों की रफ्तार... मालवा एक्सप्रेस 7 घंटे लेट

एमपी के 22 शहरों में पारा 10 डिग्री से नीचे, राजगढ़ सबसे ठंडा

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश में घने कोहरे और कड़ाके की ठंड ने जनजीवन के साथ-साथ रेल यातायात को भी प्रभावित कर दिया है। कोहरे की वजह से दिल्ली से भोपाल, इंदौर और उज्जैन आने-जाने वाली कई ट्रेनें घंटों लेट चल रही हैं। सोमवार को मालवा एक्सप्रेस 7 घंटे से ज्यादा देरी से चल रही है। भोपाल में इसके पहुंचने का तय समय सुबह 7.25 बजे है, लेकिन यह दोपहर करीब 3 बजे तक पहुंच सकती है।

इधर, प्रदेश में रात के तापमान में भी तेज गिरावट दर्ज की गई है। मौसम विभाग के अनुसार रविवार-सोमवार की रात भोपाल में 5.6 डिग्री, इंदौर में 6.4 डिग्री, जबलपुर में 8 डिग्री, ग्वालियर में 9 डिग्री और उज्जैन में 9.5 डिग्री सेल्सियस तापमान रिकॉर्ड किया गया। बड़े शहरों में भोपाल सबसे ठंडा रहा।

प्रदेश में राजगढ़ सबसे ठंडा जिला रहा, जहां न्यूनतम तापमान 4 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच गया। वहीं छतरपुर के नौगांव और उमरिया में 5 डिग्री, पचमढ़ी में 5.2 डिग्री, मलाजखंड में 5.3 डिग्री और मंडला में 5.8 डिग्री तापमान दर्ज किया गया। कुल मिलाकर प्रदेश के 22 शहरों में पारा 10 डिग्री से नीचे रहा।

मशीनें विधायक-सांसद चुनेंगी तो कार्यकर्ता की बात कौन करेगा

जीतू पटवारी बोले- बैलेट पेपर से चुनाव चालू हो तभी लोकतंत्र बचेगा

भोपाल (नप्र)। राष्ट्रीय अनुसूचित जाति, जनजाति विकास परिषद द्वारा भोपाल में आयोजित सामाजिक न्याय सम्मेलन में प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष जीतू पटवारी ने चुनावी व्यवस्था, लोकतंत्र और संविधान को लेकर तीखा हमला बोला। उन्होंने कहा कि देश का लोकतंत्र तभी बचेगा, जब चुनाव बैलेट पेपर से कराए जाएंगे, क्योंकि मशीन आधारित चुनावों में जनता का भरोसा लगातार कमजोर हो रहा है। पटवारी ने सवाल उठाया कि यदि विधायक और सांसद मशीनों से चुने जाएंगे, तो फिर किसी भी पार्टी का निचला कार्यकर्ता, गरीब, दलित, आदिवासी और अल्पसंख्यक अपनी बात किससे कहेगा।

मशीन से चुनी सरकार जनता से नहीं जुड़ेगी

जीतू पटवारी ने कहा कि लोकतंत्र केवल चुनाव का नाम नहीं है, बल्कि जनता और जनप्रतिनिधि के बीच भरोसे का रिश्ता है। उन्होंने कहा- जिस दिन विधायक और सांसद मशीनों से चुने जाएंगे, उस दिन जनप्रतिनिधि आम आदमी से कट जाएंगे। मशीन किसी की पीड़ा नहीं समझती, न ही वह समाज के कमजोर वर्ग की आवाज बन सकती है।

दुनिया बैलेट से चुनाव करती है, भारत में मशीन क्यों?

पटवारी ने अंतरराष्ट्रीय उदाहरण देते हुए कहा कि- अमेरिका, यूरोप और गल्फ देशों में आज भी बैलेट पेपर से चुनाव होते हैं। दुनिया में कहीं भी इतनी बड़ी आबादी वाले देश में मशीन से चुनाव नहीं होता। केवल भारत में ऐसा किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि मशीन आधारित चुनावों में हेरफेर की आशंका हमेशा बनी रहती है, जिससे लोकतंत्र कमजोर होता है।